वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

तर्कशील पथ

TARKSHEEL

जनवरी 2022

अंदर पढ़े :

20/-

जो तर्कसंगत है वह सत्य है, जो सत्य है वह तर्कसंगत है ... जार्ज विलहैल हीगल

भावनाएं क्यों भड़कती है?

तुम झूठ फैलाओ....

और हम सच बताए तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम अंधविश्वास फैलाओ....

और हम अंधविश्वास मिटाए तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम पाखंड और अंधश्रद्धा फैलाओ....

और हम इनको मिटाए तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम ईश्वर के नाम पर धर्म का धंधा चलाओ और

हम मानवता को धर्म बताए तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम जातिवाद, असमानता, उच्च-नीच और छुआछूत करो और

हम इसका विरोध करे तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम धर्म के नाम पर नफरत, अशांति और हिंसा करो और

हम प्रेम, भाईचारा और शांति की बात करे तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम,बहुजनो महिलाओं,किसानों,मजदूरों और

अल्पसंख्यको पर शोषण और अत्याचार करो हम इनके खिलाफ लड़े

तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम राष्ट्रवाद और देशभक्ति के नाम पर डर, उन्माद, लिंचीग, हत्या, मार-काट करो और

हम इसके खिलाफ बोले तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम गुंडागर्दी, बलात्कार, लूट, और दंगे करो और हम इसके विरोध करे तो तुम्हारी

भावनाएं भड़कती है....?

तुम देश की धन-संपत्ति, जल-जंगल-जमीन, रेल-रोड़, बैंक-जहाज बेचो और हम

इसके खिलाफ आवाज उठाये तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तुम संविधान जलाओ, कानून तोड़ो, लोकतंत्र मिटाओ और

हम इनको बचाये तो तुम्हारी भावनाएं भड़कती है....?

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क पंजाब नैशनल बैंक में
तर्कशील सोसायटी पंजाब (रजि) के नाम से
खाता सं. 0044000100282234
IFSC: PUNB0004400
में जमा करा सकते है।

जिंदगी के संघर्ष में वही जीतते हैं, जो हालात को काबू करने की काबिलियत रखते हैं।
चार्ल्स डार्विन

मुख्य संपादक
बलबीर लौंगोवाल
balbirlongowal1966@gmail.com
98153 17028

संपादक
प्रा बलवंत सिंह
tarksheeleditor@gmail.com
94163 24802

विदेशी प्रतिनिद्धि
अवतार गिल, कनेडा
अछर सिंह खरलवीर, कवैंटरी (इंगलैंड)
(+44 748 635 1185)
मा. भजन सिंह कनेडा
बलदेव रहिपा, टोरांटो

पत्रिका शुल्क :-
द्विवार्षिक : 200/- रू.
विदेश : वार्षिक : 25 यू.एस.डॉलर

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पताः
मुख्य कार्यालय
तर्कशील भवन, संघेडा बाईपास
तर्कशील चौंक, बरनाला-148101
01679-241466, 98769 53561
tarkshiloffice@gmail.com
पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें:
www.tarksheel.org
Tarksheel Mobile App :
Readwhere.com

प्रा. बलवंत सिंह, प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक, मकान न. 1062, आदर्श नगर, पिपली, जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा) द्वारा अप्पू आर्ट प्रैस, शाहकोट से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।

इस अंक में

कंपोजिंग/सैटिंग : हरप्रीत रूबी

आनलाईन पत्रिका को पढ़ने के लिए:
www.tarksheel.org,
http://tarksheelblog.wordpress.com
Tarksheel on Mobile App:
Readwhere.com

संपादकीय

बहुराष्ट्रीय निगमों और कॉरपोरेट्स के लिए भारत की कृषि को पूरी तरह से लाभदायक बनाने के लिए और लोगों को लूट कर मुनाफा बढ़ाने के लिए,सरकार दुवारा बनाए गए तीन कृषि कानून किसानों के अद्धितीय आंदोलन के चलते सरकार दुवारा वापिस ले लिए गए। इन कृषि कानूनों को लागू करने की प्रक्रिया अलोकतांत्रिक तरीके से की गई थी जिसने तथाकथित भारतीय लोकतंत्र को लेकर विश्व स्तर पर बहुत से सवाल खड़े किए हैं। लगभग तीन दशकों से वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण की राह पर चल रही भारतीय अर्थव्यवस्था का घोड़ा भाजपा सरकार के आने के साथ ही सरपट दौड़ने लगा। इन नीतियों के गर्भ से तीन कृषि कानून, श्रम सुधार और बहुत कुछ आया। तीन कृषि कानूनों को निरस्त करने की जीत इन नीतियों को पूरी तरह से नहीं बदलेगी, लेकिन एक बात लोगों के दिमाग में आने लगी है कि जनता सबसे बड़ी ताकत है, हर जनविरोधी नीति का संघर्ष के साथ सामना किया जा सकता है। इस ऐतिहासिक आंदोलन की यह जीत कहीं ज्यादा बड़ी है। भविष्य में नीतिगत लड़ाई को आगे बढ़ाकर सार्वजनिक क्षेत्र को बचाना अनिवार्य है। नीतियों के बारे में लोगों की जागरूकता, एकता, संघर्ष में दृढ़ विश्वास कोई छोटी उपलब्धि नहीं है और इसे लोगों के बीच बनाए रखना संगठनों के नेताओं की जिम्मेदारी है। आंदोलन के दौरान विभिन्न राज्यों, विभिन्न धर्मों, विभिन्न तथाकथित जातियों की एकता ने भी भाजपा सरकार के धार्मिक ध्रुवीकरण के एजेंडे को भारी झटका दिया है और देश में उग्र सांप्रदायिक फासीवाद को रोक दिया है। कानून को वापस लेने की घोषणा के समय मोदी का बयान, ''हम लोगों को इन कानूनों के लाभों के बारे में समझाने में कामयाब नहीं हो सके हैं, कानून जन-समर्थक हैं, मुझे लगता है कि हमारी तपस्या में कुछ कमी रही है।'' यह ब्यान एक साजिश है। ताकि लोगों का भाग्य दर्शन में विश्वास बना रहे। मोदी किस तरह की 'तपस्या' कर रहे हैं - कैसे वह लोगों के मन में अवैज्ञानिक कचरा भर रहे हैं, कैसे विभिन्न समुदायों में नफरत का माहौल बना रहे हैं, कैसे वे लगातार पूंजीपतियों की सेवा कर रहे हैं आदि लोग जानते है। केवल वैज्ञानिक समझ के साथ ही हम इन्हें समझ सकते हैं इस लिए जागरूक बनें और इस पूंजीवादी सरकार की नीतियों के साथ संघर्ष करें। सरकार ने किसानों की अन्य मांगों को निपटाने का लिखित आश्वासन भी दिया है। नेताओं ने आंदोलन खत्म करने की बजाय आंदोलन को स्थगित करने का ऐलान किया है। जब तक वर्गीय समाज है तब तक आंदोलन कभी खत्म नहीं हो सकता। यह भी एक ऐतिहासिक दायित्व बन जाता है कि हम 'विजय' के 'उत्सव' में खो जाने की बजाय, जो कि आंशिक है, हमें अधिक से अधिक तीव्रता, दृढ़ संकल्प, प्रतिबद्धता के साथ जन-हितैषी चेतना को उतनी ही तीव्रता के साथ प्रज्वलित करना चाहिए जितनी लग्न के साथ लगभग 700 बलिदान देकर यह संघर्ष लड़ा गया है और जीता गया है।

''हमारे कारवां को मंजिलों का इन्तजार है ये आंधियो,
ये बिजलियों की पीठ पर स्वार है।''

भूतप्रेतों के नाम पर

योगेश

कुछ सत्य घटनाएं स्मृति में उभर रही हैं, जो अधिक पुरानी नहीं हुई हैं, पहली घटना जालन्धर में घटी, हरीश कुमारी नाम की एक युवती मानसिक रोग से ग्रस्त थी। भूतप्रेतों के नाम पर अपना धंधा चलाने वाले कुछ व्यक्तियों ने घोषणा कर दी कि युवती भूत की सताई हुई है। 25 वर्षीय बाबा रामनाथ नाम के एक ओझा ने उस भूत को समाप्त करने का आश्वासन दिया। ओझा के निर्देश पर उस के चेलों ने युवती के बालों को पकड़ लिया और आग में तपाए हुए चिमटों से उस के शरीर पर प्रहार करने लगे, युवती दर्द से चीखने चिल्लाने लगी मगर बाबा ने दर्शकों को विश्वास दिलाया कि वह चीख चिल्लाहट उस लड़की की नहीं, बल्कि भूत की है।

अंत में जब वह युवती बेहोश हो गई तो बाबा ने उसे एक लिहाफ ओढ़ा दिया और उस के परिजनों को तसल्ली देते हुए कहा कि सुबह तक भूत समाप्त हो जाएगा और लड़की हंसती हुई उठ खड़ी होगी, मगर सुबह तक युवती समाप्त हो चुकी थी। वह भूतप्रेतों के नाम पर अंधविश्वास की बलि चढ़ चुकी थी।

पाँच वर्षीय बालक की बलि

दूसरी घटना जिला गुरदासपुर की है। वहां परसराम नाम के एक व्यक्ति ने मृत पिता के भूत को प्रसन्न करने के लिए स्वयं अपने भतीजे की हत्या कर दी। परसराम के बयान के अनुसार उसे स्वपन में अपने पिता का भूत दिखाई दिया, जिसने नरबलि के रूप में उस के भतीजे की मांग की। परसराम ने अपने बड़े भाई प्रकाश से बात की। प्रकाश अपने पुत्र की बलि देने से हिचकिचाया, लेकिन भूत का भय उसे भी सताने लगा। जब परसराम द्वारा ऊंचनीच समझने पर वह सहमत हो गया, तब पाँच वर्षीय बालक पृथ्वीराज को यज्ञशाला के सामने लाया गया। उस के पिता ने बलिवेदी पर लिटा कर उस की गरदन पकड़ी, बच्चे की दो फूफियों ने उस की दोनों टांगे पकड़ीं, इस नृशंसतापूर्ण वातावरण में बच्चा चीखता रहा और उस के चाचा परसराम ने गंडासे के एक ही वार से बच्चे की गर्दन अलग कर दी।

ये दोनों ही घटनाएं अनेक व्यक्तियों की उपस्थिति में घटी और किसी भी व्यक्ति ने इन नृशंस हत्याओं को रोकने की कोशिश नहीं की। सभी पर भूत का भय जो सवार था।

भूतप्रेतों की आड़ में किस प्रकार के अनैतिक आचरण होते हैं, इस का उदाहरण देश की राजधानी में घटी एक घटना से मिलता है। मालवीय नगर में एक 65-70 वर्षीया ओझा भूतप्रेतों को भगाने के बहाने युवा महिलाओं के साथ अकसर बलात्कार किया करता था। उस की हवस की शिकार महिलाएं अपनी बदनामी से बचने के लिए किसी को कुछ नहीं बताती थीं। जब एक सैनिक की अल्प व्यस्क लड़की को उस ओझा ने इसी प्रकार अपना शिकार बनाने का षड़्यंत्र रचा तो उस ने अपनी मां को सब कुछ बता दिया। तब कहीं जाकर रहस्य खुला और ओझा पुलिस की हिरासत में आ गया।

ये घटनाएं उन अनेक घटनाओं में से केवल कुछ उदाहरणों के रूप में हैं जो हमारे चारो ओर अकसर घटती रहती हैं। उन में से कुछ ही घटनाएं पत्रपत्रिकाओं में छप पाती है और अधिकांश घटनाएं जनता के लिए अनजानी ही रह जाती हैं। जिन घटनाओं के बारे में समाचार प्रकाशित होते हैं, उन पर देश के बुद्धिजीवी कुछ समय तक विचारविर्मश करते हैं और उसके बाद बिना किसी ठोस निर्णय के उन घटनाओं को भुला दिया जाता हैं। इस से ऐसा लगता है कि जैसे इस गंभीर समस्या के समाधान के लिए कोई ठोस न प्रयत्न करने की हम ने कसम खा ली हो।

भूतप्रेतों के नाम पर जितना हंगामा हमारे देश में मचाया जाता है, उतना संभवत: संसार के किसी भी दूसरे देश में नहीं। अनेक व्यक्तियों की रोजीरोटी केवल इन भूतप्रेतों के नाम से ही चलती है, इसलिए हर कीमत पर उन के अस्तित्व को बनाए रखने तथा उन के प्रति जनता के दिलों में भय उत्पन्न करते रहने की हर संभव कोशिश की जाती है।

ऊपर जिन घटनाओं की चर्चा की गई है, उन के मूल में हत्या करने की भावना नहीं थी। हरीशकुमारी के परिजन उस की मृत्यु नहीं चाहते थे, परसराम को भी अपने भतीजे के प्रति कोई पराएपन की भावना नहीं थी, मालवीय नगर के ओझा के पास जाने वाली महिलाओं भी दुश्चरित्र नहीं थीं पर सब के मूल में एक ही भय काम कर रहा था। और वह था,

भूतप्रेत का भय।

भूतप्रेतों के प्रति भय की इस भावना का मुख्य दायित्व इन से संबंधित कहानियों पर है। बच्चे प्रारम्भ से ही अपनी दादी नानी के मुंह से इस प्रकार की भय पैदा करने वाली कहानियां सुनते हैं। अमुक पेड़ पर किसी भूत या भूतनी का निवास, कहीं पर विशाल दैत्य का आवास, साधारण आदमी का कंपन, पाठ से उस का वर्जन आदि बातें इन कहानियों में बच्चे प्रारंभ से ही सुनते हैं।

परिणाम यह होता है कि बच्चे किसी अंधेरे स्थान पर जाने से, मकान में अकेले रहने से या शमशान और कब्रिस्तान के पास से गुजरने में भी भय खाने लगते हैं।

हम अकसर कहते हैं कि अमुक बच्चा बड़ा डरपोक है। मगर उसे डरपोक बनाने की वास्तविक जिम्मेदारी हमारी अपनी ही है। हमारे यहां छोटे बच्चों के लिए जो कहानियां लिखी जाती हैं, उन में भी अधिकांशत: इसी प्रकार के भूतप्रेत या दैत्य आदि की बातें होती हैं। फलस्वरूप बच्चे अपने अपरिपक्व मस्तिष्क में भूतप्रेत की एक कल्पित तस्वीर बना लेते हैं। मसलन उस के पैर नहीं होते या उस के पैर उलटे होते हैं। उस की आकृति भयंकर होती है, वह हवा में गायब हो सकता है। किसी भी व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर सकता है और उसे किसी भी प्रकार का कष्ट दे सकता है।

ऐसी अवस्था में बच्चे के मन में एक अनजाना भय सवार होने लगता है।

बचपन का यह भय जीवन में कितना अधिक स्थायी बन जाता है, इस का एक उदाहरण अमरीकी लेखिका फ्लोरा एस. विलियम्स ने दिया है। एक प्रोफैसर अपने जीवनपर्यंत अल्मारी का दरवाजा खोलने से डरते रहे, जिस के पीछे बचपन की एक घटना थी, उस समय उन की आयु छ:–सात वर्ष की रही होगी। उन के बड़े भाई ने आलू को चाकू से काट कर और उस पर रंग लगा कर भयानक आकृति बनाई। उस आकृति की आंखों में फासफोरस लगा कर उसे अल्मारी में बंद कर दिया।

बाद में उस ने अपने छोटे भाई से कहा कि अल्मारी में एक भूत बैठा है। उस समय तक उस बच्चे के लिए भूत अज्ञात तत्त्व था, अत: उस ने बाल सुलभ उत्सुकतावश अलमारी का दरवाजा खोला और उस वित्रित जंतु को देखकर चीख उठा। बचपन का यह डर उस के दिल में ऐसा बैठा कि मेधावी प्रोफैसर बनने के बाद भी वह उस के दिल से नहीं निकल सका।

डर का कारण

एक और सज्जन हैं जो प्रौढ़ावस्था में भी छिपकली से बेहद डरते हैं। कारण यह है कि अपने बचपन में उन्होंने एक नवाब साहब के यहां एक दासी को छिपकलियों के माध्यम से दी जाने वाली अमानुषिक सजा को देखा था। नवाब साहब ने एक बोरे में छिपकलियां भरी और उसी में दासी को डाल कर बोरी को बंद कर दिया। दासी चीखचीख कर तड़पते हुए मर गई। मगर नवाब साहब पर उस का कोई असर नहीं हुआ। इस दृश्य ने उन सज्जन पर छिपकली के प्रति भयानक भय की भावना उत्पन्न कर दी।

हम अपने दैनिक जीवन में भी देखते हैं कि अच्छे खासे पढ़े–लिखे व्यक्ति भी भूतप्रेत के नाम पर कुछ भयभीत होने लगते हैं, श्मशान याा कब्रिस्तान की ओर अकेले जाते हुए कतराते हैं। वे सामान्यत: भूतप्रेतों में विश्वास नहीं करते मगर बचपन में सुनी हुई भूतप्रेतों की कहानियां उन की भावनाओं को इतना अधिक आक्रांत किए हुए होती हैं कि वे उन के अस्तित्व को अस्वीकार नहीं कर पाते।

बचपन बीत जाने के बाद भी भूतप्रेतों की कहानियों से छुटकारा नहीं मिल पाता। अनेक पत्रपत्रिकाएं बड़ी संख्या में भूतपेतों की काल्पनिक कहानियों को सत्यकथा के नाम से छापती हैं, जिन्हें पढ़ कर जनसाधारण के मस्तिष्क में भी बचपन का भय और अधिक मजबूत होने लगता है और अब उन की बुद्धि भी उस पर विश्वास करने लगती हैं, स्पष्ट ही इस प्रकार की पत्रपत्रिकाएं अपनी ग्राहक संख्या बढ़ाने के संकुचित उद्देश्य की पूर्ति के लिए देश का बहुत बड़ा अहित करती हैं।

अंगरेजी में इस प्रकार की पुस्तकें प्रति वर्ष काफी बड़ी संख्या में छपती हैं, मगर उन्हें कभी भी साहित्यिक कृति नहीं माना जाता। वे केवल उत्तेजनाप्रधान पुस्तकें मानी जाती हैं। हिन्दी में भूतप्रेतों से संबंधित साहित्य इन्हीं पुस्तकों का या तो अनुवाद होता है, उन पर आधारित होता है। कुछ तथाकथित लेखक उन अंग्रेज़ी पुस्तकों से ही विषय सामग्री लेकर अपनी भाषा में रचना तैयार करते हैं और उसे मौलिक कृति का नाम दे देते हैं।

लोक कथा के नाम पर भी भूतप्रेतों से संबंधित अनेक कहानियां लिखी जाती हैं। बात कुछ भी हो, भूतप्रेतों की ये कहानियां काफी लोग पढ़ते हैं। वे अपने भय की

भावनाओं को दृढ़ करते हैं और उस के बाद संक्रामक रोग के समान अपनी उन भावनाओं को चारों और फैलाते रहते हैं।

मनोविज्ञानवेत्ताओं का विचार है कि भूतप्रेतों में रुचि मुख्यत: वृद्धों और शिशुओं में ही अधिक होती है। कारण स्पष्ट है। वृद्ध उन में इसलिए रूचि लेते हैं कि वे अब सक्षम न रहने के कारण किसी भी प्रकार के उत्तेजनाप्रधान कार्य करने में असमर्थ होते हैं। अतएव भूतप्रेतों की चर्चा कर के या उन में रुचि लेकर ही वे अपनी रोमांचक और कल्पनाशील भावनाओं को संतुष्ट करने का प्रयास करते हैं। बच्चों की रूचि का कारण उन की स्वभाविक जिज्ञासा की भावना होती है। कभी-कभी कुछ युवा व्यक्ति भी भूतप्रेतों में अत्यधिक रुचि लेते हुए पाए जाते हैं। उस का कारण मूलत: वह प्रभाव ही है जो बाल्यकाल से उन के मस्तिष्क पर पड़ जाता है। युवावस्था में पढ़ा जाने वाला भूत साहित्य उसे और दृढ़ बनाता है।

स्वस्थ वातावरण बनाएं

भूतप्रेतों के काल्पनिक आक्रमण को दूर करने के लिए हमारे यहां ओझा, स्याने और तथाकथित बाबाओं का एक बड़ा जमघट है, जो भूत निकालने की आड़ में अनेक प्रकार के निजी स्वार्थों की पूर्ति करते रहते हैं। कभी-कभी मरीज इन स्थानों पर जा कर ठीक हो जाते हैं और लोग समझते हैं कि बाबा नाम के प्राणी ने उस भूत को समाप्त कर दिया जबकि वास्तविकता इस के विपरीत होती है।

इस उपचार के पीछे दो ही परिस्थितियाँ हो सकती हैं। प्रथम, रोग साधारण हो और समय के साथ ही या अन्य औषधियों के प्रयोग से वह अपने आप ठीक हो जाए। दूसरे, बाबा नाम के उस प्राणी में रोगी को बहुत अधिक आस्था हो और उस के पास आ कर वह मनोवैज्ञानिक रूप से अपने को स्वस्थ महसूस करे। यह भी संभव है कि उस स्थान पर रोगी को इतनी भयानक यातनाएं दी जाएं कि उन का भय उस के भूत संबंधी पिछले भय को ढक दे, मनोवैज्ञानिक प्रभाव के अतिरिक्त उस उपचार का कोई व्यावहारिक महत्त्व नहीं। मगर यह तो एक बुराई को दूर करने के लिए दूसरी बुराई को अपनाना हुआ, जो स्वतंत्र रूप में कोई हल नहीं है।

फिर ऐसी परिस्थितियों में क्या किया जाए?

सर्वप्रथम आवश्यकता तो इस बात की है कि भूतप्रेतों की कहानियों के विरुद्ध समाज में वातावरण बनाया जाए, प्रत्येक शिक्षित और अशिक्षित को इस प्रकार की कहानियों से होने वाले दुष्प्रभावों के प्रति सचेत किया जाए ताकि परिवारों में भूतप्रेतों की कहानियां सुनना व सुनाना बंद हो सके।

दूसरे, बच्चों के मस्तिष्क में यह बात अच्छी तरह बैठा दी जाए कि उन्हें भूतप्रेत नाम के किसी तत्त्व से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। इस प्रकार के तत्त्व का वास्तव में कोई आस्तित्व नहीं है। जो भी कुछ है, वह केवल हमारे मन का वहम है, जो भूत बन कर हमारे सामने आ जाता है।

क्या कारण है कि भूतप्रेत केवल उन्हीं को सताते हैं जो उन के आस्तित्व में विश्वास करते हैं। भूतप्रेतों पर अविश्वास करने वाले व्यक्ति पर किसी तथाकथित भूतप्रेत के प्रभाव की बात पढ़ने-सुनने को भी नहीं मिलती।

यह भी अक्सर कहा जाता है कि मजबूत व्यक्ति पर प्रेतात्माओं का असर नहीं होता। वास्तव में यहां मजबूत व्यक्ति से मतलब, भूतप्रेत के अस्तित्व में विश्वास न रखने वाले व्यक्तियों से ही है। जब मनुष्य के मन में किसी प्रकार का वहम ही नहीं होगा, तो उस में भूतप्रेत बन कर मन को डराने वाली बात ही नहीं उठेगी।

संपूर्ण सृष्टि चक्र प्रकृति के निर्धारित और विज्ञान सम्मत नियमों के अंतर्गत गतिशील है। उस में भूतप्रेत जैसी घोर अवैज्ञानिक कल्पनाओं के लिए कहीं कोई गुंजाइश नहीं। भारतीय दर्शन के अनुसार भी मानव शरीर तत्त्वों का मेल है। शरीर के नष्ट होने के बाद ये तत्त्व समाप्त हो जाते हैं। उस में भूतप्रेत का कोई तत्त्व न होता है और न शेष रहता है।

वास्तव में, मुख्य बात आत्मविश्वास की है। यदि हम अपने आप में और बच्चों में आत्मविश्वास की भावना बढ़ा सकें तो भूत का भय तो अपने आप ही छूमंतर हो जाएगा।

बच्चों को अध्ययन के लिए पत्रिकाओं या पुस्तकें देते समय भी बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। भूतप्रेतों सें संबंधित पत्रिकाएं यां पुस्तकें उन्हें नहीं दी जानी चाहिए। केवल वही पत्रिकाएं और पुस्तकें उन के लिए उपयोगी हो सकती हैं जो उन्हें निर्भीक और साहसी बनाएं।

भूतप्रेतों के नाम पर ठगी करने वाले व्यक्तियों पर कठोर कानूनी प्रतिबंध भी लगाया जाना आवश्यक है, ताकि वे समाज के वातावरण को दूषित और गंदा न कर सकें। यदि हम समाज में भूतप्रेत विरोधी वातावरण बनाने में सफल हो गए तो ऐसे व्यक्तियों को स्वयं अपने पाखंड की दुकान उठा कर किसी अन्य श्रमसाध्य धंधे की तलाश करनी होगी।

(स्रोत : पुस्तक 'तंत्र मंत्र यंत्र')

तुम्हारे भगवान की क्षय

राहुल सांकृत्यायन

बच्चा माँ के पेट से ईश्वर का ख्याल लेकर नहीं पैदा होता। भूत, प्रेत तथा दूसरे संस्कारों की तरह ईश्वर का ख्याल भी बच्चे को माँ-बाप तथा आसपास के सामाजिक वातावरण से मिलता है। दुनिया के धर्मों में बौद्ध धर्म के अनुयायी अब भी सबसे ज्यादा है, लेकिन उनके दिल में सृष्टिकर्ता का ख्याल भी नहीं उठता। रूस की नब्बे फीसदी जनता भी ईश्वर के फंदे से दूर हट चुकी है और अब कुछ बूढ़ों को छोड़कर यह ख्याल किसी को नहीं सताता। यह निश्चय है कि आज के बूढ़ों के मर जाने पर ईश्वर का नामलेवा वहाँ कोई नहीं रह जाएगा। हिन्दुस्तान में प्रार्थना-प्रदर्शनों और हरि-कीर्तनों को देखकर कुछ लोग समझते हैं ईश्वर का ख्याल फिर से जोर पकड़ रहा है। उन्हें मालूम नहीं कि जिन लोगों में ईश्वर विश्वास है भी, उनमें भी अब उसकी व्यापकता बहुत कम हो गई है।

जिस समस्या, जिस प्रश्न, जिस प्राकृतिक रहस्य के जानने में आदमी अपने को असमर्थ समझता था, उसी के लिए वह ईश्वर का ख्याल कर लेता था। दर-असल ईश्वर का ख्याल है भी तो अन्धकार की उपज। प्रारम्भिक मनुष्य जब घर बनाकर नहीं रहता था, अपनी रक्षा के लिए जब उसके पास कुछ अनगढ़ पत्थरों के अतिरिक्त कुछ न था और साथ ही उस वक्त सारी भूमि जंगल से भरी थी जिसमें सिंह, बाघ, हाथी, भेड़िया आदि बड़े-बड़े हिंसक पशू घूमा करते थे। दिन में भी वृक्षों के ऊपर चढ़ कर, गुफाओं के भीतर छिपकर, बहुत सजग रहकर वह किसी तरह अपनी जान को बचाता था। अंधेरे में अपनी ताक में बैठे जन्तुओं का डर तो उसे बदहवास किये रहता था। इस प्रकार, वह अन्धकार मनुष्य के लिए आज तक भय का कारण बना हुआ है। हाँ, जब आगे चलकर मनुष्य ने भाषा का विकास किया, विचारों को प्रकट करने के लिए उसके पास कुछ शब्दकोश बना और जब हर पीढ़ी अपने अनुभवों की कटु स्मृतियों को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने लगी तो वास्तविक की अपेक्षा कल्पना-जात भय की संख्या बहुत बढ़ गई। जीवन भर अपने बलिष्ठ शासक और नेता से मनुष्य थर-थर काँपता था। वह अपने आश्रितों के साथ बात की अपेक्षा लात से ही काम लेता था। इस साधारण शिक्षा-दीक्षा में कितने काने, कितने लँगड़े हो जाते और कितने जान से हाथ धो बैठते थे। ऐसे निर्दय स्वामी और मुखिया का भय उसके मरने के बाद भी लोगों के दिल से नहीं हटता था। मरने के बाद उसे वे अपनी बस्तियों में किसी वृक्ष पर या किसी चबूतरे पर अधिष्ठित मानने लगते थे। अंधेरा होने पर किसी वक्त उसके प्रकट होने का डर था। अज्ञात भय ने इस प्रकार देवता का रूप धारण किया। और ये ही विचार आगे चलकर महान् देवता या ईश्वर के रूप में परिणत हुए।

प्रारम्भिक मनुष्य का मानसिक विकास अभी निम्न तल पर था। उसकी शंकाएँ हल्की और समाधान सरल थे। वर्षा क्यों होती है? पर्जन्य देवता के नेतृत्व में मेघ-समूह किसी जलाशय या पहाड़ में चरने जाते हैं, वह वहाँ से पानी लेकर पर्जन्य के आज्ञानुसार जगह-जगह बरसाते हैं। इन्द्र पर्जन्य का स्वामी है। वह कभी-कभी वज्र को चला कर अपना रोष प्रकट करता है। यही अशनि या बिजली है। पहाड़ों की आकृति को मेघ से मिलते-जुलते देखकर उस समय लोग समझते थे ये पहाड़ ही हैं जो आकाश में मेघ के रूप में उड़ रहे हैं। उनके विश्वास में पर्वतों के पर भी होते थे जिन्हें इन्द्र ने नाराज होकर किसी समय अपने वज्र से काट दिया। प्रात:काल पूर्व दिशा में पौ फटने के साथ लाली क्यों छा जाती है? यह उषा, स्वर्ग की देवी का प्रताप है। उस वक्त सूर्य अपने प्रखर प्रकाश के कारण प्रचण्ड देवता था और वह सात घोड़ों के रथ पर त्रिभुवन की यात्रा के लिए निकलता था। आग के पास बड़े-बड़े हिंसक पशु नहीं आ सकते। प्रकांड वृक्षों और महान् जंगलों को यह धाँय-धाँय करके जला देती है। इसलिए अग्नि महान् (ब्रह्म) था, उसी को वे प्रत्यक्ष महान् कहते थे। नदी, समुद्र सभी उस मनुष्य के लिए देवता थे, क्योंकि उनमें वे अमानुषिक (दिव्य) शक्ति पाते थे, नाश करने की भीषण योग्यता देखते थे। उनमें ऐसे-ऐसे अद्भुत रहस्य उन्हें दिखलाई पड़ते थे जिनकी गुत्थी को वह देवता की

कल्पना से ही सुलझा सकते थे। मनुष्य ने प्राकृतिक शक्तियों में बहुदेववाद को अपने ज्ञान की सीमा के बहुत संकुचित होने के कारण स्वीकार किया था। अब हम जानते हैं कि बादल कैसे बनते हैं, कैसे बरसते हैं, कहाँ से किधर की यात्रा करते हैं। कौन-कौन से देश उनकी यात्रा-मार्ग में पड़ते हैं और कौन से दूर। बिजली बादलों में क्यों कर पैदा होती है? कड़क क्या हैं? सूर्य अब हमारे लिए घोड़ों के रथ का सवार नहीं रहा और न उसका वह गोल मुँह, दो आँखों और काली मूछों वाला चेहरा ही रहा। उसकी यात्रा भी अब वह पहले वाली यात्रा नहीं रही, उषा देवी अब सूर्य की निम्नतर लाल किरण के अतिरिक्त कुछ नहीं है। आरम्भिक मनुष्य के लिए सूर्य आकाश का सबसे बड़ा विशाल और तेजस्वी देवता था। अब हम जानते हैं कि आकाश में चमकते हुए ये छोटे-छोटे बिन्दुों उतने छोटे नहीं है जितने कि वे हमें दिखलाई पड़ते हैं। उनमें से अधिकांश हमारे सूर्य से भी लाखों गुने बड़े और तेजस्वी हैं। आकाश को अनन्त कह कर पूर्वजों ने उसके विस्तार का एक अन्दाजा लगा लिया था, लेकिन वह अत्यन्त वास्तविकता की भित्ति पर न होकर अधिकतर अज्ञान के आधार पर आश्रित था। प्रकाश की गति प्रति सेकेण्ड एक लाख अस्सी हजार मील है। आज तक जो तारा हमसे सबसे नजदीक मालूम हुआ है, वह इतनी दूर है कि उसकी किरण को हम तक पहुँचने में ढाई बरस लगते हैं। ध्रव तारा हमसे बहुत दूर नहीं है, तो भी उसके जिस रूप को इस वक्त देख रहे हैं, वह आज से पचास बरस पहले का है। दस-दस बीस बीस हजार बरस में अपनी किरणों को हम तक पहुँचाने वाले तारों की भारी संख्या से हमें आश्चर्य करने की ज़रूरत नहीं। नक्षत्र-मंडल में ऐसे भी तारे हैं जिनकी दूरी को किरणों की यात्रा के वर्षों की संख्या में बतलाना मुश्किल है। तारों, खगोल और प्राकृतिक जगत-सम्बन्ध की अपनी इस अज्ञानता को मनुष्य देवता और ईश्वर की आड़ में छिपाता था।

भूकम्प क्यों होता है? चिपटी धरती के महान् भार को शेषनाग ने अपने कन्धे पर उठा रखा है। थक कर वे जब उसे एक कन्धे से हटा कर दूसरे पर रखते हैं, तब भूकम्प आता है। आज कौन इस व्याख्या को मान सकता है? कौन चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण को राहु दैत्य का अत्याचार बतला सकता है? लेकिन किसी समय हमारे पूर्वजों के लिए ये बातें ध्रुव सत्य थीं। विज्ञान ने हमारे अज्ञान की सीमा को कितनी ही दिशाओं में बहुत संकुचित किया है, और जितनी ही दूर तक हमारे ज्ञान की सीमा बढ़ती गई, वहाँ से ईश्वर और देवता वाला उत्तर हटता गया है। अब भी अज्ञान का क्षेत्र बहुत लम्बा-चौड़ा है, लेकिन आज के मनीषी उस साफ अज्ञान के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, न कि ईश्वर और देवता के पर्दे में उसे छिपा कर।

धर्मों, भाषाओं और कथानकों के तुलनात्मक अध्ययन से मालूम होता है कि सृष्टिकर्ता एक ईश्वर का ख्याल मनुष्य में बहुत पीछे से आया है। दुनिया की सबसे अधिक समुन्नत जातियां-यूनानी, रोमन, चीनी, मिस्री आदि तो अपनी समृद्धि के मध्यान्हकाल तक इसे अपनाने के लिए तैयार नहीं हुई, और उनमें से यदि किसी ने इस ख्याल को माना भी तो सामीय धर्मवालों की तरह वैयक्तिक ईश्वर के रूप में नहीं, बल्कि विश्व-रूप ईश्वर के आकार में।

अज्ञान का दूसरा नाम ही ईश्वर है। हम अपने अज्ञान को साफ स्वीकार करने में शर्माते हैं, अत: उसके लिए संभ्रान्त नाम 'ईश्वर' ढूँढ़ निकाला गया है। ईश्वर-विश्वास का दूसरा-कारण मनुष्य की असमर्थता और बेबसी है।

आये दिन हर तरह की विपत्तियों, प्राकृतिक दुर्घटनाओं शारीरिक और मानसिक बीमारियों की असह्य वेदना सहते-सहते जब मनुष्य बचने का कोई रास्ता नहीं देखता, तब यह कहकर संतोष करना चाहता है कि ईश्वर की यही मर्जी है, वह जो कुछ करता है, अच्छा करता है, वह हमारी परीक्षा ले रहा है, भविष्य के सुख को और भी मधुर बनाने के लिए उसने यह प्रबन्ध किया है। अज्ञान और असमर्थता के अतिरिक्त यदि कोई और भी आधार ईश्वर-विश्वास के लिए है, तो वह है धनिकों और धुर्तों की अपनी स्वार्थ-रक्षा का प्रयास। समाज में होते हजारों अत्याचारों और अन्यायों को वैध साबित करने के लिए उन्होंने ईश्वर का बहाना ढूँढ निकाला है। धर्म की धोखाधड़ी को चलाने और उसे न्याय साबित करने के लिए ईश्वर का ख्याल बहुत सहायक है। इस सम्बन्ध में धर्म के प्रकरण में हम कुछ कह आये हैं, इसलिए फिर से उसे यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

ईश्वर का विश्वास एक छोटे बच्चे के भोले-भाले विश्वास से बढ़कर कुछ नहीं है। अन्तर इतना ही है कि छोटे बच्चे का शब्दकोष, दृष्टांत और तर्कशैली सीमित होती है और बड़ों की कुछ विकसित। बस, इसी विशेषता का फर्क हम दोनों में पाते हैं। एक बार, तीन छोटे-छोटे बच्चों ने मुझसे ईश्वर के सम्बन्ध में बातचीत की। उनकी उमर सात और दस

बरस के बीच की थी। पूछा कि ईश्वर कहाँ रहता है, उत्तर मिला– 'आकाश में' धरती में कहने से प्रत्यक्ष दिखलाने की जरूरत पड़ती, क्योंकि धरती प्रत्यक्ष की सीमा के भीतर है। आकाश अज्ञान की सीमा के अन्तर्गत है, इसलिए वहाँ उसका अस्तित्व अधिक सुरक्षित है। ईश्वर के रंग-रूप के बारे में लड़कों का एक मत न था। कोई उसे अपनी शकल का बतलाते थे और कोई विचित्र शक्ल का। ''ईश्वर क्या करता है ?'' –यह सबसे मुख्य प्रश्न था। इसे लड़के भी अनुभव करते थे, क्योंकि जिस वस्तु का आकार प्रत्यक्ष नहीं होता, उसकी सत्ता उसकी क्रिया से सिद्ध हो सकती है। लड़कों ने कहा– ''वह हमें भोजन देता है।'' और तुम्हारे बाबू जी?– ''बाबू जी को ईश्वर देता है।''

''जिस दिन बाबू जी कचहरी में वकालत करने नहीं जाते, उस दिन क्यों नहीं उनके जेब में रुपये आ जाते?'' लड़कों को समाज के दुरूह संगठन का उतना पता नहीं होता और जुए के खेल की तरह किस तरह वास्तविक न्याय न करके सौ को हराकर दो को जिताया जाता है, इसका भी उन्हें पता नहीं। इसलिए उन्होंने उस तरह के प्रश्नोत्तर नहीं उठाए। हाँ, उन्हें यह मालूम हो गया कि जहाँ तक खाने-कपड़े, मकान, खेल-तमाशे में खर्च देने का सवाल है, उसका हल माता-पिता और अभिभावकों द्वारा ही होता है। वहाँ ईश्वर की सहायता संदिग्ध सी जान पड़ती है। लेकिन, जब उससे पूछा गया–''तुम्हें सिरदर्द कौन देता है– माँ-बाप या सगे-सम्बन्धी?'' –वे तो विह्वल हो जाते हैं, अम्मा और बाबूजी क्यों ऐसा चाहेंगे?'' वहाँ ईश्वर का हाथ होना उन्हें आसानी से स्वीकार कराया जा सका।

''और पेटदर्द?''– ईश्वर देता है।

''यक्ष्मा से घुला-घुला कर तुम्हारे पड़ोसी को किसने मारा?'' –''ईश्वर।''

''सात दिन के बच्चे की माँ को मार कर कौन उसे अनाथ करता है?'' –''ईश्वर।''

''माँ के एकलौते बच्चे को मार कर कौन उसे ऐसा विलाप करने को मजबूर करता है। जिसे सुन कर पशु-पक्षी और पत्थर तक का हृदय पिघल जाता है?'' ''ईश्वर।''

''चैत-वैशाख के दिनों में एक-एक आम के ऊपर दस-दस करोड़ कीड़ों को सिर्फ धूप और हवा में मरने का मजा चखने के लिए कौन पैदा करता है? कौन बरसात के दिनों में धरती पर असंख्य मच्छरों, कीड़ों-मकोड़ों को तड़प-तड़प कर मरने के लिए पैदा करके अपनी असीम 'दया' का परिचय देता है?''–''ईश्वर।''

''तब तो उसमें दया बिल्कुल नहीं।'' उतनी भी दया नहीं, जितनी कि क्रूर से क्रूर आदमी में संभव हो सकती है। रोते-तड़पते बच्चे को देखकर पत्थर का दिल भी पिघल जाता है। तुम भी उसकी माँ को उस दिन नन्हें बच्चे के मरने पर रोती देखकर अफसोस करते थे कि नहीं?''

''मैं भी रो रहा था। कैसा सुन्दर लड़का, उसका गोल-मटोल चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखों और बिना दँतुली के मुँह के हँसते वक्त गालों में पड़े-गड्ढे अब भी बड़े सुन्दर याद आते हैं।''

''ऐसे बच्चे को मारने वाले कौन–आदमी या राक्षस?'' –''राक्षस से भी खराब।''

हाँ, दुनिया में प्राणियों के सुख की घड़ियाँ कम और दुःख की अधिक हैं। एक मच्छरों की ही योनि ले ली जाय, तो उसकी संख्या शंख-महाशंख से भी ऊपर चली जायेगी और इस तरह की योनियाँ भी हमारी इस पृथ्वी पर अरबों होंगी। अत्यन्त छोटे, दूरबीन से दिखाई देने वाले कीड़े से लेकर समुद्र की विशाल मछलियों तक अरबों योनियां हैं। उनमें अधिकांश शंख-महाशंख तक प्राणी अपने में रखती है। कहा जाता है कि जो मनुष्य यहाँ, इस लोक में, निकृष्ट कर्म करता है, वही परलोक या परजन्म में इन निकृष्ट योनियों में, दण्ड पाने के लिए पैदा होता है, पर यह बात टिकती नहीं, क्योंकि इस पृथ्वी पर मनुष्य की सारी संख्या डेढ़ अरब के ही आस-पास है। फिर डेढ़ अरब मनुष्यों के पुरबीले कर्म को भोगने के लिए इतनी अधिक संख्या में जीव कैसे पैदा हो सकते हैं? ईश्वर ने इन असंख्य जीवों को सिर्फ यंत्रणा और कष्ट के लिए पैदा करके क्या अपनी कृपा का परिचय दिया है? इन्साफ तो उसमें छू नहीं गया, बल्कि उसके इस कर्म से तो यही पता लगता है कि उससे बढ़कर जालिम और पाषाण-हृदय दुनिया में और कहीं नहीं मिल सकता। शेर भी हिरण का शिकार करता है, अपनी भूख को दूर करने के लिए, छिपकली पतिंगे को दबोचती है, पेट भरने के लिए। सभी जीभधारी दूसरे जीव को आत्मरक्षा और जीवन-धारण के लिए मारते हैं। भरसक तड़पा-तड़पा कर मारना भी पसन्द नहीं करते। लेकिन ईश्वर जिनको मारता है, क्या उनके मांस से वह अपनी भूख शान्त करता है, या आत्मरक्षा के लिए उसे वैसे करना आवश्यक मालूम होता है? इन दोनों के न होने पर सिर्फ खेल के लिए ऐसा घोर कृत्य ईश्वर को क्या बतलाता है?

अभिनेत्री कंगना रनौत की पृष्ठभूमि में विचारधारा

हेम राज स्टेनो

अभिनेत्री कंगना रनौत के दो बयान पंजाबी ट्रिब्यून में 12 और 14.11.2021 को प्रकाशित हुए हैं। इन बयानों को विस्तार से देने का कोई अर्थ नही बनता। हम देखने की कोशिश करेंगे कि कंगना रनौत के बयानों से कुछ बिंदु लेकर वह किस विचारधारा को फैलाने की कोशिश कर रही हैं। यह विचारधारा क्या है, इसकी पृष्ठभूमि क्या है? और यह कैसे जनविरोधी है,हम इन तीन बिंदुओं पर विचार करते हैं।

पहला बिंदु : पंजाबी ट्रिब्यून 12.11.21

1947 में कौन सा युद्ध हुआ था? 1947 की आजादी ''भीख'' थी : कंगना

''भारत को 2014 में मिली असली आजादी''।

ये सभी देशवासी जानते हैं कि आजादी पाने के लिए हमारे हजारों शहीद हुए हैं। अगर भीख मांगकर आजादी मिली तो हमारे देश के ऐसे हजारों शहीदों को जान देने की क्या जरूरत थी। जी हां, हो सकता है कि एक्ट्रेस कंगना को भिखारी की तरह काम करने की आजादी मिली हो। लेकिन शहीदों से मिली आजादी को भीख कहना उन शहीदों का मजाक उड़ाना है। इस बारे में सभी देशवासियों को कंगना से जवाब मांगना चाहिए।

उन्होंने यह भी कहा कि भारत को वास्तविक आजादी 2014 में मिली थी जब मोदी के नेतृत्व वाली सरकार अस्तित्व में आई थी। कंगना पर सवाल उठता है कि 2014 में ऐसा कौन सा युद्ध लड़ा गया जिससे हमारे देश को आजादी मिली। एक तरफ युद्ध के बिना आजादी न मिलने की बात करना और दूसरी तरफ आजादी की भीख मांगना विश्वासघात से ज्यादा कुछ नहीं है. आगे चर्चा की कोई आवश्यकता नहीं है।

हां, यह सच है कि केंद्र में मोदी के नेतृत्व वाली सरकार बनने के साथ ही ऐसे बयान सुनने को मिलते ही रहे हैं कि सदियों बाद हिंदू शासन आया है। अगर कंगना रनौत सरकार बदलने को ही आजादी कहती हैं तो हर कोई अंदाजा लगा सकता है कि उनके दिमाग में क्या चल रहा है.

इतना ही नहीं, पंजाबी ट्रिब्यून में 14.11.21 को प्रकाशित अपने बयान में उन्होंने कहा कि ''1857 स्वतंत्रता के लिए पहला संयुक्त संघर्ष था और सुभाष चंद्र बोस, रानी लक्ष्मी बाई और वीर सावरकर जैसी महान हस्तियों ने अपना बलिदान दिया।'' उन्होंने यह भी उल्लेख किया: महात्मा गांधी पर ''भगत सिंह को मरने देने और सुभाष चंद्र बोस का समर्थन नहीं करने'' का आरोप लगाया। इन सब से कंगना की वास्तविक विचारधारा का पता चलता है।

यह सच है कि अंग्रेजों के खिलाफ 1857 के युद्ध को हमारे देश के इतिहास में स्वतंत्रता का पहला युद्ध माना जाता है । 1857 के युद्ध को 1857 का ग़दर भी कहा जाता है। यह भारत के लोगों द्वारा लड़ी गई एक लड़ाई थी, जिसके बारे में सावरकर ने लिखा, ''उन पांच दिनों में जब हिंदुओं और मुसलमानों ने भारत को अपना देश घोषित किया था और कहा था, वे सभी भाई, भाई हैं हिंदू और मुस्लिम नही हैं, उन्होंने मिलकर दिल्ली में राष्ट्रीय स्वतंत्रता का झंडा फहराया। वो गौरवशाली दिन हिंदुस्तान के इतिहास में हमेशा याद किए जाएंगे।''[1]

सावरकर ने इन पांच दिनों का उल्लेख ''देश की राजधानी, दिल्ली को 11 मई, 1857 को ब्रिटिश कब्जे से मुक्त कराना और बहादुर शाह जफर को भारत का शासक घोषित किए जाने के बारे में कहा है। 16 मई तक, शहर से एक विदेशी राज्य के सभी संकेत हटा दिए गए हैं।''[2]

लेकिन कंगना ने यह भी कहा है कि ''सुभाष चंद्र बोस, रानी लक्ष्मी बाई और वीर सावरकर जैसी महान हस्तियों ने अपना बलिदान दिया।'' आइए तथ्यों के आधार पर इसका परीक्षण करें।

1857 के युद्ध में रानी लक्ष्मीबाई का योगदान सही है क्योंकि रानी लक्ष्मी बाई, जिन्हें झांसी की रानी भी कहा जाता है, ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के खिलाफ लड़ते हुए ग्वालियर में शहीद हो गई थीं। रानी लक्ष्मीबाई स्वतंत्रता संग्राम में शहीद होने वाली पहली महिला थीं।

इस लड़ाई में सुभाष चंद्र बोस का शामिल होना समझ से परे है। क्योंकि सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को हुआ था। 1857 के युद्ध के 40 साल बाद जन्म

लेने वाला व्यक्ति अपने जन्म से 40 साल पहले लड़े गए स्वतंत्रता संग्राम में कैसे भाग ले सकता है? कंगना के इस बयान का पाठक खुद अंदाजा लगा सकते हैं.

यह सच है कि इतिहास जानने वाला कोई भी व्यक्ति मोटे तौर पर इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि सुभाष चंद्र बोस ने "आजाद हिंद फौज" का नेतृत्व किया था और उनका नारा था "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।" स्वतंत्रता का अर्थ तत्कालीन ब्रिटिश (ब्रिटिश) स्वतंत्रता से लिया गया था। इसका मतलब यह है कि सुभाष चंद्र बोस के आजादी के लिए योगदान के लिए श्रेय देना हमारे देशवासियों में से प्रत्येक का नैतिक कर्तव्य है। लेकिन यह कंगना रनौत की तरह नहीं है कि उन्हें उनके जन्म से पहले हुई महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं में से एक के रूप में पेश किया जाए। ऐसा करना उचित नहीं होगा।

अब कंगना के बयान को देखें "गांधी ने भगत सिंह को क्यों मरने दिया.. नेता बोस को क्यों मारा गया गया...?"

सबसे पहले कंगना के भगत सिंह को मरने के लिए कहने के बारे में। क्या भगत सिंह जी की एक आम मौत थी? यह तो सभी जानते हैं कि वह अपने साथियों राजगुरु और सुखदेव के साथ स्वतंत्रता संग्राम में हंसते-हंसते फांसी के फंदे पर चढ़ने में शहीद हुए थे। तो मरना और शहीद होना दो बिल्कुल अलग चीजें हैं। अगर मौत को शहीद होना है तो हमारे देश के कितने लोग ब्रिटिश शासन में मारे गए थे, तो सभी को शहीद कहा जाए। भगत सिंह की शहादत को 'मर चुके हैं' कहना, उनके अतुलनीय बलिदान के लिए इस से अधिक अपमानजनक नहीं हो सकता।

अब कंगना के दूसरे बिंदु के बारे में, "नेता बोस को क्यों मारा गया...?" यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि सुभाष चंद्र बोस जिस जहाज पर सवार थे, उसका एक्सीडेंट हो गया था। उसका शरीर बुरी तरह झुलस गया और उसकी मौत हो गई। यह दुर्घटना जापान के टोक्यो (अब ताइपे) में हुई। यह भी सच है कि उनके अनुयायी उनकी मृत्यु की व्याख्या से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हैं। हाल के दिनों में उनके बारे में तरह-तरह के किस्से सामने आ रहे हैं। लेकिन यह स्पष्ट है कि महात्मा गांधी का उनकी मृत्यु से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन इतिहास की 'नई शोधकर्ता' कंगना रनौत बयान दे रही हैं कि "गांधी ने... नेता बोस को क्यों मारा" यह एक्ट्रेस का सपना हो सकता है।

अब बात करते हैं सावरकर की। उनका जन्म 28 मई, 1883 को हुआ था। 1857 की लड़ाई के लगभग 26 साल बाद पैदा हुआ व्यक्ति उस लड़ाई में कैसे भाग ले सकता है? हां, अगर कंगना रनौत का मतलब है कि सावरकर ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका निभाई, तो हम बाद में देखेंगे

अब सवाल यह उठता है कि कंगना रनौत ऐसा बेतुका बयान क्यों दे रही हैं। ऐसा नहीं है कि वह सिर्फ लोगों को इधर उधर की बात मार रही है। इसके बारे में पूरी तरह से स्पष्ट होने के लिए, हमें सावरकर के जीवन पर एक नजर डालने की जरूरत है।

सावरकर पर एक नजर

इंग्लैंड में उन्होंने फ्री इंडिया सोसाइटी (इंडिपेंडेंट इंडिया सोसाइटी) का गठन किया, जिसने अंग्रेजों के खिलाफ गुप्त अभियान चलाया। जब फ्री इंडिया सोसाइटी के सदस्य मदन लाल ढींगरा ने लंदन में इंडिया ऑफिस के एक अधिकारी की हत्या कर दी, तो सावरकर को गिरफ्तार करने और उन्हें भारत लाने का फैसला किया गया। भारत वापस जाते समय, उन्होंने फ्रांस के तट के पास एक जहाज से कूदने का एक साहसी प्रयास किया, लेकिन मार्सिले (फ्रांस) से पुन: ग्रिफतार कर लिया गया। उस समय, वे धर्म, भाषा या क्षेत्र के आधार पर लोगों के बीच भेदभाव करने पर विचार नहीं करते थे। यही कारण है कि 1857 के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम नामक अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि "हिंदू और मुसलमान दोनों भारत की मिट्टी के बच्चे हैं। इनके नाम अलग-अलग हैं लेकिन ये सभी एक मां की संतान हैं। भारत माता दोनों की माता है। वे खून के रिश्तेदार हैं। नाना साहब, दिल्ली के बहादुर शाह, मौलवी अहमद शाह, खान बहादुर खान और 1857 के अन्य नेताओं ने इस रिश्ते को कुछ हद तक महसूस किया और अपनी दुश्मनी भूल गए और स्वदेश के बैनर तले एकजुट हो गए।"[3]

अंग्रेजों ने उन्हें कैद कर लिया। 50 साल जेल की सजा हुई (हालाँकि उसने इसे पूरा नहीं किया)

सावरकर के विचारों में परिवर्तन

1857 की लड़ाई में अंग्रेजों को एहसास हो गया था कि अगर हिंदू और मुसलमान एक साथ रहते हैं और उनके खिलाफ लड़ते हैं तो उनके लिए शासन करना मुश्किल होगा।

इसलिए उन्हें किसी ऐसे व्यक्ति और पद्धति की आवश्यकता महसूस हुई जो इस हिंदू-मुस्लिम एकता को पाट सके। अंग्रेज चाहते थे कि कोई न कोई वाहक अपनी कुख्यात "फूट डालो और राज करो" की नीति को लागू करे। दूसरी ओर, सावरकर जेल की कठोरता से मानसिक रूप से इतने टूट चुके थे कि उन्हें लगने लगा था कि उन्हें वैसे भी जेल से बाहर निकलने का रास्ता खोजना होगा। इसलिए सावरकर ने अंग्रेजों से माफी मांगी और बाहर निकलने का सहारा लिया। उसने सावरकर को मार डाला जो उससे पहले था। अवसर का लाभ उठाते हुए, अंग्रेजों ने उन्हें बाहर निकाल लिया और सावरकर को "फूट डालो और राज करो" की कुख्यात नीति के तहत हिंदुओं और मुसलमानों के बीच संघर्ष शुरू करने के लिए छोड़ दिया। हिंदुओं और मुसलमानों को एक मां की संतान कहने वाले सावरकर ने 1913 में हिंदू-मुस्लिम एकता को तोड़ा और दो राष्ट्रों (हिंदू राष्ट्र और मुस्लिम राष्ट्र) के समर्थक बन गए।

सावरकर के जीवनी लेखक, धनंजय कीर के अनुसार, अंडेमान से उनके प्रस्थान के समय हृदय परिवर्तन स्पष्ट था क्योंकि उन्होंने सेलुलर जेल से बाहर निकलते समय कुछ चुनिंदा साथियों को यह पवित्र शपथ दिलाई थी।

एक ईश्वर, एक देश, एक लक्ष्य,
एक जाति, एक जीवन, एक भाषा।[4]

हिंदू और मुसलमान दोनों को भाई कहने वाले की इस बात से स्पष्ट है कि उनके पहले विचारों से 180 डिग्री का मोड़ आया था। क्योंकि हिंदुओं का भगवान अलग है और मुसलमानों का अल्लाह अलग है। यह स्पष्ट है कि वे धर्म और नस्ल के आधार पर अलगाव की अवधारणा को बढ़ावा दे रहे थे।

उनकी माफी

वीडी सावरकर अभियुक्त संख्या-32778 के माफीनामे जिसे व्यक्तिगत रूप से सर रेजिनाल्ड क्रैड्रॉक को सौंप दिया गया था, 14 नवंबर 1913 को सावरकर द्वारा, जब गवर्नर जनरल की परिषद के गृह सदस्य, जब अक्टूबर-नवंबर 1913 में क्रैड्रॉक ने अंडमान का दौरा किया था। (नोट- यह एक लंबी और विस्तृत माफी है इसलिए हम इस पाठ से जुड़े हिस्से को ही उद्धृत कर रहे हैं।) इस माफी में सावरकर लिख रहे हैं :

"मामला उन सभी के लिए अलग है जो सीमित समय के लिए जेल गए हैं। लेकिन साहब, वे 50 साल मुझे मुंह से घूर रहे हैं। मैं, एक अकेले कैदी के रूप में, उन्हें काटने के लिए नैतिक ऊर्जा कैसे जुटा सकता हूं?"

उसी तरह, "क्या मैं अंततः माननीय को याद दिला सकता हूं कि मेरे अनुकंपा आवेदन को पढ़ने की कृपा करे, जिसे मैंने 1911 में भेजा था, और इसे स्वीकृत करके भारत सरकार को भेजे?"[5]

उसके बाद

"तो अगर सरकार मुझे अपनी पूरी दयालुता और करुणा से मुक्त करती है, तो मैं संवैधानिक विकास और ब्रिटिश सरकार के प्रति वफादारी के अलावा कुछ भी नहीं हो सकता, जो उस विकास के लिए पहली शर्त है। .... सरकार, मैं जो चाहूं सेवा करने के लिए तैयार हूं क्योंकि मेरा हृदय परिवर्तन भीतर से है और मुझे आशा है कि मेरा व्यवहार ऐसा ही बना रहेगा। (लेखक का उद्घाटन पत्र)।"[6]

उन्होंने 1911 में और फिर 1917, 1918 और 1920 में माफी भी लिखी।

खैर, सावरकर 1937 में रिहा हुए और बाहर आए। हालांकि ब्रिटिश सरकार ने स्पष्ट रूप से उन पर कुछ प्रतिबंध लगाए थे। दरअसल, उन्हें माफ कर एक तरह से उन्हें 'फूट डालो राज करो' की ब्रिटिश नीति के तहत काम करने दिया गया। बाहर आकर उन्होंने "हिन्दू दर्शन" पुस्तक लिखी। सावरकर जहां एक देश के हिंदू और मुस्लिम भाई और एक ही मां के पोते कहते थे, वहां उन्होंने 15 अगस्त 1943 को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बाहर आकर कहा-

मेरा जिन्ना के द्विराष्ट्र है सिद्धांत से कोई विरोध नहीं है। हम हिंदू अपने आप में एक राष्ट्र हैं और यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हिंदू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं।[7]

इतना ही नहीं, उन्होंने हिंदू राष्ट्र की अवधारणा को उजागर करने के लिए कहा-

"इस ब्रह्मांड में हमारे हिंदुओं का अपना एक राष्ट्र होना चाहिए, जहां हम शक्तिशाली लोगों - हिंदुओं के वंशज के रूप में पनपते रहें।"

आगे बढ़ते हुए, दो राष्ट्रों के सिद्धांत को भाषाओं में भी लागू करते हुए, 1939 में जारी एक बयान में, उन्होंने "हिंदू पार्टी की नीति" का खुलासा किया और घोषणा की

"हिंदी, शुद्ध, संस्कृत पर आधारित हिंदी, हिंदुओं की राष्ट्रीय भाषा होगी (जैसा कि आज अक्सर हिंदुत्व-वादी कहते है और नागरी राष्ट्र लिपि।"[9]

इससे भी आगे बढ़ते हुए सावरकर ने कहा, स्वराज का वास्तविक अर्थ केवल भारत नामक भूमि की भौगोलिक स्वतंत्रता नहीं है। (अब कंगना रनौत भी यही बात कह रही हैं)............[10]

सावरकर ने तत्कालीन तिरंगे झंडे को, जिसके बीच में चरखा होता था, राष्ट्रीय ध्वज या स्वतंत्रता संग्राम के ध्वज के रूप में स्वीकार करने से भी इनकार कर दिया था। 22 सितंबर 1941 को हिंदू महासभा के कार्यकर्ताओं के नाम पर जारी एक बयान में उन्होंने घोषणा की कि- –

जहां तक ध्वज का संबंध है, हिंदू लोग उस ध्वज के अलावा किसी भी ध्वज को नहीं जानते हैं जो पूरे हिंदुत्व का प्रतिनिधित्व करता है जो स्वास्तिक और ओम अंकित है। महासभा का ध्वज शिलालेख ओम और स्वस्तिक के साथ है जो हिंदू जाति का प्राचीन प्रतीक है। और नीति और युगों को भारत में युगों-युगों से सम्मान प्राप्त है। चरखे वाला झंडा भले ही खादी भंडार का प्रतिनिधित्व करता हो लेकिन चरखा कभी भी हिंदुओं और प्राचीन राष्ट्र की महान भावना का प्रतीक नहीं हो सकता। स्वास्तिक अंकित झंडे के अलावा किसी भी झंडे को हम स्वीकार नही करते।[11]

यहाँ दो या तीन बातें ध्यान देने योग्य हैं:

पहला यह कि यह शुद्ध हिंदू धर्म के अनुयायियों का ध्वज है और यह भगवा रंग का है। इसीलिए आज के हिंदुत्ववादियों को भगवा पार्टी भी कहा जाता है।

दूसरे, स्वस्तिक चिन्ह वाले झंडे को जर्मन नाजी पार्टी (हिटलर की फासीवादी पार्टी) ने अपनाया था। वे स्वास्तिक चिन्ह को शुद्ध आर्य राष्ट्र का प्रतीक मानते थे। उन्होंने अपने ध्वज पर स्वास्तिक का अलंकरण किया हुआ था। यहां तक कि जो लोग इतिहास के बारे में बहुत या कम जानते हैं वे जानते हैं कि हिटलर ही थे जिन्होंने सभी यहूदियों और अन्य लोगों को मारने के लिए जर्मनों को उकसाया था यह कहा था कि केवल आर्य ही राष्ट्र पर शासन करने के योग्य है।[12]

2014 में जब केंद्र में मोदी सरकार सत्ता में आई थी, इसलिए कहा जाता था कि हिंदू शासन सदियों बाद आया।

ये हिंदुत्व विद्वान आर्यों को आज के हिंदू के रूप में भी देखते हैं। सावरकर की समझ पर एक नज़र डालें ''इतिहास के बारे में यहां आए और बसने वाले आर्यों ने पहले ही एक राष्ट्र बना लिया है जो अब हिंदू राष्ट्र का शरीर है। जो खून उनकी नसों में बहता है और उनके दिलों को धड़कता रहता है, वे हैं एक साथ .. ..'' [13]

हिटलर ने जर्मनी में बाकी सभी लोगों की हत्या करने की शुरुआत की। यह दावा करते हुए कि आर्य ही राष्ट्र पर शासन करने का हकदार थे। दूसरी ओर, सावरकर ने यहूदियों के खिलाफ हिटलर के नरसंहार का खुलकर समर्थन किया और 14 अक्टूबर 1938 को यहां तक सुझाव दिया कि भारत में मुसलमानों और ईसाइयों जैसे अल्पसंख्यकों की समस्या के लिए भी यही समाधान अपनाया जाना चाहिए। वह भी कैसे जरा देखिए- उन्होंने कहा, ''एक राष्ट्र वहां रहने वाले बहुसंख्यकों से बना होता है। जर्मनी में यहूदियों के साथ क्या हुआ? वे अल्पसंख्यक थे, और उन्हें जर्मनी से निकाल दिया गया था।''

सावरकर यहीं नहीं रुके, लेकिन जैसा कि आज के भाजपा नेता कह रहे हैं कि भारत को विश्व गुरु बनाना सावरकर की विचारधारा का प्रतिबिंब है। सावरकर का तर्क था कि अगर अतीत में स्पेन और पुर्तगाल जैसे छोटे देश दुनिया के विभिन्न हिस्सों पर शासन कर सकते हैं, तो हिंदू जो उनसे कहीं बेहतर हैं, वे दुनिया पर शासन क्यों नहीं कर सकते? सावरकर ने दुनिया पर राज करने की हिंदू महत्वाकांक्षा की इस खुली घोषणा के साथ अपने ग्रंथ में हिंदुत्व का समापन किया-

22 करोड़ लोग (1923 में 'हिंदुत्व' लेखन के समय भारत की जनसंख्या) अपने संघर्ष के आधार पर भारत की भूमि, अपनी पुश्तैनी भूमि के लिए, अपनी पवित्र भूमि के लिए पूरी दुनिया को झुकने पर मजबूर कर सकते है। एक समय आएगा जब मानव जाति को इस शक्ति का सामना करना पड़ेगा।[14]

'मनु स्मृति' जाति व्यवस्था पर स्त्री विरोधी ग्रंथ माना जाता है। लेकिन सावरकर ने कहा, ''मनु-स्मृति एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जो वेदों के बाद हमारे हिंदू राष्ट्र के लिए अत्यधिक सम्मानित है और जो प्राचीन काल से हमारी संस्कृति, नैतिकता, विचार और व्यवहार की आधारशिला रहा है। और आगे भी होगा।''[15] आज भी मनुस्मृति हिन्दू शासन पद्धति है।

सावरकर यहीं नहीं रुके। उन्होंने हिंदू राष्ट्र के एक अभिन्न अंग के रूप में जाति व्यवस्था का समर्थन किया। .. जहां गैर-आर्य पापी निचली जाति के लोग रहते हैं और जहां संस्कृत भाषा नहीं बोली जाती है, वह मलेछ देश है।[16]

इसलिए सावरकर के ऐसे विचारों से स्तब्ध हो भीम राव अम्बेडकर ने टिप्पणी की थी, ''यदि हिंदू राज्य एक

शेष पृष्ठ 13 पर

बच्चों का कोना

छोटा पर खतरनाक जीव - मच्छर

बूटा सिंह वाकिफ़
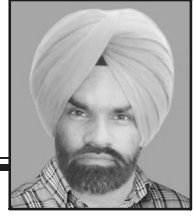
जब भी हमारे मन-मस्तिष्क में खतरनाक जानवरों का ख्याल आता है तो हमारे दिमाग में सब से जहरीले और खूंखार जानवरों की तस्वीर ही उभरती है। हम आमतौर पर शेर, चीते, सांपों और अन्य जंगली जीवों को बेहद खतरनाक जानवर समझते हैं। कई बार हमारे पालतू जानवर भी किसी हद तक खतरनाक साबित हो सकते हैं। शायद हम अभी भी इस बात से अनजान होंगे कि उपरोक्त दर्शाए जानवरों से भी ज्यादा खतरनाक एक और जीव है। यह छोटा जीव है- मच्छर। मच्छर संसार में सबसे ज्यादा रोग फैलाने वाला और ज्यादा मौतों के लिए जिम्मेवार है। यह दुनिया का सबसे घातक जीव माना जा सकता है। स्पेनिश भाषा से लिया गया शब्द है जिसका भाव है- 'छोटी मक्खी'।

मच्छर अन्य खूंखार जानवरों की तरह मनुष्यों पर सीधा हमला करके उन्हें अपना शिकार नहीं बनाता। मच्छर के पास एक सब से ज्यादा शक्तिशाली हथियार है। इस हथियार का नाम है 'बीमारियां'। जी, हां, मच्छर मनुष्यों के अंदर बीमारियां फैला कर पहले उनको बीमार करता है, और अगर मनुष्य समय पर इलाज नहीं करवाता तो इसका उसका नतीजा मौत होता है।

मच्छर एक खतरनाक जीव

मच्छर सिर्फ हमारा रक्त चूसने वाले जीव ही नहीं हैं। यह न सिर्फ काटते वक्त हमारे शरीर पर खुजली का कारण बनते हैं बल्कि बड़े स्तर पर बीमारियां फैलाने का कारण भी बनते हैं। वायरस (Viruses) और परजीवियों (Parasites) द्वारा होने वाली अनेक बीमारियों को मनुष्य से मनुष्य में फैलाने के लिए मच्छर मुख्य तौर पर जिम्मेदार होता है। अगर एक मादा मच्छर बीमारी से पीड़ित किसी मनुष्य या जानवर का खून चूस लेता है तो यह मच्छर स्वस्थ मनुष्यों/जीवों में भी आसानी से बीमारियां पैदा करने के समर्थ होता है। मच्छर चाहे खूंखार जानवरों की तरह मनुष्य या जानवरों को सीधे नहीं निगलता पर यह सीधे तौर पर निगलने वाले जानवरों से किसी तरह से कम नहीं है। यह सब से ज्यादा वायरल संक्रमण फैलाता है। यही कारण है जिसके कारण मच्छर सब से खतरनाक जीव के रूप में हमारे सामने आता है।

मच्छर की किस्में

दुनिया भर में मच्छरों की 3500 के करीब किस्में पाई जाती हैं। इनमें से 200 किस्में ऐसी हैं जो मनुष्यों पर हमला करती हैं। आगे इन किस्मों में से तीन विशेष प्रजातियां ऐसी हैं जो मनुष्यों में खतरनाक बीमारियां जैसे मलेरिया, पीला बुखार आदि फैलाने के लिए जानी जाती हैं। इन तीन प्रजातियों के नाम हैं- ऐनाफ़लीज (Anopheles), कुलेअक्स (Culex) और एडीज (Aedes)।

मच्छरों को खत्म करना एक मुश्किल कार्य

बड़ी बीमारियां फैलाने वाले इन मच्छरों को समाप्त करना अभी संभव नहीं। आप चाहे कितनी भी मच्छर-नाशक दवाओं का छिड़काव करते होंगे। मच्छर मारने वाले इलैक्ट्रॉनिक यंत्रों का इस्तेमाल करते होंगे। हर रोज शयनकक्षों को मच्छर मुक्त रखने की पूरी कोशिश करते होंगे पर मच्छरों की फौज का अंत अभी संभव नहीं है। प्रजनन क्रिया के दौरान मच्छरों की आबादी चींटियों को छोड़कर अन्य सब जीवों से ज्यादा होती है। प्रकृति भी इन छोटे जीवों का सफाया अचानक ही नहीं कर सकती।

मच्छर हर जगह मौजूद

भूमध्य रेखा के तप्त खंडों व नमी वाले क्षेत्रों में मच्छरों की घनी आबादी पाई जाती है। इसका यह अर्थ नहीं है कि पृथ्वी के गर्म और शुष्क क्षेत्रों में मच्छर नहीं मिलते। मच्छर कनाड़ा के ठण्डे ताप क्षेत्रों में भी मिलते हैं। यह काफी हद तक स्वयं को ठण्ड और गर्मी से बचाने के समर्थ भी हैं। मच्छरों ने अंटार्कटिका और इसके नजदीकी कुछ टापूओं और आइसलैंड़ के टापू को छोडकर दुनिया के हर महाद्वीप पर अपना कब्जा जमाया हुआ है और अपना आतंक मचाया हुआ है। हम अपने कमरों में रात के समय चाहे मच्छर मारने वाले कच्चे प्रबंध करके चाहे मच्छरों पर काबू पा सकते हैं पर पृथ्वी को अभी मच्छरों से मुक्त करने के समर्थ नहीं हैं।

बीमारियों के फैलाव के लिए ज्यादा जिम्मेदार

मच्छर इंसानों और अन्य जानवरों में बीमारियां फैलाने

के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार जीव है। जैसे कि ऊपर बताया गया है कि यह अनेक वायरसों व परजीवियों के लिए बीमारियां फैलाने में सबसे मददगार साबित होता है। बीमारियों का वाहक होने के कारण मच्छर आबादी के एक बड़े भाग को इनका शिकार बनाते हैं। हर वर्ष अनेक मनुष्य मच्छर की इस भूमिका का शिकार होकर मौत के मुँह में चले जाते हैं। यह छोटे जीव सबसे ज्यादा बीमारियों के वाहक बनते हैं। यह बहुत सी बीमारियों जैसे चिकनगुनिया (Chikungunya), पीला बुखार (Yellow fever), पश्चिमी नील वायरस (Western Nile Virus), डेंगू बुखार (Dengue fever), फाईलारियासिस (Filariasis), ऐलिफैंथियासिस (Elephntiasis), जीका वायरस (Zika virus) और खासकर मलेरिया (Malaria) जैसी बीमारियां फैलाने के जिम्मेदार होते हैं। इन बीमारियों से पीड़ित लाखों लोग हर वर्ष मौत के मुंह में चले जाते हैं।

मच्छर सबसे ज्यादा मौतों कारण बनते हैं

दुनिया भर में अगर तुलना करने के नज़रिये से ही देखें तो सबसे घातक माने जाने वाले जीव ग्रेट वाईट शार्क की लपेट में दुनिया के लगभग एक-डेढ़ दर्जन लोग ही आते हैं। सबसे खतरनाक हिप्पो वर्ष में लगभग 500 लोगों की जान लेने का कारण बनता है। मगरमच्छ की सबसे खतरनाक प्रजाति जो कि संसार के नमकीन पानी में पाई जाती है, हर वर्ष 800 से 1000 मनुष्यों की मृत्यु का कारण बनती है। जहरीले सांप भी किसी हद तक मानवीय जीवन की क्षति का कारण बनते हैं। यह गिनती दुनिया भर में औसतन एक लाख के करीब बैठती है। पर अगर इन मौतों की तुलना मच्छरों द्वारा होने वाली मौतों से की जाए तो यह गिनती बहुत तुच्छ नजर आएगी। मच्छर ऐसे रिकार्ड़ का मजाक उड़ाते नजर आते हैं। विशेषज्ञों द्वारा लगाए गए अनुमानों के मुताबिक मच्छर हर वर्ष दुनिया भर में लगभग 70 करोड़ लोगों को बीमारियों का शिकार बनाते हैं। यह संख्या संसार की कुल जनसंख्या के दसवें भाग के करीब बनती है। इनमें से अधिकतर मामले चाहे जानलेवा साबित नहीं होते। फिर भी बीमारी संबंधी अज्ञानता या समय पर चिकित्सा सहायता न मिलने के कारण इन पीड़ित लोगों में से लगभग 2.5 से 3 करोड़ लोग मच्छरों के कारण मौत का शिकार होते हैं।

मच्छरों से बचाव जरूरी

चाहे मच्छरों का स्थाई तौर पर अंत करना संभव नहीं है पर इनकी लपेट में आने से सचेत रहना चाहिए। मानवीय बस्तियों व घरों को साफ-सुथरा रखना चाहिए। आम लोगों में मच्छरों द्वारा होने वाली बीमारियों के प्रति जागरूकता पैदा करके, घरों में जालीदार दरवाजों का इस्तेमाल करके, बरसाती मौसम में पूरा शरीर ढकने वाले वस्त्रों का प्रयोग करके किसी हद तक मच्छरों से बचाव किया जा सकता है।

98762-24461

अनुवाद : मुलख पिपली

पृष्ठ 11 का शेष

वास्तविकता बन जाता है तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह देश के लिए एक भयानक आपदा होगी।''[17]

''यह स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के लिए खतरा है। इस दृष्टि से यह लोकतंत्र के साथ असंगत है। हिंदू राज्य को हर कीमत पर रोका जाना चाहिए।''[18]

तो पूरी चर्चा का मतलब है कि कंगना सिर्फ लोगों के बारे ही नही कह रही बल्कि एक खास विचारधारा (जिसे सावरकर ने हिंदुओं के सामने रखा है) सूक्ष्मता से इस हिंदुत्व विचारधारा का प्रचार कर रही है। इस बात की जानकारी होनी चाहिए।

नोट: हिंदू धर्म से हमारा तात्पर्य उन लोगों से है जो हिंदू धर्म को मानते हैं, जिसमें धार्मिक मान्यताएं भी शामिल हैं। लेकिन जब हम हिंदुत्वी कहते हैं, तो इसका मतलब है कि वह राजनेता जो हिंदू धर्म के भगवा वस्त्र का उपयोग कर राजनीति कर रहे हैं जो पूरी तरह से हिंदू सांप्रदायिकता और अन्य आबादी से नफरत करने वालों पर आधारित हैं।

सन्दर्भ: 1. पृष्ठ 23, 2 पृष्ठ 23, 3 पृष्ठ 22, 4 पृष्ठ 25, 5 पृष्ठ 77, 6. पृष्ठ 75 से 78, 7 और 8. पृष्ठ 92, 9. पृष्ठ 93, 10. पृष्ठ 95, 11. पृष्ठ 48, 13 पृष्ठ 131,14 पृष्ठ 134,15 पेज 99, 16. पेज 132 17. पृष्ठ 134 पुस्तक 'सावरकर : झूठ और सच्चाई' लेखक शमसुल इस्लाम (पंजाबी अनुवाद : बलबीर लौंगोवाल), पंज आब प्रकाशन 12, द्वितीय संस्करण अंग्रेजी पुस्तक 'संघ परिवार का फासीवाद' लेखक राम पुनियानी पृष्ठ 46

98769-53561

जंग चाहते है आज जंगखोर,
ताकि राज कर सके हरामखोर

शंकर शैलेन्द्र

डेरा सच्चा सौदा मामला

मीडिया की सुर्खियों से दूर इंसाफ की लड़ाई में जमीनी संघर्षों की जीत

शिवइंदर सिंह

बीते 18 अक्टूबर 2021 को पंचकूला की विशेष सीबीआई अदालत ने डेरा सच्चा सौदा सिरसा के मुखिया गुरमीत राम रहीम सिंह और चार अन्य दोषियों – अवतार, जसबीर, कृष्ण कुमार, सबदिल– को डेरे के पूर्व श्रद्धालु और प्रबंधक रणजीत सिंह की हत्या के मामले में उम्र कैद की सजा सुनाई है. इसके साथ ही अदालत ने राम रहीम पर 31 लाख और अन्य दोषियों को 50–50 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया है. सजा के बाद राम रहीम आखिरी सांस तक जेल में रहेगा।

साल 2018 में डेरा मुखिया को डेरे में आई श्रद्धालु औरतों से बलात्कार और पत्रकार रामचंद्र छत्रपति हत्याकांड मामले में भी उम्रकैद की सजा सुनाई जा चुकी है. हालांकि श्रद्धालुओं को नपुंसक बनाने के मामले पर अभी अदालत में सुनवाई जारी है. गौरतलब है कि 12 अक्टूबर को हुई सुनवाई के मौके पर राम रहीम के वकील ने डेरे द्वारा किए जाने वाले समाज कल्याण के काम और राम रहीम की बिगड़ी सेहत का हवाला देते हुए अपने मुव्वकिल के साथ नरमी बरती जाने की अपील की थी.

राम रहीम और कृष्ण कुमार को कोर्ट ने आईपीसी की धारा 302 और 120बी (हत्या एवं आपराधिक षडयंत्र रचना) के तहत सजा सुनाई है. वहीं अवतार, जसबीर और सबदिल को आईपीसी की धारा 302, 120बी और आर्म्स एक्ट के तहत सजा सुनाई है.

रणजीत सिंह की 10 जुलाई 2002 को उनके गांव खानपुर कोलियां (जिला कुरुक्षेत्र) में गोली मार कर हत्या कर दी गई थी. राम रहीम को शक था कि रणजीत ने साध्वियों के यौन शोषण का खुलासा करने वाली गुमनाम चिट्ठी अपनी बहन से लिखवाई है. पुलिस जांच से असंतुष्ट रणजीत के बेटे जगसीर सिंह ने 2003 में पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय में याचिका दायर कर सीबीआई जांच की मांग की थी. उच्च न्यायालय ने बेटे के पक्ष में फैसला सुनाते हुए मामले की जांच सीबीआई को सौंपी जिसके बाद सीबीआई ने राम रहीम समेत पांच लोगों के खिलाफ केस दर्ज किया था. 2007 में अदालत ने आरोपियों पर कानून सम्मत धाराएं तय की. हालांकि शुरुआत में इस मामले में राम रहीम का नाम नहीं आया था लेकिन बाद में सीबीआई जांच के दौरान 2006 में राम रहीम के ड्राइवर खट्टा सिंह के बयानों के आधार पर उसका नाम इस हत्याकांड में जुड़ा.

गुरमीत राम रहीम को अर्श से फर्श तक पहुंचाने में साध्वी बलात्कार मामला, छत्रपति हत्या और रणजीत हत्याकांड मुख्य कारण बने हैं. तीनों मामलों की कड़ियां आपस में गुंथी हुई हैं. इस पूरी घटना में पत्रकार रामचंद्र छत्रपति नायक के तौर पर उभर कर सामने आते हैं जिन्होंने बेखौफ होकर अपने अखबार "पूरा सच" में डेरे के कुकर्मों को बेधड़क छापा और इसकी कीमत उन्हें अपनी जान गंवा कर चुकानी पड़ी.

रामचंद्र छत्रपति के अलावा भी कुछ ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता थे जो उनकी मौत के बाद भी मीडिया की सुर्खियों से दूर जमीनी संघर्ष करते रहे. सीबीआई जांच को लेकर उन्होंने हस्ताक्षर अभियान चलाए, डेरे के हमले झेले, पुलिस ने झूठे मामलों में केस दर्ज कर उन्हें जेलों में डाला पर वे झुके नहीं.

हरियाणा के कुरुक्षेत्र जिला की वकील और जन संघर्ष मंच हरियाणा की महासचिव सुदेश कुमारी इन्हीं में से एक हैं. सुदेश और उनका संगठन जन संघर्ष मंच हरियाणा राज्य में लंबे समय से औरतों, दलितों और मजदूरों के मुद्दे उठाता रहा है और उन पर संघर्ष करता रहा है.

साल 2002 में डेरा सिरसा में होते बलात्कारों को उजागर करती एक चिट्ठी सामने आई थी जिसमें इस बात का जिक्र था कि कुरुक्षेत्र जिला का एक मुख्य डेरा श्रद्धालु अपने परिवार के साथ डेरा छोड़ कर अपने गांव लौट आया है. इशारा सीधा रणजीत सिंह की तरफ था. 10 जुलाई 2002 को रणजीत की उसके गांव खानपुर कोलियां में हत्या कर दी गई.

सुदेश कुमारी ने मुझे एक लंबी मुलाकात में बताया, "रणजीत की हत्या के बाद जब हम उनके परिवार से मिले और उनकी बहन के साथ बात की तो उससे हमें पता चला कि उस

लड़की के साथ भी बलात्कार हुआ था और चिट्ठी में कुरुक्षेत्र की जिस साध्वी का जिक्र है वह वही थी. वह काफी डरी हुई थी। लड़की ने हमें रोते-रोते बताया कि मैं और मेरा भाई तो गुरुमीत राम रहीम को अपना भगवान मानते थे. मेरे भाई ने उसके लिए घर में खास कमरा बनवाया हुआ था. जब भी वह इस इलाके में आता था तो हमारे ही घर पर ठहरता था. लड़की इतनी डरी हुई थी कि उसे लग रहा था कि उसके भाई की तरह उसकी भी हत्या हो जाएगी. लड़की ने हमें डेरे में अन्य साध्वियों के साथ हुए बलात्कार और मार-पीट के बारे भी बताया. उसका कहना था कि पुलिस उनकी सुन नहीं रही. अगर एक बार उसके भाई की हत्या की जांच सीबीआई जैसी बड़ी एजेंसी से हो जाए तो सारा मामला खुल जाएगा।''

जन संघर्ष मंच हरियाणा अपनी तरफ से जांच कर ही रहा था कि इसी बीच पत्रकार रामचंद्र छत्रपति की भी हत्या हो गई. यह इस मामले में दूसरी हत्या थी. कातिलों को मौके पर ही पकड़ लिया गया था और वे डेरे के लोग निकले. उन्होंने बयान दिया कि उन्हें डेरे के प्रबंधक किशनलाल ने भेजा था. सुदेश बताती हैं, "जब छत्रपति की अस्थियां कुरुक्षेत्र पहुंचीं तो एक शोक सभा हुई जिसमें पत्रकार भाईचारा और कई जनसंगठन शामिल हुए. इसमें एक प्रस्ताव पारित किया गया कि डेरे की सीबीआई जांच के लिए एक हस्ताक्षर अभियान चलाया जाए जिससे पत्रकार छत्रपति, रणजीत और पीड़ित साध्वियों को इंसाफ मिल सके.

पर डेरे के आतंक के चलते किसी ने भी इस प्रस्ताव में उल्लेखित काम को आगे नहीं बढ़ाया. लेकिन जन संघर्ष मंच हरियाणा ने पहलकदमी करते हुए सीबीआई जांच की मांग को लेकर पर्चा निकाला जिसका शीर्षक था "हालात बता रहे हैं कि खुद डेरे के मुखिया ने कराए हैं ये हत्याकांड". इसे बड़े स्तर पर आम लोगों के बीच वितरित किया गया और हर जिले में हस्ताक्षर अभियान चलाया.

इस अभियान की शुरुआत कुरुक्षेत्र में हर साल आयोजित होने वाले गीता उत्सव (दिसंबर 2002) से की गई जिसमें तत्कालीन उपराष्ट्रपति भैरोंसिंह शेखावत मुख्यतिथि थे. मौके का फायदा उठाते हुए सुदेश और उनके संगठन ने ब्रह्मसरोवर पर आयोजित कार्यक्रम के बीच में ही बलात्कार और दोनों हत्याओं के मामले को लेकर मोर्चा खोल दिया. गीता उत्सव के बीचोबीच भारी प्रदर्शन हुआ. सुदेश और उनके साथियों को गिरफ्तार कर लिया गया. सुदेश ने बताया कि उनके दिमाग में था कि अगर उपराष्ट्रपति के आने के मौके पर मामले को खोला जाए तो शायद इसका कुछ असर पड़े.

इसके बाद जन संघर्ष मंच हरियाणा ने प्रदेश भर में डेरे द्वारा कराई गईं हत्याओं की सीबीआई जांच के लिए हस्ताक्षर अभियान शुरू किया जिसके तहत पर्चे बांटे गए, बसों-ट्रेनों में पोस्टर लगाए गए, लाखों की संख्या में हस्ताक्षर करवाए गए. इस दौरान मंच के कार्यकर्ताओं पर डेरे के लोगों ने संगठित हमले किए. सुदेश बताती हैं, "कोई भी राजनीतिक दल सामने नहीं आया. हमें हत्या की धमकी दी गई, हमारे वीडियो बनाए गए. लेकिन हमने सूझबूझ के साथ सार्वजनिक जगहों, कॉलेजों, बस-अड्डों बगैरह पर विभिन्न जिलों में कैंप लगाए. उस वक्त हमने 15 जिले कवर किए और प्रचार किया।"

इस अभियान के क्रम में 5 फरवरी 2003 को जब फतेहाबाद जिला में मंच की 14 सदस्यीय टीम पहुंची जिसमें 5 महिलाएं और 9 छात्र थे तो फतेहाबाद बस अड्डे पर 500-700 डेरा समर्थकों ने उन पर हमला कर दिया. यह अब तक का सबसे बड़ा हमला था. मंच की महिला कार्यकर्ताओं के कपड़े फाड़ दिए गए, उनकी चुन्नियां खिंची गईं, मारा-पीटा गया, सारे कागजात फाड़ दिए गए. इसी बीच फतेहाबाद पुलिस मंच कार्यकर्ताओं को थाना सिटी ले गई और यह कहा कि डेरे के लोग हजारों की संख्या में हैं तुम्हारी जान को खतरा है. लेकिन पुलिस ने उल्टा मंच कार्यकर्ताओं के खिलाफ ही आईपीसी की 307 (हत्या की कोशिश), 323, 506, 147, 148 जैसी धाराओं के तहत मामला बना दिया और आरोप यह लगाया गया कि इन्होंने हत्या करने के इरादे से डेरा समर्थकों पर हमला किया.

सुदेश बताती हैं, "धारा 307 में जमानत नहीं हो सकती थी तो हमें हिसार जेल में रखा गया. हम डेढ़ महीना जेल में रहे. पूरा प्रशासन डेरे के साथ मिला हुआ था. हमारे जेल जाने के बाद भी राज्य में बड़े प्रदर्शन हुए. मंच ने अपना अभियान जारी रखा. फतेहाबाद के वकील हरजीत सिंह संधू और उनके साथी वकीलों ने पूरी निडरता से हमारा साथ दिया और पूरे छह साल हमारा केस बिना फीस के लडा. उस समय हरियाणा के पत्रकार संघ और कुरुक्षेत्र बार एसोसिएशन ने पुलिस कार्रवाई की निंदा करते हुए हमारा समर्थन किया.

सुदेश और उनके साथियों को छह साल बाद 10 जून 2009 को इस मामले में दोष मुक्त करार दिया गया. उनके ऊपर लगे आरोप के पक्ष में एक पोस्टर तख्ती की बरामदगी

को बतौर सबूत पेश किया गया था. इस पोस्टर तख्ती में राम रहीम मामले की सीबीआई जांच की मांग की गई थी.

सुदेश अतीत के पन्नों को पलटते हुए बताती हैं, "जेल से बाहर आने के बाद जब मैं रणजीत के पिता से मिली तो वह बहुत भावुक होकर कर मिले. उनका कहना था कि बेटा आप हमारी खातिर जेल गए. मैंने उन्हें कहा कि आप ऐसा बिलकुल मत सोचो क्योंकि यह हमारे संगठन का कर्तव्य था. उसी समय पीड़ित साध्वी ने भी मुझे कहा कि दीदी अगर आप नहीं डरे तो मैं भी बिल्कुल नहीं डरूंगी. सीबीआई जांच के लिए आएगी तो मैं बेखौफ होकर अपने बयान दर्ज कराऊंगी. असल में जन संघर्ष मंच ने लोगों के बीच पसरे डेरे के खौफ को तोड़ा था."

जन संघर्षों और कानूनी लड़ाइयों के चलते ही 2003 में दोनों हत्याओं के मामले सीबीआई को सौंपे गए. साध्वियों से बलात्कार के मामले पर कोर्ट ने स्वत: संज्ञान लिया था.

रणजीत सिंह के गांव के ही तर्कशील सोसाइटी हरियाणा के नेता व तर्कशील पथ पत्रिका के संपादक मास्टर बलवंत सिंह रणजीत सिंह कत्ल मामले में मुख्य गवाहों में से एक थे. उनकी गवाही दूसरे दोनों मामलों में भी काम आई. साध्वी द्वारा लिखी गुमनाम चिट्ठी बलवंत सिंह को भी रजिस्टर्ड पोस्ट से मिली थी. मेरे साथ बातचीत करते हुए बलवंत सिंह बताते हैं कि रणजीत के परिवार के साथ मेरे अच्छे रिश्ते थे. रणजीत के पिता सात बार हमारे गांव के सरपंच रहे. वह एक रसूखदार परिवार है. रणजीत जवानी में ही डेरे का अनुयाई बन गया था. गांव के जमींदार परिवारों के बहुत से नौजवान शराब और दूसरे नशों के आदी होकर अपनी जमीन जायदाद गंवा चुके थे. रणजीत के पिता को इसी बात की तसल्ली थी कि उसका बेटा डेरे में जाने के कारण शराब या दूसरा नशा नहीं करता था. इसलिए उन्होंने रणजीत को डेरा जाने से नहीं रोका. जब रणजीत के घर दो लड़कियों के बाद लड़का हुआ तो उसकी श्रद्धा डेरे के प्रति और बढ़ गई. वह डेरे के बड़े-बड़े सत्संग करवाता था. वह अपने परिवार समेत डेरे में रहने लगा था और उसकी बहन भी डेरे में साध्वी बन गई थी.

मास्टर बलवंत बताते हैं, "मुझे रणजीत के कत्ल के बाद पता चला था कि वह डेरा छोड़ कर गांव आ गया था. जब गुमनाम चिट्ठी मुझे मेरे स्कूल में रजिस्टर्ड डाक के जरिए मिली तो स्कूल के अन्य साथी अध्यापकों ने फोटो स्टेट करवा ली और इस प्रकार यह आग की तरह फैलती गई और स्थानीय डेरा श्रद्धालुओं तक भी पहुंच गई।"

ज्ञात रहे कि उस समय यह गुमनाम चिट्ठी देश के प्रधानमंत्री, पंजाब और हरियाणा हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, सभी जिलों के एसपी, मीडिया संस्थानों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के पास भी पहुंची थी. तर्कशील सोसाइटी हरियाणा के मास्टर बलवंत के अलावा यह चिट्ठी उस समय सोसाइटी के राज्य अध्यक्ष राजाराम हंडियाया को भी प्राप्त हुई थी. राजाराम की भी डेरा मामले में गवाही हुई थी और उन्हें भी डेरा समर्थकों के हमले का शिकार होना पड़ा था .

बलवंत मामले को तफसील में समझाते हुए कहते हैं, "हम दोनों तर्कशील नेताओं ने अपनी सोसाइटी की मीटिंग में वह चिट्ठीयां रखीं और अन्य जन संगठनों से विचार कर मामले की तफ्तीश करने की योजना बनाई. गुमनाम चिट्ठी बांटे जाने के बारे में पूछताछ करते-करते डेरे के श्रद्धालु कभी दस, कभी बीस, कभी पचास की संख्या में मुझे धमकाने के लिए आने लगे. उन्हें शक था कि चिट्ठी मैंने ही रणजीत के साथ मिल कर लिखवाई और बंटवाई है. मैं उन्हें समझाता रहा कि चिट्ठी मुझे डाक से मिली है और मुझे मिलने से पहले ही दैनिक अखबार अमर उजाला और पंजाब केसरी भी इस चिट्ठी के आधार पर बिना किसी डेरे का नाम लिए खबर छाप चुके थे. डेरे वाले उस समय तो संतुष्ट होकर चले जाते लेकिन कुछ दिनों बाद फिर आ जाते. एक बार मैं अपनी तर्कशील सोसाइटी का मानसिक रोगों का कैंप लगा रहा था. वहां पर डेरे से जुड़े दो व्यक्ति आए. एक व्यक्ति जो अपने पजामे के साथ पिस्तौल लटकाए हुआ था मुझसे पूछने लगा क्या तुम्हें चिट्ठी रणजीत ने दी है? जब मैंने उससे कहा कि मैं कितनी बार तुम लोगों को जवाब दे चुका हूं कि मुझे चिट्ठी डाक से मिली है तो वह गुस्से से बोला या तो यह चिट्ठी तुमने लिखी है या रणजीत ने तुमसे लिखवाई है. रणजीत को तो हम मारेंगे ही, छोड़ेंगे तुम को भी नहीं. तभी मैंने भी तैश में आकर जोर से बोला तुम अभी चला लो गोली. मेरे जोर से बोलने पर कैंप में आए लोग एकदम मेरे पास इकठ्ठा हो गए तो वे वहां से चले गए. मुझे बाद में पहचान हुई कि ये दोनों सबदिल और जसबीर थे (जिन्हें अभी राम रहीम के साथ सजा हुई है). उस दिन से मैं सतर्क रहने लगा. कुछ दिनों बाद रणजीत का कत्ल हो गया.''

शुरू में रणजीत के कत्ल के बाद उनके पिता ने एफआईआर में शक के आधार पर अपने गांव के ही राजनीतिक

शेष पृष्ठ 18 पर

समाजिक सच

आस्था और अंधता

मदन कोथुनियां

सत्य किसी के जलाने से मिट नहीं जाता। सच को अपने प्रचार के लिए लीपापोती की जरूरत नहीं पड़ती। सत्य कभी खतरे में नहीं आता। सत्य को साबित करने के लिए आप को हिंसा का सहारा लेने की ज़रूरत नहीं होती। सत्य कभी संगठित बना कर हिंसा के सहारे किसी पर थोपा नहीं जाता।

धर्म के प्रति हद से ज्यादा संवेदनशीलता भी व्यक्ति को इंसानियत के प्रति संवेदनहीन बना देती है। धार्मिक अंधता का शिकार व्यक्ति अक्सर यह महसूस करता है कि मेरे धर्म या धर्मगुरू पर की गई छोटी-मोटी टिप्पणी से मेरा धर्म खतरे में आ जाएगा। ऐसा व्यक्ति खुद को धर्मरक्षक समझ कर अपने धर्म को बचाने के लिए इंसानियत का ही दुश्मन बन जाता है। देश और दुनिया में धर्म के नाम पर इंसानों को मारने काटने की घटनाएं रोज देखने व सुनने को मिलती हैं।

अगर आप धार्मिक कट्टरता और नफ़रत के शिकार हो कर ऐसी बर्बरता का समर्थन करने को उतारू हैं तो समझ लीजिए कि आप मानवता के दुश्मन बन चुके हैं।

मानवता की कितनी तबाही आस्था के नाम पर हुई है, इसके सही आंकड़े प्रस्तुत करना लगभग असंभव है और मनुष्य द्वारा मनुष्यता का नाश करवाने में इस आस्था ने जो भूमिका निभाई है, उस की गाथा अनंत है।

आस्था का मनोरोग ऐसा भयावह है कि हम गर्व का अनुभव करते हुए नीच से नीच कर्म कर सकते हैं, क्रूरतम बन सकते हैं और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। आस्था के निर्माण के लिए किसी चीज की आवश्यकता नहीं है, बस, जिस तरह प्रतिरक्षा तंत्र कमजोर होते ही शरीर रोग की चपेट में आ जाता है उसी तरह बुद्धि की पकड़ ज़रा सी ढीली पड़ते ही आस्था अपनी जड़ें जमा लेती हैं।

एक बार आस्था का संक्रमण हो जाए तो उस का वायरस एच आई वी के वायरस से भी तेजी से फैलता है और बुद्धि को चूस कर उस के ऊपर जहालत की घिनौनी फंगस उगा देता है और अंत में बुद्धि को पूरी तरह से लकवा मार जाता है और आदमी की नसनस में आस्था का जहर फैल जाता है।

आस्था के रोग का संक्रमण कई तरीकों से हो सकता है। अधिकांश मामलों में बच्चों के पालनपोषण के दौरान ही इस का वायरस उन के दिमाग में घुसा दिया जाता है। व्यस्क होने पर हम इस संक्रमण को खत्म करने के बजाय और बढ़ाने में लग जाते हैं। फिर आस्था से संचालित एक ऐसा रोबोट तैयार होता है जिस के हाथ पांव तो अपनी मर्जी से चलते हैं लेकिन बुद्धि को यही आस्था संचालित करती हैं।

> आस्था के नाम पर मानव समाज ने इतिहास से लेकर कर अब तक कई बर्बरताएं देखी हैं, धर्म और आस्था के नाम पर कई युद्ध हुए हैं, कितने ही लोग मारे काटे गए हैं। यह सब होते रहने व देखते रहने के बावजूद आज भी लोग इस मामले में अंधे बने हुए हैं।

आस्था के नाम पर हिंसा हमेशा से होती आई है। एक कबीला अपनी आस्थाओं की रक्षा के लिए दूसरे कबीले से भिड़ जाता था, आज भी कई कबीले ऐसे हैं जो अपने पूर्वजों द्वारा दूसरे कबीलों के लोगों के काटे हुए सिर अपनी बैठक में शान से सजाते हैं, लेकिन संगठित और सुनियोजित रूप से निरपराध लोगों का निर्मम कत्लेआम 'क्रूसेड' के नाम पर 6वी व 7वीं शताब्दी में चालू हुआ और इस में भाग ले कर मासूम पुरुषों बच्चों और महिलाओं को निर्दयता से मारने, जिंदा जला देने वाले अपने को 'गौड' का महान सेवक मानते थे।

'जिहाद' को मानने वाले भी पीछे नहीं रहे और उन्होंने भी तलवार की धार से खून की धारा बहाते हुए अपने को 'खुदा' की राहपर चलने वाला बंदा घोषित कर दिया। 15वीं से 18वीं शताब्दी के बीच में पूरे यूरोप और एशिया के कुछ भागों में डायन और जादूगरनी बता कर हजारों महिलाओं को जिंदा जला दिया गया। अंगभग कर दिए गए या पेड़ों से बांध कर तड़प-तड़प कर मरने के लिए छोड़ दिया गया।

इतिहास की कोई भी किताब उठा लीजिए, उस के पन्नों में आप को आस्था के नाम पर बहाया हुआ खून रिसता दिखेगा और मासूमों की चीखों की आवाज़ सुनाई देगी। इस

का यह मतलब नहीं कि आज यह सब पुराने इतिहास की ही बातें हैं। आस्थाओं के नाम पर भारतीय उपमहाद्वीप में 2 देश बनाए गए और हत्या, बलात्कार, क्रूरता का जो खेल आस्थावानों ने खेला उस का इतिहास में दूसरा उदाहरण मिलना मुश्किल है। आजाद देश बन जाने के बावजूद इन आस्थावानों का खूनी खेल आज भी जारी है।

आज भी दुनिया में ऐसी जगहें हैं जहां पति की बात ना मानने पर महिला की नाक काट दी जाती है, पढ़ाई करने की जिद करने वाली किशोरी को गोली मार दी जाती है, बारिश में भीग कर नाचने पर 2 लड़कियों को मौत के घाट उतार दिया जाता है, छोटे बच्चे की जान ले ली जाती है और जराजरा से आरोपों में मौत की सजा पाई कुंआरी लड़कियों को फांसी पर चढ़ाने से पहले उन का बलात्कार किया जाता है। बड़े-बड़े धर्मगुरु बाल यौनशौषन करते हैं और आस्था के नाम पर सब माफ कर दिया जाता है।

पूरे विश्व में अपनी संस्कृति का ढोल पीटने वाला हमारा देश लाखों बच्चियों को जन्म ने से पूर्व ही इसलिए मार देता है क्योंकि उस की आस्था है कि लड़के से ही लोक परलोक सुधरता है जो फिर भी पैदा हो जाती हैं उन को आस्था के अनुसार लड़कों से कम खाना दिया जाता है। उन के लिए किसी तरह दहेज जुटाया जाता है और शादी करके (अक्सर कम उम्र में) यौन प्रताड़ना से लेकर हर तरह के शोषण का शिकार बनाया जाता है।

हर साल अनेक महिलाओं को नंगा कर यातनाएं दी जाती हैं और निर्दयता से मार दिया जाता है क्योंकि आस्था यह कहती है कि वे डायन है, जिस देश का हर 5वां व्यक्ति भूखा है, उसी देश के मंदिरों की आय करोड़ों से कम नहीं है क्योंकि आस्था का सवाल है।

जिस देश में एक पति अपनी पत्नी को प्रसवपीड़ा होने पर अपनी पीठ पर लादकर 40 किलोमीटर लंबा ऊबड़खाबड़ जंगली रास्ता पार कर के अस्पताल पहुंचाता है, फिर भी उस का होने वाला बच्चा मर जाता है, उसी देश के धर्मगुरु और बाबा आम लोगों को आस्था के नाम पर बेवकूफ बना कर वातानुकूलित कारों और हैलिकौप्टरों में घूमते हैं।

यह आस्था का ही भयानक रूप है कि एक इंसान दूसरे इंसान के छूने से अपवित्र हो जाता है, जातिविशेष की महिलाओं द्वारा बिछुए पहनने पर उन के पैरों की उंगलियों को कुचलने के लिए तैयार हो जाता है और और जातिविशेष के लोगों द्वारा बरात निकालने पर खूनखराबे पर उतारू हो जाता है। यही आस्था अलग जाति या धर्म में विवाह अथवा एक ही गोत्र में शादी करने पर उलटा लटका कर जान से मार देती हैं।

आस्था के कारण किए गए कुकर्मों को लिखने के लिए समुद्रों की स्याही कम पड़ेगी और धरती का कागज छोटा रहेगा। यहां उन का वर्णन करना असंभव है। बस, यही कहा जा सकता है कि वैज्ञानिक सोच ही मनुष्य को आस्था की अंधता से बचा सकती है।

पृष्ठ 16 का शेष

प्रतिद्वंद्वियों के नाम लिखवाए थे पर रामचंद्र छत्रपति के कत्ल के बाद ही परिवार का शक डेरे की तरफ गया. जब उन्होंने पुलिस के पास दुबारा जाकर राम रहीम के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाने का प्रयास किया तो पुलिस ने कहा कि अब एफआईआर बदली नहीं जा सकती आप कोई और पक्का सबूत या गवाह लेकर आओ. फिर मैंने सामने आकर गवाही दी. डेरा मुखिया को कठघरे में खड़ा करने में मेरी गवाही बहुत काम आई. जांच के समय जहां-जहां मेरी गवाही की जरूरत पड़ी मैं पीछे नहीं हटा. गवाही देने के समय भी मुझे लगातार धमकियां दी गईं, मेरा पीछा किया गया और पैसे का लालच भी दिया गया. लेकिन मैंने अपने जमीर की आवाज सुनी और सच का साथ दिया."

रणजीत सिंह हत्या मामले में राम रहीम को सजा सुनाए जाने के बाद बलवंत सिंह महसूस करते हैं, "यह रणजीत के परिवार की 19 साल की कड़ी तपस्या और खतरों से जूझने का फल है कि खुद को भगवान घोषित करने वाले, दूर तक राजनीतिक पहुंच वाले गुरमीत राम रहीम को कड़ी सजा मिल पाई है. इससे संदेश जाएगा कि कानून से ऊपर कोई व्यक्ति नहीं. मैं कामना करता हूं कि हमारी अदालतों में न्याय पाने के लिए इतना लंबा समय नहीं लगेगा. इस मौके पर मैं बहादुर साध्वियों, रामचंद्र छत्रपति के बेटे अंशुल छत्रपति और उसके परिवार की हिम्मत और संघर्ष को भी याद करता हूं. और मैं यह कहना नहीं भूलता कि जन संघर्ष मंच हरियाणा जैसा संगठन अगर जमीन पर संघर्ष न करता तो शायद यह इंसाफ न मिल पाता ।"

99154 11894

ईश्वर की अवधारणा आदमी की बचकानी कल्पना का अलौकिकीकरण है। ...फ्रायड

क्रांतिकारी विजय कुमार सिन्हा

शिव कुमार मिश्र

यह निबंध शिव कुमार मिश्र ने हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ के प्रचार प्रसार और अंतराष्ट्रीय संपर्क प्रभारी विजय कुमार सिन्हा के निधन के बाद जुलाई 1992 में लिखा था। लेकिन यह प्रकाशित नहीं हुआ था। न उस वक्त और न ही उसके बाद -संपादक

हमारे विजय दा (कॉमरेड विजय कुमार सिन्हा) गत 16 जुलाई 1992 को नहीं रहे, वे कुछ समय से सिंकदराबाद (आंध्र प्रदेश) में रह रहे थे। शायद इसीलिए उत्तर प्रदेश ने उनके निधन का समाचार भी नहीं सुना। ज्यादा दुख की बात यह है कि समय के चक्र ने हमारे आंखों पर पट्टी चढ़ा दी है। अब हम राजनीतिज्ञों और ढोंगी महात्माओं द्वारा फैलाए गए मकड़जाल में उलझ कर रह गए हैं। अब हमें विजय दा जैसे महान क्रांतिकारियों का स्मरण करने तक की फुर्सत नहीं है। अब शहीदों की चिताओं पर उनके गीत नहीं गाए जाते। कभी-कभी गिद्धों के झुंड नाचते भले ही दिखाई पड़ जाते हैं।

17 जनवरी 1909 को जन्मे विजय दा उत्तर प्रदेश में कानपुर की धरती के पुत्र थे। कभी वे राजनीतिक आकाश में पुच्छल तारे की तरह चमके थे। उन दिनों क्रांतिकारी अनगिनत थे। लेकिन ऐसे परिवार बहुत कम थे जो क्रांति की आहुति बने थे। विजय दा सोने चांदी के चम्मच मुंह में दबाए पैदा हुए होते तो आज उनकी विरोदावालियों से आकाश गूंज उठा होता, लेकिन वे साधारण से परिवार में पैदा हुए थे। उसमें एक मां थी दो बच्चे थे और एक बच्ची थी। उस मां ने किसी तरह उनका पालन पोषण किया था।

मुझे साल 1929 की एक घटना याद आती है। विजय दा को याद करता हूं तो उनकी मां शरद कुमारी सिन्हां की मूर्ति मेरे सामने खड़ी हो जाती है। लाहौर षडयंत्र केस के क्रांतिकारियों को भूख हड़ताल करते दो महीने हो चुके थे, अमर शहीद जितेंद्र नाथ दास की शहादत के कुछ दिन पहले की बात है। मां को घेरे दस पंद्रह लड़के उनके कमरे में बैठे हुए थे। अखबार पढ़ा जा रहा था। वह भूख हड़तालियों पर हो रहे अत्याचारों की खबरों से भरा पड़ा था। उसे सुनते सुनते मेरी आखों से आंसू निकलने लगे। मां ने कहा 'अरे तू रोता है! क्रांतिकारी कैसे बनेगा? देखता नहीं मैं दो शेरों की मां हूँ। मेरे दोनों शेर भूख हड़ताल पर हैं। लेकिन मेरी आंखों में आंसू नहीं है।' हम सब लड़के मां का मुंह देखते रह गए।

वे सचमुच दो शेरों की मां थी। उनके बड़े बेटे राजकुमार (राजू दा) काकोरी केस में दस साल की सजा काट रहे थे। उन्होंने भी लाहौर के क्रांतिकारियों के समर्थन में भूख हड़ताल कर रखी थी। छोटे बेटे विजय दा लाहौर षड्यंत्र केस में अभियुक्त थे ही और लाहौर जेल में भूख हड़ताल पर थे।

वे दो शेरों की मां ही नहीं थी, वे खुद भी शेरनी थी, वे खुद क्रांतिकारी थी। उन्होंने अनेक क्रांतिकारियों के लिए शरण की व्यवस्था की थी। उन्होंने काशीराम और हलधर वाजपेई को पुलिस के चक्कर में फंसने से बचाया था। भगत सिंह की फांसी की सजा रद्द कराने के लिए उन्होंने उनके पिता के साथ पूरे पंजाब का दौरा किया था। 'भगत सिंह को फांसी हो गई'! इन शब्दों को सुनते ही वे सड़क पर ही बेहोश होकर गिर पड़ी। वे सिर्फ राजू दा और विजय दा की मां नहीं थीं। वे तमाम क्रांतिकारियों की मां थी। वे शेरनी थीं। फिर भी मां थीं। मां थीं, फिर भी शेरनी थीं। कितनी थीं ऐसी माताएं और कितने थे ऐसी मां के विजय दा जेसे बेटे।

याद आती है उनके बड़े भाई राजू दा की, काकोरी कार्रवाई में उन्होंने दस साल की सजा काटी। फिर दूसरे दुनिया युद्ध काल में पाच साल देवली और फतेहगढ़ जैसी विकराल जेलों में बंद रहे। उनकी क्रांतिकारी ऊर्जा अंत तक कम नहीं हुई। प्रखर आलोचक थे। मुझे जब मिलते तो कहते: शिवकुमार, अपनी पार्टी से कहो देश की क्रांतिकारी परंपराओं से अपने को अलग करके कोई भी पार्टी क्रांति नहीं कर सकती।'

विजय दा की पत्नी श्रीराज्यम ने शांति निकेतन की

पढ़ाई छोड़कर साल 1942 में आंध्र के गांवों में क्रांति की अलख जगाई थी। उनका एकमात्र पुत्र था अजय सिन्हा, वह देश में मजदूर किसान राज्य कायम करने की आकांक्षा से प्रेरित होकर नक्सलवादी आंदोलन में कूद पड़ा। उनके भांजे पीसी मित्र कानपुर और कटक के क्रांतिकारियों में रहे और बाद में एम. एन. राय के विचारों के सुप्रसिद्ध अनुयायी बने। विजय दा की पुत्रवधू शांता सिन्हां ने आंध्र के नक्सलवादी आंदोलन पर थीसिस लिखकर दिल्ली विश्वविद्यालिय से डॉक्टरेट की। वे अभी आंध्र प्रदेश की मजदूर स्त्रियों और उनके बच्चों के कल्याण कार्यों में लगी हैं। विजय दा की दो पोतियां अभी छोटी है। वे भी छात्र आंदोलनों में सक्रिय है।

कितने ऐसे परिवार हैं जो भारत की राजनीति में इस तरह कूदे हैं? विजय दा को श्रद्धांजलि देते हुए हम इस परिवार को नमन क्यों न करें? दुख इस बात का है कि इतने महान व्यक्तित्व की मृत्यु पर हमारे राज्य की सरकार की ओर से कोई औपचारिक संवेदना संदेश भी प्रसारित नहीं हुआ।

क्रांति केंद्र कानपुर

विजय दा जब क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय हुए थे तब असहयोग आंदोलन की वापसी से निराशा सी छाई हुई थी। काकोरी के क्रांतिकारियों रामप्रसाद विस्मिल, अशफाकउल्ला खान, राजेंद्र लाहिड़ी और ठाकुर रौशन सिंह की फांसी और अन्य को काले पानी की सजा ने देश के युवकों को प्रेरित किया था। लेकिन इस केस में हुई गिरफ्तारियों के बाद उत्तर भारत के क्रांतिकारी आंदोलन का केंद्र बिखर गया था। उन्हीं दिनों विजय दा और उनके साथियों ने जिमनास्टिक ग्रुपों आदि की स्थापना करके क्रांति का प्रचार शुरू किया। कुछ ही दिनों में यह दल इतना सशक्त हो गया कि उसने वीरश्रेष्ठ चंद्रशेखर आजाद की सुरक्षा का पूरा प्रबंध करके उन्हें झांसी से कानपुर बुला लिया। इसके बाद कानपुर से ही सारे देश के क्रांतिकारी आंदोलनों का संचालन होने लगा।

विजय दा के इस प्रयास का ही परिणाम था कि कानपुर को सारे उत्तर भारत में क्रांति का मुख्य केंद्र होने का गौरव मिला। इस दल ने योगेश चटर्जी और शचीन्द्र नाथ सान्याल को जेल से छुड़ाने, सारे भारत के क्रांतिकारियों को एक सूत्र में पिरोने और बम कारखाने चलाने के साथ-साथ मजदूरों के बीच भी काम शुरू किया। कांग्रेस में भी उसने अपने प्रभाव का विस्तार किया। लाला लाजपत राय के हत्यारे सांडर्स के सफाए ने सारे देश को जागरूक किया। फिरोज शाह कोटला की मीटिंग में क्रांति का केंद्र पुनर्गठित हो गया। भगत सिंह और वटुकेश्वर दत्त द्वारा केंद्रीय असेंबली में बम विस्फोट किया गया। इस कार्रवाई ने बहरों के कान खोल दिए।

शिव कुमार मिश्र (1916-2007) 'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक संघ' के क्रांतिकारी थे, संघ के विघटन के बाद वे भारत की कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हुए। पार्टी विभाजन के बाद वे भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की केंद्रीय समिति के सदस्य बने और फिर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी - मार्क्सवादी लेनिनवादी की पहली केंद्रीय समिति के सदस्य रहे। उनकी इस राजनीतिक यात्रा का दस्तावेज है उनकी किताब 'काकोरी से नक्सलबाड़ी' जो 'फिलहाल' से प्रकाशित हुई है। -संपादक

इन कार्रवाईयों के बाद लाहौर का प्रसिद्ध मुकदमा चला। कानपुर को यह गौरव भी प्राप्त हुआ कि इस मुकदमे में कानपुर के सबसे ज्यादा युवक अभियुक्त बनाए गए। विजय दा, शिव वर्मा, जयदेव कूपर, डॉक्टर गया प्रसाद, अजय घोष, सुरेंद्र पांडे, बटुकेश्वर दत्त और अमर शहीद महावीर सिंह, ये सब कानपुर के ही छात्र थे।

लक्ष्य बना समाजवाद

विजय दा ने क्रांति के इस केंद्र को गठित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। साथ ही उन्होंने क्रांतिकारी दल द्वारा समाजवाद का लक्ष्य स्वीकार किए जाने में भी प्रमुख भूमिका निभाई। फिरोज शाह कोटला की मीटिंग में दल ने समाजवाद का लक्ष्य स्वीकार किया। उसने अपने नाम हिंदुस्तान प्रजातंत्र संघ में 'समाजवाद' शब्द जोड़ लिया। अब उसका नाम हो गया **'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र संघ।'** भगत सिंह ने जेल, अदालत और फिर फांसी के तख्ते पर खड़े होकर समाजवाद के लक्ष्य को प्रचारित और प्रसारित किया। समाजवाद की इस घोषणा ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा और एक नया बल प्रदान किया। इस युगांतरकारी दौर में भी विजय दा सबसे आगे थे।

लाहौर के मुकदमे में विजय दा को आजीवन कैद की सजा देते हुए जज ने लिखा था कि 'वे ही इस षड़यंत्र' के नेता थे। उन्होंने ही इस अखिल भारतीय पार्टी को सुगठित और एकताबद्ध किया था।'

विजय दा और भारत के अनेक क्रांतिकारी कालेपानी

भेजे गए, वहां भी सरकार के खिलाफ विकट संघर्ष चलता रहा। साल 1933 में कालेपानी की भूख हड़ताल में महीने भर के भीतर ही महांवीर सिंह, मोहन किशोर नामदास और मोहित मोइत्रा ने शहादत प्राप्त की। सरकार को इन क्रांतिकारियों के सामने झुकना पड़ा। उसके बाद कालापानी की जेल एक विश्वविद्यालय बन गई। वहां दुनिया भर की क्रांतियों का विधिवत अध्ययन हुआ और अधिकांश क्रांतिकारी कम्युनिस्ट सिद्धान्तों को मानने लगे।

कालेपानी से वापस आते ही विजय दा फिर क्रांतिकारी विचारों के प्रचार प्रसार में लग गए। ब्रिटिश सरकार ने आपकी प्रसिद्ध पुस्तक 'इन अंडमान्स: द इंडियन वेस्टाइल' जब्त कर ली। युद्धकाल में उन्हें फिर जेल खाने में डाल दिया गया। लगभग पांच साल वे देवली और फतेहगढ़ जैसी जेलों में रखे गए।

जेल से लौटने के बाद भी वे समाजवादी विचारधारा के प्रचार में लगे रहे। उन्होंने सोवियत यूनियन की यात्रा की। वहां से लौटकर उन्होंने 'सोवियत का नया इंसान' पुस्तक लिखी जो सारी दुनिया में प्रसिद्ध हुई। वे लिखते रहे। लिखते रहे... जब तक उनकी शारीरिक क्षमताओं ने जवाब न दे दिया। वेटे अजय सिन्हां की अकाल मौत ने तो मानो उनकी कमर ही तोड़ दी थी।

विजय दा के निधन के लगभग साल भर पहले रामचंद्र रूसिया और मैं उन्हें देखने गए थे। उनका घर क्रांतिकारियों और विद्वत जनों का जमघट बन चुका था। उन दिनों वे रोग शैय्या पर पड़े थे। शारीरिक शक्ति के साथ उनकी स्मृति भी विलीन सी हो चुकी थी। बहुत कम बोल पाते थे। उनकी मां को न रहे कई साल हो चुके थे। फिर भी उन्होंने मुझसे बार-बार कहा: 'शिव कुमार! मेरी मां यहां कभी नहीं आई। एक बार उन्हें ले आओ'। काकोरी के प्रसिद्ध क्रांतिकारी राम दुलारे त्रिवेदी को भी हमसे बिछड़े बरसों बीत गए थे। फिर भी विजय दा इन दिनों उन्हें भी जीवित मानने लगे थे। उन्होंने हमें बार-बार कहा: 'राम दुलारे त्रिवेदी को हमारा प्रणाम कहना ना भूलना'।

जो देश विजय दा जैसे क्रांतिकारियों को भूल जाएगा वह न तो देश की स्वतंत्रता को बचा पाएगा और ना समाजवाद जैसी व्यवस्था ही ला सकेगा। जान पड़ता है कि देश को दूसरे स्वतंत्रता संग्राम में जूझना ही पड़ेगा। इसीलिए जरूरी है कि हम विजय दा जैसे क्रांतिकारी यौद्धाओं और चिंतकों से प्रेरणा लें और देश और दुनिया की नई परिस्थितियों में मुक्ति और अभयुदय का नया मार्ग निकालें।

(पत्रिका 'फिलहाल' से सौजन्य से)

काला जादू के शक में पड़ोसियों ने महिला को मारा पीटा, फिर निर्वस्त्र कर घुमाया

मध्य प्रदेश के आदिवासी बाहुल्य धार जिले में एक बार फिर से एक महिला के साथ बर्बरता की तस्वीर सामने आई है, जिले के मनावर थाने के सिंघाना चौकी अंतर्गत मांडवी गांव में एक महिला को उसके ही पड़ोसियों और गांव वालों ने वस्त्रहीन करके उसके साथ बर्बरता की, जिसका वीडियों भी सामने आया है, निर्वस्त्र महिला लोगों से रहम की भीख मांगती रही लेकिन दरिंदों को दया नहीं आई।

विधवा महिला के साथ महज इसलिए बर्बरता की गई थी कि गांववालों को लगा कि महिला की नजर खराब है और वह काला जादू करती है। अंधविश्वास के चलते आरोपी महिला के घर में घुसे और पहले तो महिला को खूब गालियां दी। उसके बाद बाल पकड़कर उसे घसीटते हुए बाहर आए और लात-घूंसों से उसकी पिटाई की।

इतने से भी मन नहीं भरा तो महिला के बदन के सारे कपड़े उतार दिए और इंसानियत की सारी हदें पार कर दी। आरोपियों को आशंका थी कि महिला जादू टोना जानती है जिसके चलते उनके परिवार की महिला की तबीयत ठीक नहीं हो रही।

इस घटना का एक वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। ये घटना 5 अक्टूबर की है लेकिन पुलिस ने 7 तारीख को शिकायत दर्ज कर 4 लोगों के खिलाफ प्रकरण पंजीबद्ध किया है। मामले में 3 आरोपियों की गिरफतारी भी हो चुकी है।

अनुराग
प्रमोद कुमार प्रवीन

जिसे मानव स्वयं अपनी शक्ति से प्राप्त कर सकता है, उसके लिए प्रार्थना करनी मूर्खता है।

एपिक्यूरस
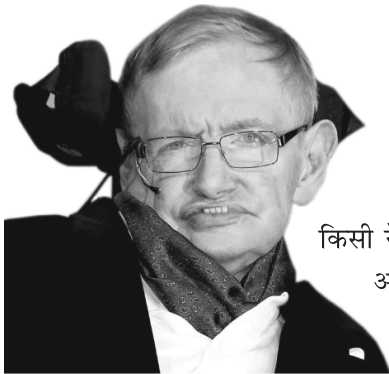
क्यों स्टीफन हाकिंग ने लिखा- न कोई भगवान होता है और न ही कोई किस्मत

भगवान कहीं नहीं है. किसी ने दुनिया नहीं बनाई और कोई हमारी किस्मत नहीं लिखता है. नास्तिक माने जाने वाले खगोलशास्त्री स्टीफन हॉकिंग ने अपनी आखिरी किताब में यही लिखा. हॉकिंग की इस किताब में कई यूनिवर्स के बनने, एलियन इंटेलिजेंस, स्पेस कोलोनाइजेशन और आर्टिफिशयल इंटेलिजेंस जैसे कई जरूरी सवालों के जवाब दिए गए हैं. उन्होंने अपनी आखिरी किताब में भगवान के अस्तित्व को मानने से इनकार कर दिया.

मशहूर भौतिक विज्ञानी और अंतरिक्ष विशेषज्ञ स्टीफन हाकिंग (Stephen Hawking) की जिंदगी का बड़ा हिस्सा व्हीलचेयर पर बीता, तब भी वो दुनिया को अपनी कई बड़ी खोज दे गए. उन्होंने अपनी आखिरी किताब में ये क्यों लिखा कि कोई भगवान नहीं होता और न कोई किस्मत होती है. उनका कहना है कि किसी ने यूनिवर्स नहीं बनाया है और ना ही कोई दुनिया को चला रहा है।

हॉकिंग की किताब में कई बड़े सवालों के जवाब हैं. उनकी किताब में लिखा है, 'सदियों से यह माना जाता रहा है कि मेरे जैसे डिसेबल लोगों पर भगवान का श्राप होता है. लेकिन मेरा मानना है कि मैं कुछ लोगों को निराश करूंगा लेकिन मैं यह सोचना ज्यादा पसंद करूंगा कि हर चीज की व्याख्या दूसरे तरीके से की जा सकती है.'

क्या भगवान है

वैसे हॉकिंग की इस किताब का नाम ही है क्या भगवान है?. हॉकिंग ने लिखा, 'मेरी भविष्यवाणी है कि हम इस सेंचुरी के खत्म होते-होते भगवान को मानना हटेंगे। यह मेरा मानना है कि भगवान नहीं है. किसी ने यूनिवर्स नहीं बनाया. न ही कोई हमारी किस्मत चलाता है.

स्टीफन हॉकिंग ने 80 के दशक से आखिर से साफतौर पर ये कहना शुरू कर दिया कि भगवान का कोई अस्तित्व नहीं होता. वो अपनी बातें तर्क के आधार पर रखते थे. अपनी आखिरी किताब में तो उन्होंने इस पर खुलकर लिखा.

क्या मरने के बाद जीवन है

वह आगे लिखते हैं इससे मुझे इस बात का पूरा अहसास है कि न तो कोई स्वर्ग है और न ही मरने के बाद कोई जीवन. मेरा मानना है कि मरने के बाद जीवन है-यह सोचना सिर्फ आपका खुशनुमा विचार हो सकता है. इसके लिए कोई भरोसेमंद साक्ष्य नहीं है. हॉकिंग की मौत के बाद उनके एस्टेट ने प्रोजेक्ट पूरा करके किताब पब्लिश करने का फैसला लिया.

दुनियाभर में लोगों के दिलों में जगह बनाई

स्टीफन हॉकिंग ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिन्होंने आधुनिक दुनिया में ईश्वर की सत्ता को नकार दिया. अल्बर्ट आइंस्टीन के बाद स्टीफन हॉकिंग ही एक वैज्ञानिक के तौर पर दुनियाभर में लोगों के दिलों में अपनी जगह बना पाए. 21 वर्ष की उम्र में उन्हें मोटर न्यूरॉन नाम की बीमारी हुई. ऐसा लग रहा था कि वे अपनी पीएचडी नहीं पूरी कर पाएंगे, लेकिन सभी कयासों को गलत साबित कर वह 55 साल तक जिए.

स्टीफन हॉकिंग को हमेशा लगता रहा कि उन्हें जो कुछ मिला वो उनकी विकलांगता के चलते मिला. हालांकि उन्होंने अंतरिक्ष को लेकर कई अहम थ्योरीज दीं और हमारी धारणाओं को तोड़ा.

14 मार्च, 2018 को स्टीफन हॉकिंग का निधन हो गया. वो ब्रिटेन के ऑक्सफोर्ड में 8 जनवरी, 1942 को जन्मे थे. उनके पिता एक चिकित्सा विज्ञानी थे जबकि मां दर्शनशास्त्र की स्नातक. स्टीफन हॉकिंग ने लंदन के पास स्थित संत अलबांस स्कूल में शुरुआती पढ़ाई की. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से भौतिकी में प्रथम श्रेणी की डिग्री हासिल की. उनके शोध की शुरुआत 1962 से हुई. कैंब्रिज यूनिवर्सिटी में एक स्नातक के तौर पर उनका नामांकन हुआ.

80 के दशक से भगवान के अस्तित्व पर सवाल उठाना शुरू किया

80 के दशक के आखिर में उन्होंने भगवान के अस्तित्व

शेष पृष्ठ 24 पर

धार्मिक कुतर्क

पंकज बिष्ट

अफगानिस्तान में 'विजय' हासिल करने वाला तालिबानी नेतृत्व कह रहा है कि स्त्रियां घर में रहें। क्यों? क्योंकि तालिबानों को औरतों का अदब करना नहीं आता।

यह बयान ही कितना भयावह है जो निजी से लेकर सामाजिक तक, कई तरह की विकृतियों की ओर इशारा करता है। आखिर ये 'धर्मवीर' किस समाज में रहे होंगे जहां औरतों के आने की पाबंदी होगी या उनको अपनी जान का खतरा होगा?

क्यां पूछा नहीं जाना चाहिए कि भाईयो, आखिर तुम पैदा कैसे हुए? तुम्हें जन्म क्या औरतों ने नहीं दिया? क्या तुम परिवारों में नहीं रहे?

जो अपनी मांओं को, अपनी बहनों को नहीं जानते?

जो स्त्रियों को संगिनी नहीं बल्कि, तथाकथित नर्क का रास्ता मानते हों, उपयोग की ऐसी वस्तु मानते हों जिसे जब चाहे फेका जा सकता है, जिन्होंने स्त्रियों का स्नेह, उनका प्रेम नहीं पाया और उनकी दया का अनुभव न किया हो, उनसे ज्यादा दुखंतक कौन हो सकता है। आदमी होने की पहली शर्त ही प्रेम, दया और बंधुत्व है। क्या बर्बरता का जन्म इसी बिंदु पर नहीं होता?

तालिबान का शाब्दिक अर्थ है इच्छुक, याचक, ख्वाहिशमंद । इस शब्द के साथ जुड़ा है इल्म यानी शिक्षा। इस तरह तालिबानों इल्म का पूरा अर्थ हुआ शिक्षार्थी या विद्यार्थी। ज्ञान का अर्थ क्या है? शिक्षा क्या होती है? दुनिया को जाने बिना क्या आप काम चला सकते है? क्या भौतिक विज्ञान, दर्शन, समाज विज्ञानों ने जो प्रगति की है, धर्म उसका विकल्प हो सकता है?

तालिबानी पाकिस्तान और अफगानिस्तान के सरहदी इलाकों के मदरसों में पढ़े हैं जो कट्टर देवबंदी संप्रदाय की विचारधारा की शिक्षा देते है। ये शिक्षालय नहीं जिहादी तैयार करने की फैक्ट्रियां हैं। क्या यह बतलाने की जरूरत है कि मानव सभ्यता का विकास उसकी जिज्ञासा की सामर्थ्य से जुड़ा है? विडंबना यह है कि धर्म के चाहने वाले उस मूलभूत मानवीय गुण को ही भुला देना चाहते हैं जिसका नाम जिज्ञासा है। जिसके कारण आदमी और जानवरों से अलग हो पाया है।

हे तालिबान भाईयो, ये जो कैलेश्निकोव लिए आप घूम रहे हैं क्या उसका एक पुर्जा भी बना सकने की आप में सामर्थ्य हैं? क्या उसका उल्लेख किसी धर्मग्रंथ में हैँ? क्या आपको पता है कि आदमी अंतरिक्ष में घूम कर लौट आया है। चाहे तो आप भी जा सकते है, पर ले जाएंगे आपको विज्ञान के यंत्र ही। आकाश में विचरण करने वाले देवदूत या अप्सराएं नहीं। आप पायलटों को क्यों ढूंढ रहे हो, क्यों उन लोगों को रोक रहे हैं जो ज्ञान-विज्ञान में महारथ हासिल किए है। आधुनिक विज्ञान और तकनीकी का एक शब्द धर्म ग्रंथों में नहीं हैं सिवाय कल्पना की उड़ानों के।

स्पष्ट है कि तालिबानों की मंशा आदिकालीन नहीं तो कम से कम मध्यकालीन व्यवस्था बनाना है, (जिसमें वे लोग जो आधुनिक ज्ञान से अनभिज्ञ हैं पर सत्ता में बने रहना चाहते हैं) ताकि बिना चुनौती राज कर सकें। और यह तभी हो सकता है जब धर्म के नाम पर देश की जनता को ज्ञान-विज्ञान से च्युत रखा जाए। जब लोगों में विवेक न पनपने दिया जाए। धर्म की अफीम अफगानी ढलानों में पैदा की जाने वाली अफीम से ज्यादा नशीली, बल्कि जहरीली और बर्बर बनाने वाली जड़ी है।

देखा जाए तो तीसरी दुनियां के देशों में यह परिघटना अचानक नहीं है। इस परिप्रेक्ष्य में अगर अपने देश को ही देखें तो क्या समझ में कुछ आता है।? तीसरी दुनिया का सबसे चमकता सितारा जो लोकतंत्र और संसदीय प्रणाली का उदाहरण माना जाता है, उस देश में भी सत्ता में आने के लिए धर्म ही रास्ता बनता जा रहा है। यहां कत्लेआम वैसा नहीं है पर प्रतीकात्मक रूप से वह आतंक फैलाने के लिए काफी है। निश्चय ही सत्ता का यह संघर्ष आज उन ताकतों के साथ है जो निहित स्वार्थों को धर्म से जोड़ना चाहते है और विगत में शुतुरमुर्ग की तरह सर यानी अकल छिपाए रहते हैं। जो विगत को वर्तमान से बेहतर मानते है और भविष्य को भूत में परिवर्तित करने की भरपूर कोशिश में लगे है। परंपरा और संस्कृति की आड़ लेकर सत्ता पर जमे रहना चाहते हैं या फिर लोगों के दिलों दिमाग पर धर्म और संस्कृति के नष्ट हो जाने, उनकी

पहचान के खत्म हो जाने का हव्वा खड़ा कर कब्जा चाहते हैं। वे यथार्थ का सामना ज्ञान से समृद्ध होकर नहीं बल्कि अज्ञान के विस्तार के माध्यम से करना चाहते है और इसके लिए हिंसा का रास्ता अपनाने से भी नहीं चूकते।

आश्चर्य यह है कि वह इतिहास को बदलना चाहते हैं और वह भी आज के दौर में। हो सकता है कभी ऐसा हुआ होना संभव रहा हो। पिछली बार जब तालिबानों ने बामियान की बुद्ध मूर्तियों को उड़ाया था तब उन्होनें यही सोचा था। बाबरी मस्जिद के ध्वस्त किए जाने को भी लोगों ने उसी संदर्भ में देखा था। पर इतिहास तथावत रहा है। हां, उसमें यह जरूर जुड़ गया है कि किन स्थलों को किन 'वीरों' ने तोड़ा था।

मुश्किल यह है कि धार्मिक लोक अपने विश्वासों और समझ में इतने संकीर्ण हो जाते है कि और कुछ देखना समझना ही नहीं चाहते। वे मान कर चलते है कि अगर हमारा धर्म है तो उसमें गलत कुछ नहीं हो सकता। यानी धर्म दैवीय है, न कि एक मानवीय निर्मिति। और धर्म के प्रति अंधभक्ति ही सबसे बड़ी शर्त है जो धर्मों को जिलाए रखती है। दूसरी बात, भक्ति एक प्रतिद्वंद्वात्मक स्थिति भी है। फलाने धर्म के लोग ऐसा कर रहे है इसलिए हम उनसे कुछ ज्यादा नहीं तो कम भी न करें।

हिंदू रक्षा दल के अध्यक्ष के द्वारा एक प्रदर्शन के दौरान में दिए गए भड़काऊ भाषण के संदर्भ में पिछले माह ही एक स्थानीय अदालत ने टिप्पणी की थी कि "हम तालिबानी राज्य में नहीं हैं।" स्पष्ट है कि अदालत की मंशा यह बतलाने की थी कि एक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक देश हैं जहां लोगों को अपनी बात कहने और प्रदर्शन करने का संवैधानिक अधिकार है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि तालिबान शब्द हमारे देश में फिलहाल एक गाली की तरह हो गया है। 'फिलहाल' इसलिए कि आम नागरिक की समझ कुल मिलाकर शासक वर्गए जिसमें धार्मिक संस्थान भी शामिल हैं, निर्धारित करते हैं, चाहे यह प्रचार से हो या कानून से। और यह कहना मुश्किल है कि यह स्थिति कब बदल जाए। विदेश नीति की अपनी जरूरतें और दबाव होते हैं।

पर मुश्किल कुछ और है। लगता है, जैसे हम यह कहने और सोचने लगे है कि दुनिया के अन्य धर्म हिंसा करते है पर हमारा धर्म इस सब से दूर है। दूसरे धर्म सदा से ही हिंसा का इस्तेमाल अपने धर्म के प्रचार के लिए करते हैं। जबकि सच कुछ और ही है। हालात यह है कि बौद्ध और इसाई धर्म, जो अहिंसा का प्रचार करते है, वह भी हिंसा से नहीं चूकते। इतिहास में जाकर टटोलने की जरूरत नहीं है। हमारे पूर्वी छोर का देश म्यांमार बौद्धधर्मी शासकों की हिंसा का उदाहरण है।

हिंदू धर्म को लें तो वहां कुछ और ही देखने को मिलता है। इस बात को बार-बार दोहराया जाना जरूरी है कि धर्म का समकालीन राजनीतिक सामाजिक उपयोग किस हद तक हानिकारक हो सकता है। अफगानिस्तान ही नहीं बल्कि पूरा पश्चिम एशिया उदाहरण है। दूसरे शब्दों में अफगानिस्तान में जो हो रहा है वह एक चेतावनी की तरह है, जिसे हमें भूलना नहीं है।

चाहें तो इस समाचार पर एक बार विचार कर सकते हैं कि आखिर यह किस ओर इशारा है:

समाचार है:

मथुरा में कुछ लोगों को कथित तौर पर इस बात के लिए आपत्ति करने पर कि एक मुसलमान ने अपने डोसा बनाने के ठेले का नाम श्रीनाथ जी क्यों रख दिया है, कोतवाली पुलिस स्टेशन में एक एफआईआर दायर की गई है।

एफआईआर के मुताबिक शिकायतकर्ता इरफान ने आरोप लगाया है कि कुछ लोग 18 अगस्त को उसके स्टाल पर आए और पूछा कि उसने अपने स्टाल का नाम श्रीनाथ कैसे रखा है? आरोपियों ने उसके बाद बैनर को फाड़ दिया और उसे चेतावनी की कि वह अपना ठेला विकास मार्केट से हटाए।

(इंडियन एक्सप्रेस, 29 अगस्त)

98683 02298

पृष्ठ 22 का शेष

पर सवाल उठाया. लेकिन ये सही है कि हाकिंग की बातों को दुनिया ने कभी नहीं नकारा. उनकी किताबों की बिकने की गारंटी हमेशा रहती थी. उनकी सारी किताबें हमेशा बेस्ट सेलर रहीं. जहां भी वो भाषण देने जाते थे, वहां हमेशा पूरी सीटें पहले से रिजर्व हो जाती थीं. उनकी बातें लोग ध्यान से सुनते थे.

अंतरिक्ष पर हमारी धारणाओं को बदला

हो सकता है कि हाकिंग हमारे समय से महान साइंटिस्ट नहीं रहे हों लेकिन वो महत्वपूर्ण भौतिक विज्ञानी जरूर थे, जिन्होंने अंतरिक्ष के बारे में हमारी बहुत सी धारणाओं को तोड़ा और साइंस के आधार पर नई थ्योरीज बताईं।

स्रोत : NEWS18 Hindi

स्टीफन हांकिंग (Shutterstock)

मनोरोग विशेषज्ञ की कलम से...

लॉकडाउन दौरान बच्चों के स्वास्थ्य पर पड़े बुरे प्रभाव

डॉ. बलवंत सिंह

कोविड-19 के कारण पूरे विश्व में सभी पर कहीं कम तो कहीं ज्यादा प्रभाव जरूर पड़ा है।विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार पूरे विश्व में 25 करोड़ से भी ज्यादा लोग इस बीमारी से ग्रस्त हुए हैं।और 50 लाख से ज्यादा की मौत हो चुकी है।परन्तु ज्यादातर विशेषज्ञों का मानना है कि असल गिनती इससे कहीं ज्यादा होगी। सही आर्थिक नुकसान के बारे में बताना बहुत कठिन है। परन्तु फिर भी विशेषज्ञों द्वारा अनुमान लगाए गए हैं,यूनाइटिड नेशनज के एक अनुमान अनुसार केवल टूरिज्म के बन्द होने से ही पिछले दो वर्षों में लगभग 4 ट्रिलियन डॉलर(75 लाख करोड़ रुपये) का पूरे विश्व में नुकसान हुआ है।केवल भारत में लगभग 6 लाख रेस्टोरेंटों में से दो लाख रेस्टोरेंट पूर्णरूप से बन्द हो गए हैं।जो चल रहे हैं उनमें से ज्यादातर घाटे में हैं।अन्य कार्य बंद होने से और रोजगार खत्म होने से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान हुआ है।

इसके इलावा पूरे विश्व का स्वास्थ्य प्रबन्ध भी एक बार अपनी धुरी से चरमराया है।चाहे स्वास्थ्य सबंधी तत्कालिक समस्याएं काफी कम हैं परंतु अभी भी बहुत कठनाइयां हमारे सामने हैं। कोविड के कारण दो प्रकार की मुश्किलें देखने को मिलती हैं। एक नंबर पर और जाहिरा तौर पर ज्यादा महत्वपूर्ण है कोविड होने के कारण होने वाली तत्कालिक बीमारी।इस कारण ज्यादातर लोग बीमार होते हैं और भी कई गम्भीर नतीजे हो सकते हैं,यहां तक मौत भी हो सकती है।दूसरे नंबर पर कोविड के कारण लम्बे समय के पश्चात होने वाले दुष्प्रभाव हैं, जो अक्सर प्रत्यक्ष रूप से ध्यान में नहीं आते।इनमें मुख्यता मानसिक स्वास्थ्य सबंधी समस्याएं है।इस लेख में हम बच्चों को कोविड दौरान लगे लॉकडाउन के कारण मानसिक स्वास्थ्य सबंधी समस्याओं पर चर्चा करेंगे।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) ने कुछ समय पहले कहा है कि कोविड दौरान लॉक-डाउन के कारण विश्व के बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है।विश्व स्वास्थ्य संगठन के इस बयान से ही एक बात स्पष्ट हो जाती है कि यह विषय कितना गम्भीर है और इस बारे ध्यान देने की जरूरत है। आओ हम पहले इसके कारणों पर विचार करें कि बच्चों की मानसिक स्वास्थ्य पर असर के क्या कारण हैं।

स्कूल बंद होना : बच्चों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए स्कूल बहुत जरूरी हैं।अक्सर ही लोग यह समझते हैं कि स्कूल केवल पढ़ाई के लिए ही हैं, परन्तु यह बात बिल्कुल गलत है। चाहे स्कूल का सबसे बड़ा उद्देश्य पढ़ाई कराना ही है परन्तु पढ़ाई के साथ साथ बच्चे के शारीरिक स्वास्थ्य,मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा और जीवन कला के मामलों में भी स्कूल का सबसे बड़ा रोल होता है।इसके इलावा बहुत सारे देशों में और विशेषतौर पर छोटे बच्चों में स्कूल खाने या पौष्टिक भोजन का भी स्रोत हैं।

सामाजिक एकांत (Social Isolation): चाहे लॉक-डाउन कारण सभी को परेशानियों का सामना करना पड़ा हो, परन्तु सामाजिक एकांत का बच्चों पर ज्यादा प्रभाव पड़ा है। बच्चों को बाहर जाने की पाबंदी के कारण अपने साथियों को मिलने जुलने और खेलने के लिए वंचित होना पड़ा, जो कि उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है।

मनोरंजन और खेलों के संसाधनों का बन्द होना : लॉक-डाउन कारण बच्चों के सारे साधन जैसे पार्क,झूले और खेल मैदान,स्विमिंग पूल आदि सभी बन्द हो गए थे।यह सभी संसाधन बच्चों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी हैं।

घर का माहौल खराब होना : लॉक-डाउन कारण सभी परिवारिक सदस्यों का हर समय घर में रहने के कारण स्वभाव चिड़चिड़ा होने के कारण भी बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ा।

परिवार की आर्थिक समस्याएं: यह बात तो बहुत स्पष्ट है कि ज्यादातर परिवारों को कोविड दौरान या इसके बाद वाले समय में आर्थिक समस्याएँ आई।परिवार की आय कम हुई या कई स्थानों पर बन्द भी हुई है। इस कारण ज्यादातर परिवारों में बच्चों की सभी जरूरतों पर असर पड़ा है।

इसके इलावा कई और कारण भी हो सकते हैं जैसे कि परिवार में किसी को कोविड हो जाने के कारण बच्चों में चाहे इस बीमारी के लक्षण न आये हों परन्तु कुछ न कुछ प्रभाव जरूर हो सकता है और उससे भी मानसिक स्वास्थ्य पर असर

पड़ सकता है।घर में किसी बड़े को मानसिक रोग होने के कारण माहौल बिगड़ना स्वभाविक है, यह भी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है।

बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव के लक्षण

स्कूल का डर: वर्ष से ज्यादा घर में रहने से ज्यादातर बच्चे पड़ाई से वंचित रहे हैं। इतना समय पढ़ाई से दूर रहने के कारण उनमें पढ़ने की आदत नहीं रही।हर समय घर में रहने की आदत पढ़ने के कारण उन्हें स्कूल जाना मुश्किल लगता है। कुछ बच्चे तो स्कूल जाने के नाम से ही डरने लग गए हैं। विश्व भर में यह घटनाक्रम देखा गया है। विकासशील देशों में बहुत सारे बच्चे स्कूल खुलने पर भी स्कूल नहीं गए और पढ़ाई छोड़ गए हैं। कुछ मनोविज्ञानियों और अध्यापकों के अध्ययन के बाद बताया गया है कि बहुत सारे बच्चों की लिखाई (Hand Writing) पहले के मुकाबले बहुत खराब हो गई है।इतनी देर न पढ़ने के कारण ज्यादातर बच्चे गणित में पछड़ गए हैं। विश्वभर में बच्चों की पढ़ाई का बहुत नुकसान हुआ है। इन सभी बातों करके बच्चों को दोबारा स्कूल में जाने के लिए या वहां जाकर एडजस्ट करने में दिक्कतें आ रही है।

खाने-पीने सबंधित लक्षण- इस लॉकडाउन के समय दौरान परिवार में लगातार रहने के कारण खाने-पीने के तौर-तरीके आदि भी बदल गए थे। बच्चों के मोटापे में वृद्धि हुई है। उनके खाने-पीने की पसंद नापसंद और बद्तर हुई है। कुछ बच्चे घर के बने खाने को देखकर नाक सिकोड़ते हैं और सिर्फ जंक फूड ही खा रहे हैं या कोल्ड ड्रिंक ज्यादा पी रहे हैं।

इंटरनेट ऑडिक्शन- जो घटनाक्रम सबसे ज्यादा चिंतनीय है, वह बच्चों में बढ़ा हुआ इंटरनेट ऑडिक्शन का प्रचलन है। लॉकडाउन के समय में नशे की लत की तरह ये घर बैठे मनोरंजन और टाईमपास का साधन बन गया है। इसके इलावा स्कूल बंद होने के कारण ऑनलाइन कलासें लगाने के लिए भी मोबाईल एक नया साधन बन गया है,जिसके लिए इंटरनेट का उपयोग जरूरी हो गया था। इन बातों के कारण बच्चों में सोशल मीडिये के उपयोग,अन्य मनोरंजन के लिये उपयोग और पोर्नोग्राफी देखना बहुत बढ़ा है।और काफी बच्चों में ये आदत ऑडिक्शन के स्तर तक पहुंच चुकी है।

नींद सबंधित लक्षण- इसी समय दौरान ज्यादातर नौजवानों और बच्चों में सोने जागने के समय में बड़ा बदलाव देखने में आया है। बहुत सारे बच्चे व नौजवान देर रात तक जागते रहते हैं,और फिर अगले दिन दोपहर तक सोये रहते हैं। इस कारण बहुत बच्चों में रात को नींद लेने में दिक्कतें आने लगी है, और सुबह-सुबह स्कूल जाने में परेशानी महसूस करते हैं।बहुत बच्चे रात को डर कर उठते हैं या डरावने सपनों की शिकायत करते हैं। कुछ बच्चों में रात को बिस्तर में मूत्र करने की आदत भी देखी गई है,जो पहले नहीं थी।

जनूनी बाध्यकारी रोग (Obsessive Compulsive Disorder)- कोविड दौरान सबसे ज्यादा ध्यान इस मनोरोग ने खींचा है,तो वह है जनूनी बाध्यकारी रोग। इसके भी बहुत कारण हैं, एक तो इस कारण है कि इस बीमारी के बचाव के लिए बार-बार ध्यान रखने के लिए कहा जाता था जैसे कि हाथ बार-बार धोना आदि। अपने आसपास की वस्तुओं को बार-बार वायरस से मुक्त करने के लिए बार-बार सफाई करना आदि। इस तरह के कारण बहुत बच्चे ये क्रिया जरूरत से ज्यादा या यहां जरूरत ही न हो तो भी बार-बार करने से जनूनी बाध्यकारी रोग के लक्षणों से ग्रस्त हो जाते हैं। इसके इलावा दिमाग पर पड़े प्रभाव के कारण भी इस रोग का अंदेशा बढ़ जाता है।

उदासी रोग (डिप्रेशन)- इस समय दौरान बड़ों की तरह बच्चों में भी उदासी रोग के लक्षण ज्यादा देखने में आये हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों का मन हर समय उदास रहता है, रोने को दिल करता रहता है, किसी भी कार्य या पढ़ाई में मन नहीं लगता। किसी किसी बच्चे में उदासी इस स्तर तक बढ़ जाती है कि उसे आत्म हत्या के विचार आने लग जाते हैं।

फोबिया (Phobia):- कुछ बच्चे बहुत तरह के डर या त्रासदी से पीड़त हो जाते हैं। वे बन्द जगहों से घबराने लग जाते हैं जैसे कि बन्द स्नानगृह,बन्द कमरा, भीड़ वाली जगह आदि। बन्द स्नानगृह में नहाने से घबराते हैं।

अन्य लक्षण- बहुत बच्चों में बहुत से अन्य लक्षण देखने को मिल रहे हैं जैसे कि अपने आपको जानबूझकर नुकसान पहुंचाना, दूसरों को तंग परेशान करना, घर वालों को गालियां निकालना, लड़ाई करना, घर मे तोड़-फोड़ करना, धमकियां देना,बार-बार रूसना, खाना खाने से इनकार करना, कहना न मानना, अपनी जुम्मेवारी न निभाना,पढ़ाई न करना आदि।

बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के ढंग-तरीकों के बारे में अगले अंक में...

पूर्व प्रिंसिपल,
राजकीय मैडिकल कालेज, पटियाला।
अनुवाद : अजायब जलालआना

मेरे होने का कोई अर्थ है- पी.सी. सोलंकी

(आसाराम को जेल की सलाखों के पीछे डालने वाला वकील)

15 मिनटों में जज ने अपना फैसला सुना दिया था। वे 15 मिनट मेरी जिंदगी के सबसे भारी थे। एक-एक पल जैसे पहाड़ की तरह गुजरा हो। उस पूरे समय मेरी आँखों के सामने पीड़िता और उसके पिता का चेहरा घूमता रहा।

जज साहिब जब फैसला सुना कर उठे तो लोग मुझे बधाइयां देने लगे, मेरा गला भर आया, मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी। मैं वकील हूं मुकदमा लड़ना, कोर्ट में पेश होना मेरा पेशा है। परंतु जिंदगी में आखिर ऐसे कितने मौके आते हैं, जब लगे कि आपके होने का कोई अर्थ है। उन पलों में मुझे लगा कि मेरे होने का कोई अर्थ है। मेरा जीवन सार्थक हो गया।

मेरा जन्म राजस्थान के एक साधारण परिवार में हुआ। पिता बेहद साधारण व्यक्ति और माता अनपढ़ थी। आर्थिक तंगियों के कारण मेरा बचपन माता-पिता के साथ काम में हाथ बंटाने में गुजरा। पढ़ाई के बाद जब मैंने इस पेशे में आने का फैसला लिया तो मेरे अध्यापक ने कहा ठीक है वकालत बहुत जिम्मेवारी वाला पेशा है। इस पेशे की दिखावट समाज में बहुत अच्छी नहीं है। परंतु आपको अपनी दिखावट और अपना रास्ता स्वंय बनाना पड़ेगा।

जब मैंने आसाराम के खिलाफ पीड़िता की तरफ से केस लड़ने का फैसला लिया तो मुझे बहुत सारी धमकियां मिलीं। पैसे का लालच दिया गया, बहुत सारी कोशिशें की गई कि मैं यह मुकदमा लड़ना छोड़ दूं। परंतु हर बार मुझे वह दिन याद आता रहा, जब पीड़ित लड़की के पिता पहली बार मुझे कोर्ट में मिलने आए। वह लड़की भी साथ थी, बेहद शांत और बुद्धिमान। उसकी आंखें बहुत गंभीर थी और चेहरा दर्द से भरा हुआ। पिता बेहद उदास थे परंतु दृढ़ निश्चय के साथ भरे हुए थे, कि यह लड़ाई हर हाल में लड़नी ही है। मैं यह लड़ाई इसलिए लड़ सका क्योंकि पीड़ता और उसका परिवार एक पल भी अपने फैसले से डगमगाया नहीं। लड़की ने बहुत बहादुरी से अदालत में खड़े होकर बयान दर्ज करवाए 94 पेजों में उनका बयान दर्ज है। मुश्किलें बहुत थी परंतु वह पहाड़ की तरह अटल रही। लड़की की मां 19 दिनों तक अदालत में खड़ी रही और 30 पेजों में उनका बयान दर्ज किया गया। पिता रोते रहे और बोलते रहे 56 पेजों में उन्होंने अपना बयान दर्ज करवाया। जब एक बेहद साधारण परिवार इतने ताकतवर आदमी के खिलाफ इस प्रकार अटल रह सकता है, तो मैं कैसे हार मान लेता। 2014 में जिस दिन यह वकालतनामा साईन किया गया उस दिन के बाद यह मुकदमा यही मेरी जिंदगी हो गया।

साढे 4 साल ट्रायल (मुकदमा)चला,इन साढे 4 सालों में हर पेशी पर मैं कोर्ट में हाजिर रहा। 8 बार सुप्रीम कोर्ट में पेशी हुई, 1000 बार से ज्यादा बार ट्रायल कोर्ट में पेश हुआ। जितना मामूली पीड़िता का परिवार था, उतना ही मामूली वकील था। इस तरफ मैं था और दूसरी तरफ थे देश की राजधानी में बैठे कदावर बड़े-बड़े वकील। सबसे पहले आसाराम को जमानत दिलवाने वाले राम जेठमलानी आए, जमानत जाचिका रद्द हो गई, फिर के.टी.एस. तुलसी परंतु आसाराम को कोई राहत न मिली। फिर सुब्रमण्यम स्वामी आए परंतु फैसला हमारे पक्ष में आया। फिर आए राजू रामचंद्रन परंतु जमानत की अर्जी फिर रद्द हो गई। फिर सिद्धार्थ लूथरा,पूर्व अटार्नी जनरल मुकुल रोहतगी, सलमान खुर्शीद, सोली सोराबजी, विकास सिंह, एस.के. जैन सभी ने एड़ी चोटी का जोर लगाया।

तीन बार सुप्रीम कोर्ट में आसाराम की अर्जी खारिज हुई। कुल 6 बार दोषी ने जमानत की कोशिश की और हर बार फैसला हमारे पक्ष में आया। लोग मुझे कहते कि आपको डर नहीं लगता! मैंने कहा जब मेरी 80 साल की माता और 85 साल के पिता को डर नहीं लगता तो मुझे कैसे लगेगा। जब आप सत्य के साथ होते हैं, तब सत्य आपको नैतिक बल से भर देता है। मैं सत्य के साथ खड़ा रहा,मेरा परिवार मेरे साथ। मेरी मां अनपढ़ बस इतना जानती थी कि आसाराम के कुकर्मों के खिलाफ लड़की के लिए न्याय प्राप्त करने के लिए मैं लड़ रहा हूं। मुझे सत्य के लिए लड़ता देख मेरे पिता की बूढ़ी आंखों में गर्व की चमक दिखाई देती। पत्नी खुश थी कि मैं एक लड़की के हक के लिए लड़ रहा हूँ।

(यह लेख पी.सी. सोलंकी के साथ हुई बातचीत के आधार पर है)(25 हजार करोड़ की संपत्ति का मालिक आसाराम जिनको खरीद सकता था, खरीदने की कोशिश कर रहा था। उन दिनों में सारा हिंदुत्व ब्रिगेड इसे अंतरराष्ट्रीय

शेष पृष्ठ 28 पर

मुक्ति से हमारा मतलब है...

मुनेश त्यागी

गरीबी से मुक्ति,
बेरोजगारी से मुक्ति,
स्वर्ग नरक के विचार से मुक्ति,
अशिक्षा और कूशिक्षा से मुक्ति,
ऊंच-नीच के विचार से मुक्ति,
भूत प्रेत के अंधविश्वास से मुक्ति,
पुनर्जन्म के अंधविश्वास से मुक्ति,
छोटे बड़े की मानसिकता से मुक्ति,
देवी देवताओं के झंझट से मुक्ति,
अत्याचार, जुल्मों सितम से मुक्ति,
जीवन मरण के आवागमन से मुक्ति,
भाग्य और किस्मत के विचार से मुक्ति,
शोषण, भ्रष्टाचार, अन्याय, मंहगाई से मुक्ति,
सांसारिक आवागमन के अंधविश्वास से मुक्ति,
अज्ञानता, धर्मांधता और अंधविश्वासों से मुक्ति,
भगवान, गॉड, अल्लाह, खुदा के विचार से मुक्ति,
पिछले जन्म के कर्मों के अन्धविश्वास से मुक्ति,
यज्ञ, हवन, नदी, नालों, तालाब में नहाने से मुक्ति।

किसी भी नागरिक को और मुख्य रूप से भारतीय नागरिक को मुक्ति मिलने से हमारा आशय है गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार, महंगाई ,शोषण, अन्याय, उत्पीड़न, असमानता, धर्मांधता, अंधविश्वास और श्रध्दांधता से मुक्ति। यह मुक्ति पूंजीवादी और सामंती व्यवस्था के गठजोड़ में संभव नहीं है क्योंकि पिछले हजारों साल का अनुभव बता रहा है कि लोगों को मुक्ति के नाम पर ठगा गया है, उन्हें धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से धोखा दिया गया है।

मुक्ति से हमारा अभिप्राय है की सबको मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा मिले, सबको काम मिले, सबको घर मिले, सबको मुफ्त और आधुनिक इलाज मिले और सब को महंगाई और भ्रष्टाचार से छुटकारा मिले, सबको ऊंच-नीच और छोटे बड़े की मानसिकता और सोच से मुक्ति मिले। ऐसी मुक्ति केवल और केवल क्रांति द्वारा लाई गई क्रांतिकारी समाजवादी व्यवस्था में ही मुमकिन है। ऐसा केवल किसानों और मजदूरों की सरकार और सत्ता में ही संभव है।

इस मुक्ति को लाने के लिए किसानों, मजदूरों, नौजवानों, छात्रों, महिलाओं, दलितों, यानी कि इस वर्ग के लोगों को मिलकर शोषण, अन्याय, अभाव, भुखमरी, गरीबी और भ्रष्टाचार पर आधारित इस पूंजीवादी और सामंती व्यवस्था को बदलना पड़ेगा और इसके स्थान पर क्रांति द्वारा समाजवादी व्यवस्था कायम करनी पड़ेगी। शोषण, अन्याय और मुनाफे पर टिकी हुई लुटेरी व्यवस्था इस काम को नहीं कर सकती।

अत: किसानों और मजदूरों की सरकार ही और उनकी सत्ता ही इस काम को भलीभांति कर सकती है। इसलिए हमारा मुख्य काम यह होना चाहिए कि हम हमारे देश में चल रहे किसानों और मजदूरों के क्रांतिकारी कार्यक्रम में विश्वास जाहिर करें और उसमें भागीदारी करें और क्रांति के अभियान को आगे बढ़ाएं। जब तक क्रांतिकारी समाजवादी समाज की स्थापना नहीं हो जाती तब तक इस संघर्ष को जारी रखें।

इसके अलावा मुक्ति का और कोई मार्ग नहीं है। धर्म पर आधारित होकर या पूंजीवादी और सामंती व्यवस्था पर यकीन और विश्वास करके मुक्ति को नहीं पाया जा सकता। मुक्ति केवल समाजवादी क्रांतिकारी व्यवस्था में ही मिल सकती है। इसलिए हमारे समाज को आज सबसे ज्यादा क्रांतिकारी अभियान को मजबूत और सफल बनाने की जरूरत है।

पृष्ठ 27 का शेष

साजिश के तहत सनातन संस्कृति के ऊपर हमला बता रहा था। पीड़िता के पहले मददगार बने ए.सी.पी. लांबा और दूसरे मददगार बने पी.सी. सोलंकी। आसाराम के भक्तों बनाम गुंडों द्वारा अनेक गवाहों के ऊपर हमले करके उन्हें मौत के घाट उतार देने के बावजूद पी.सी. सोलंकी हिमालय की तरह डटा रहा।)

अभी वही है निज़ामे कोहना,
अभी तो जुल्मों सितम वही है।
अभी मैं किस तरह मुस्कराऊ
अभी तो रंजो अलम वही है। ...आज़मी

कहानी

आंखे

राजेश वर्मा राजन

दिसंबर का महीना, दिल्ली में जाड़े का मौसम प्रारंभ हो चुका था, या यों कहें कि जाड़े ने अपना रूप दिखाना प्रारंभ कर दिया, पर वैसा भी नहीं कि अभी सहन न किया जा सके। अभी तो दिसंबर का दूसरा सप्ताह ही था, असली जाड़ा तों अंतिम सप्ताह से प्रारंभ होगा।

रात के लगभग बारह बज रहे थे। यमुना ब्रिज से दो किलोमीटर दूर एक रेसिडेंशियल कॉलोनी। मेन रोड से अंदर। स्ट्रीट लाइटें जल रही थी, पर कुहासे के कारण रोशनी थोड़ी धीमी। कॉलोनी के मध्य एक सड़क और दोनों और एपार्टमेंट्स, ऊंची-ऊंची, बारह से पंद्रह मंजिली इमारतें, अभी पूरी तरह विकसित नहीं। पांचवीं मंज़िल से तो कॉलोनी की सड़क और मोड़ को आसानी से देखा जा सकता था। मोड़ के पास ही छह फीट की दीवार से लगा एक लैंप पोस्ट जिसमें लगा एक सोलर बल्ब धीमी-धीमी रोशनी दे रहा था।

रात्रि का सन्नाटा, कोई शोर-गुल नहीं, शायद एपार्टमेंट्स में लोग सो चुके थे। हां, सड़क के कुछ कुत्ते इधर-उधर अवश्य भटक रहे थे, एक-दूसरे पर भौंकते हुए।

गौरी को नींद नहीं आ रही थी। उसे अंदर से गर्मी महसूस हुई और उसका कंठ भी सूखने लगा, पलटकर देखा, राजेन्द्र, उसका पति, गहरी निद्रा में सो रहा था। गौरी उठकर बैठ गई, सोचा, राजेन्द्र को जगाए, पर नहीं, वह कंबल हटाकर बिस्तर से नीचे उतर गई। फर्श पर कालीन बिछा था। उसने अंधेरे में अपनी चप्पल टटोली-बिना आवाज किए। बाहर की हल्की रोशनी में उसे चप्पल दिख गई। गौरी को बिल्कुल अंधेरे में सोना पसंद था। उसे लेकर राजेन्द्र के साथ कई बार उसकी चखचख भी हो जाती थी। राजेन्द्र को हल्की-सी रोशनी में सोना पसंद था।

चप्पल पहनकर गौरी ने हाथ से टटोलकर मोबाइल उठा लिया और उसकी रोशनी में वह ड्राइंग रूम से लगी डाइनिंग टेबल की ओर बढ़ी। स्टील के जग में रखे पानी को गिलास में डालकर वहीं खड़ी हो पी गई। बिना आवाज किए गिलास को वापस टेबल पर रखकर कुर्सी पर बैठ गई। पानी पीने के बाद उसे काफी राहत मिली, मोबाइल हाथ में ही था। उसका ध्यान उस पर गया। ऑन करके देखा-01:30। कुछ मैसेजेज थे-उन्हें ऊपर सरकाती देखती गई। मोबाइल को पुनः बंद कर गौरी उठ खड़ी हुई-वापस सोने के लिए, ड्राइंग रूम की खिड़की का परदा खुला रह गया था। उसकी नजर उस पर पड़ी। गौरी खिड़की की ओर बढ़ी, परदा सरकाने। खिड़की के पास आकर वह खड़ी हो गई, बाहर देखते हुऐ। शीशे पर हल्की-हल्की ओस की बूंदे, पर उतनी गहरी नहीं-बाहर का दृश्य स्पष्ट नजर आ रहा था।

गौरी खिड़की के समीप खड़ी हो गई। वहां से वह कॉलोनी की सड़क को साफ देख पा रही थी और मोड़ पर स्ट्रीट लाइट को भी। आगे कुछ नहीं। अगल-बगल के एपार्टमेंट्स की खिड़कियां बंद थीं। एक-दो घरों में हल्की रोशनी दिख रही थी। बाकी सब में अंधेरा। कोई आवाज़ नहीं। लगभग दो मिनट तक गौरी वहीं खड़ी रही। फिर धीरे से एक तरफ का परदा सरकाकर दूसरी ओर बढ़ी। दूसरे परदे को पकड़कर खींचने ही वाली थी कि एक गाड़ी की रोशनी दिखाई पड़ी, गौरी रुक गई, देखने कि गाड़ी किधर जाती है। कोई बड़ी गाड़ी थी-वैन टाईप। गाड़ी कॉलोनी की सड़क से बढ़ती हुई मोड़ के पास रुक गई। गौरी खड़ी होकर देख रही थी-'कौन हो सकता है?' तभी गाड़ी की बत्ती बुझ गई, गौरी गाड़ी से किसी के निकलने की प्रतीक्षा कर रही थी। पर कोई भी नहीं निकल रहा था। गाड़ी के अंदर की बत्ती बंद थी। पर स्ट्रीट लाइट की धीमी रोशनी में गाड़ी के अंदर कुछ हिलने-डुलने का आभास हो रहा था उसे। गौरी का कलेजा धक्-धक् करने लगा। पर वह कुछ समझ नहीं पा रही थी, सिर्फ आँखे फाड़कर देख रही थी। अचानक उसे गाड़ी के शीशे पर दो हाथों से ताबड़-तोड़ मारे जाने का दृश्य दिखा।

'क्या हो रहा है, गाड़ी के अंदर?' उसका कलेजा जोर से धड़क रहा था। अंदर किसी के छटपटाने का अब स्पष्ट दृश्य उसे दिखने लगा, गौरी अवाक् रह गई-'क्या कोई...?'

गौरी अंधेरे में झटपट चलकर बेडरूम में पहुंची और जोर से राजेन्द्र को जगाने लगी।

'क्या है...क्या है?' राजेन्द्र हड़बड़ाकर उठ बैठा।

'...धीरे...'

'क्या हुआ?'

'इधर आओ, जल्दी।'

राजेन्द्र और गौरी ड्राइंग रूम की ओर बढ़े, राजेन्द्र ने लाइट ऑन करनी चाही, पर गौरी ने उसे रोक दिया। 'बंद करो।' वह गला दबाकर धीमे स्वर में बोली। राजेन्द्र लाइट बंद कर गौरी के पीछे-पीछे ड्राइंग रूम की खिड़की के पास आया। गौरी ने राजेन्द्र की बांह पकड़कर गाड़ी की ओर इशारा किया।

'क्या है?' राजेन्द्र ने पूछा।

'धीरे! देखो न गाड़ी में।'

'क्या है?' राजेन्द्र ने धीरे से फिर पूछा।

'तुम्हें कुछ नहीं दिख रहा।'

उसने आँखे छोटी कर देखा-गाड़ी में कुछ लोग और किसी के छटपटाने की परछाईं।

'चलो यहां से।' राजेन्द्र ने गौरी की बांह पकड़कर खींची।

'नहीं! कोई है उसमें।'

'ओह! चलो न।'

'राज! मुझे डर लग रहा है...कहीं किसी के साथ...?'

'क्या?'

'रे...रे...प...तो नहीं...?'

'चलो यहां से।'

'नहीं रुको। हमें कुछ करना चाहिए।'

तभी गाड़ी का एक दरवाजा खुला और किसी का एक पैर बाहर आया। पर किसी ने अंदर से पैर को खींचकर फिर से दरवाजा बंद कर दिया।

'राज! राज!' गौरी ने उसे कसकर पकड़ लिया।

राजेन्द्र ने उसे बांहों में भरकर खींचना चाहा।

'नहीं राज! वही है! वहीं है!'

गौरी ने बार-बार राजेन्द्र को पुलिस को फोन करने के लिए कहा पर राजेन्द्र उसे बलपूर्वक खींचकर बैडरूम में ले आया और दरवाजा बंद कर दिया।

उसी समय-गौरी के एपार्टमेंट के ऊपर- आठवीं मंजिल पर विवेक बालकनी में अंधेरे में मोबाइल पर किसी से बातें कर रहा था-एकदम धीमे-धीमे स्वर में। उसकी पत्नी विद्या अंदर कमरे में सो रही थी, पैंतालीस वर्षीय विवेक एक बिजनसमैन था। विद्या ने सख्त मना किया था-'रात में कमरे के अंदर बातें न किया करो।'

जब गाड़ी मोड़ पर रुकी तो उसे विवेक ने भी देखा। वहीं सब दृश्य। वह दुबककर एक किनारे हो गया-मोबाइल बंद कर। फिर झटके से कमरे के अंदर गया-हड़बड़ाता हुआ। विद्या की नींद खुल गई।

'क्या हुआ?'

'बाहर!... बाहर!... रुको मैं पुलिस को फोन करता हूँ पहले।'

'हुआ क्या?' विद्या उठकर बैठ गई।

'बाहर... एक वैन में...'

'वैन में क्या...?'

'किसी लड़की के साथ...'

'क्या?' विद्या कूदकर बिस्तर से उतरी। उसने कमरे की खिड़की का परदा हल्का-सा हटाकर देखा।

'हमें तुरंत पुलिस को फोन करना चाहिए।' विवेक ने कहा।

'नो! विवेक नो!'

'क्यों?'

'मैंने कहा न, कुछ होगा नहीं, तुम चक्कर लगाते रह जाओगे।'

'पर...'

विद्या ने उसे खींचकर कमरे का दरवाजा बंद कर दिया।

उस रात कॉलोनी के कई लोगों ने वह दृश्य देखा। पर किसी ने भी पुलिस को फोन नहीं किया। न ही किसी ने किसी को बताया। गौरी को लगा कि सिर्फ वही उस समय जगी हुई थी पर उस समय कई एपार्टमेंट्स की खिड़कियों से कई आंखें झांक रही थीं।

पंद्रह मिनट बाद गाड़ी के पुनः स्टार्ट होने की आवाज़ सुनाई पड़ी। तेज रफ्तार के साथ गाड़ी दूर चली गई। जो-जो आँखे खुली थीं, वे बंद हो गई। अब सचमुच सब लोग सो रहे थे।

प्रातः काल! कॉलोनी से एक किलोमीटर दूर एक युवती की लाश मिली। क्षत-विक्षत। मीडिया वालों की भीड़। पुलिस से तरह-तरह के सवाल। लोग जमा होने लगे। कई संस्थाएं भी। आवाजे उठने लगीं-'क्या यह सब कभी नहीं रुकेगा? दोषियों को सजा कब मिलेगी?'

शाम में एक कैंडल लाइट मार्च निकला उसमें उस कॉलानो के कुछ लोग शामिल हुए। और... उनमें शामिल थीं वे आंखें भी जो कल रात जाग रही थीं।

भागलपुर (बिहार)

बाल-विवाह

बलजीत कौर

पिछले दिनों राष्ट्रीय बालिका दिवस 2021 के मौक़े पर 'बच्चों को बचाओ' संस्था द्वारा पेश की गई रिपोर्ट के अनुसार दुनिया-भर में हर साल तक़रीबन 22,000 लड़कियाँ बाल विवाह के कारण गर्भावस्था और प्रसव के समय पर मर रही हैं। इस रिपोर्ट में कहा गया कि दुनिया-भर में हर रोज़ 60 से अधिक लड़कियाँ बाल विवाह के कारण मरती हैं और इनमें से दक्षिणी एशिया में एक दिन में 6 और हर साल 2,000, पूर्वी एशिया और प्रशांत में हर साल 650 और लातिनी अमरीका और कैरेबियन में 560 लड़कियों की मौतें बाल विवाह के कारण होती हैं। 'बच्चों को बचाओ' संस्था द्वारा पेश रिपोर्ट में कहा गया कि पिछले 25 सालों में दुनिया-भर में बाल विवाहों के आँकड़ों में कमी आई थी, लेकिन कोरोना लॉकडाउन के बाद बाल विवाहों के आँकड़ें फिर बढ़ गए हैं। और 2030 तक एक करोड़ और लड़कियों के विवाह होने की संभावना है, मतलब और लड़कियों के मरने का ख़तरा है।

भारत की बात करें तो यह दक्षिणी एशिया के देशों में आता है, जहाँ दुनिया-भर में बाल विवाह के कारण मौत का शिकार होने वाली लड़कियों की ही संख्या सबसे अधिक है। भारत में आँकड़ों के मुताबिक़ 47 फ़ीसदी लड़कियों का विवाह उनके 18वें जन्मदिन से पहले हो जाता है और इनमें से 7 फ़ीसदी की उम्र 15 साल से भी कम होती है। सबसे अधिक बाल-विवाह उत्तर प्रदेश में होते हैं, इसके बाद राजस्थान, बिहार, मध्य-प्रदेश, झारखंड और पश्चिम बंगाल आते हैं।

विवाह के बाद आम तौर पर समाज में लड़कियों से इकलौती माँग की जाती है, वह है बच्चे (लड़के) पैदा करने की। बाल-विवाह होने के कारण लड़कियाँ शारीरिक और मानसिक रूप में ऐसी हालत के लिए बिल्कुल तैयार नहीं होतीं, लेकिन उन पर भयंकर ज़ुल्म होता है। उनका शारीरिक शोषण होता है। जिसके बारे में उन्हें अंदाज़ा भी नहीं होता और ऐसी घटनाएँ रोज़ उनके कोमल बाल मन को बेरहमी से यातनाएँ देती हैं। उनके सारे सपने कुचल दिए जाते हैं। पढ़ने-लिखने और कुछ नया सीखने का हक़ छीन लिया जाता है। घर की चारदिवारी और पति और उसके परिवार द्वारा लगाई रोकों को झेलना ही उनका काम बन जाता है। मानसिक बीमारियों के अलावा बच्चेदानी के कैंसर जैसी अनेक भयानक बीमारियों की शिकार हो जाती हैं। इस वक़्त उनके गर्भवती हो जाने और ख़ून का दबाव बढ़ने और गुर्दों के फेल होने और बच्चे पैदा करने के कारण ख़ून की कमी, ऑप्रेशन के ज़रिए बच्चा पैदा करने आदि के कारण उम्र-भर के लिए रोगी हो जाती हैं। अनेक मामलों में इस शारीरिक और मानसिक पीड़ा को ना सह सकने के कारण वे ज़िंदा ही नहीं बच पाती। जो बच जाती हैं, वे उम्र-भर अनेक बीमारियों का बोझ लेकर जीने के लिए मजबूर हो जाती हैं।

भारत जैसे देशों में लड़कियों को जन्म से ही बोझ समझा जाता है। ऐसी मानसिकता हमारे देश में बची सामंती सोच के अवशेषों का ही नतीजा ही है और यहाँ लड़कियाँ की परवरिश एक नए और आज़ाद इंसान के तौर पर नहीं की जाती, बल्कि उसका समूचा पालन-पोषण एक अच्छी पत्नी और विनम्र बहू का प्रशिक्षण ही होता है। जहाँ वह सिर्फ़ आज्ञाकार हो, ख़ुद पर होते हर ज़ुल्म को सिर झुका कर झेलती रहे। लगता है जैसे लड़कियाँ केवल विवाह कराने और बच्चे पैदा करने के लिए ही पैदा होती हैं, इसके अलावा उनकी समाज में कोई हैसियत ही नहीं। ऐसी मानसिकता भारत जैसे देशों में पुनर्जागरण आंदोलनों की ग़ैर-मौजूदगी के कारण है।

आज समय की ज़रूरत है कि अवाम को ऐसे पिछड़े विचारों में से निकालने के लिए चेतन और शिक्षित किया जाए। लेकिन ऐसा करे कौन? यदि टीवी-मीडिया और सिनेमा की बात करें, तो यहाँ भी औरत विरोधी मानसिकता का ही बोलबाला है। टीवी में पेश होने वाले धारावाहिक और फ़िल्में भी लड़कियों को सहनशील और अच्छी पत्नी/बहू बनने की ही शिक्षा देते हैं। फिर क्या केंद्र में बैठी भाजपा सरकार ऐसा करेगी जो ख़ुद औरत विरोधी मनुवादी सोच की नुमाइंदगी करती है। जिसके अनुसार औरत मर्द के पैर का जूता है, उसकी जगह घर की चारदिवारी के अंदर है, उसका कर्मक्षेत्र चूल्हा-चौका और काम बच्चे पैदा करना है। क्या ऐसी सरकार औरत को उसका जायज़ सम्मान दे सकती है। क़ानून की बात करें तो बाल-विवाह रोकथाम क़ानून 1929 के अनुसार विवाह के समय लड़के की उम्र कम-से-कम 21 साल और लड़की की उम्र 18 साल (अब 21 साल) होनी ज़रूरी है। यदि ऐसा ना हो तो (शिकायत

शेष पृष्ठ 35 पर

केस रिपोर्ट

घर से पैसे व आभूषण गुम होने का रहस्य सुलझाया

बलवन्त सिंह लेक्चरार

सुरेन्द्र सिंह की शहर में ट्रैक्टर रिपेयर की वर्कशॉप है। सुरेन्द्र एक माहिर मकैनिक है। ट्रैक्टरों के काम में महारत के चलते उसने आर्थिक तौर पर पिछले कुछ सालों में बहुत अधिक तरक्की की है। उससे पहले जब उसका पिता उस वर्कशॉप को चलाता था। उसका काम सामान्य ही रहता था। सुरेन्द्र सिंह बचपन से ही अपने पिता के साथ वर्कशॉप में काम करने लग गया था। युवा होने तक वह एक कुशल कारीगर बन चुका था। ट्रैक्टरों की कारीगरी में निपुणता के कारण उसकी वर्कशापॅ शहर के अन्य मकैनिकों की अपेक्षा बहुत अधिक चलती थी। कारीगरी में निपुणता के कारण लोग दूर दराज से बिगड़े हुए ट्रैक्टर उसकी वर्कशॉप में ले कर आते थे और वह अपनी कारीगरी की कुशलता के चलते उनको नये जैसे बना देता था। ट्रैक्टर के मालिक प्रसन्न हो कर उसे रिपेयरिंग के मुंह मांगे दाम दे दिया करते थे। सुरेन्द्र सिंह तरक्की की मंजिलें तय करता चला गया। उस का रिपेयरिंग का काम बड़ जाने के कारण शहर के अंदर वाली उसकी पुरानी वर्कशॉप छोटी पड़ गई थी। अब उसने शहर से बाहर मुख्य हाईवे के किनारे लगभग 20 मरले का प्लाट खरीदकर उसमें एक बहुत बड़ी वर्कशॉप बना ली थी। उस वर्कशाप में उसमें मकैनिकल तौर पर प्रयोग में आने वाली सभी आधुनिक मशीनें भी लगा ली थीं। इससे उसका मकैनिकल कार्य और अधिक बढ़ गया था। उसने अपनी वर्कशॉप के ऊपर ही अपनी रिहायश के लिए एक विशाल कोठी का निर्माण भी करवा दिया था।

शहर वाली वर्कशॉप उसने किसी को किराये पर चढ़ा दी थी तथा शहर वाले पुराने घर में उसके बुजुर्ग मां-बाप रहने लग गये। नये घर में सुरेन्द्र अपनी पत्नी व बच्चों के साथ रहने लग गया। उसकी पत्नी परमिन्द्र कौर ने ब्यूटी पार्लर का डिपलोमा किया हुआ था। उसके कहने पर सुरेन्द्र ने उसे शहर में ब्यूटी पार्लर की दुकान खुलवा दी थी। धीरे-धीरे परमिन्द्र का ब्यूटी पार्लर भी खूब चल निकला। अब वह ब्यूटी पार्लर के काम में इतनी व्यस्त हो गई कि वह अपने बच्चों की तरफ से लापरवाह होती चली गई। सुरेन्द्र सिंह की बड़ी दो लड़कियां तथा छोटा एक लड़का भी था। बड़ी लड़की रमनदीप शुरू से ही कभी अपने दादा-दादी के पास तथा कभी अपने मां-बाप के साथ रहने के लिए आ जाया करती थी। सुरेन्द्र सिंह के माता-पिता अत्यधिक धार्मिक प्रवृत्ति वाले थे। उसका पिता गुरुद्वारे में होने वाले सभी समागमों में बढ़-चढ़ कर कर भाग लेता था। घरेलू एवं व्यवसायिक कार्यों से पूर्णत: मुक्त हो जाने के कारण उसके पास गुरुद्वारे में सेवा-संभाल करने का पर्याप्त समय रहता था। अत: मोहल्ले वालों ने उसके सेवाभाव को देखते हुए उसे सिंह सभा गुरुद्वारे का प्रधान नियुक्त कर दिया था। गुरुद्वारे की प्रधानगी के साथ-साथ गुरुद्वारे के कोषाध्यक्ष का कार्य भी वही देखता था। धीरे-धीरे जब उसकी उम्र बढ़ती जा रही थी, उसके पास गुरुद्वारे के कार्यों की देखभाल एवं नाम सिमरण के अलावा और कोई काम नहीं था।

परिवार के मुखिया द्वारा धर्म-कर्म में अत्यधिक लीन रहने तथा सुरेन्द्र सिंह व उसकी पत्नी द्वार व्यवसायिक रूप में शिखर पर पहुंचने के बावजूद भी घर में अशान्ति का प्रसार होता चला जा रहा था। सुरेन्द्र सिंह एवं परमिन्द्र कौर ज्यों-ज्यों अपने अपने व्यवसायिक कार्यों में व्यस्त होते चले गये, उन दोनों में मानसिक तौर पर दूरियां बढ़ती चली गईं। धीरे-धीरे उनमें मन मुटाव इतना अधिक बन गया कि दोनों बात-बात पर एक दूसरे के साथ लड़ने-झगड़ने लग जाते। वृद्ध मां-बाप द्वारा घर आ कर उन दोनों को समझाने-बुझाने के बाद वे कुछ दिन तक शांत रहते, मगर कुछ ही दिनों में किसी न किसी बात पर वे फिर से आपस में लढ़ने लग पड़ते।

धीरे-धीरे उन के घर की समस्याओं में बढ़ौतरी होनी होनी शुरू हो गई। शुरू में उनकी अलमारी में से सोने की तीन अंगूठियां गुम हो गईं। बहुत तलाश करने पर भी वे कहीं पर से नहीं मिलीं। फिर थोड़ा-थोड़ा करके उनके घर से पैसे गुम होना शुरू हो गये। इन सब के लिए वे एक-दूसरे पर संदेह करने लग गये तथा कई बार एक-दूसरे पर इल्जाम लगा कर आपस में झगडने लग पड़ते।

सुरेन्द्र सिंह तो केवल गुरुद्वारे को मानता था। अत: वह किसी तांत्रिक अथवा बाबा के पास नहीं जाता था। परंतु परमिन्द्र कौर दिखावे में आधुनिक होने के बावजूद भी पूर्णत:

अंधविश्वासी थी, अतः वह अपने पति से चोरी-चोरी बाबाओं, तांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों की चौकियों पर जाती ही रहती थी। कई बार वह अपने साथ अपनी बड़ी लड़की रमनदीप को भी ले जाया करती थी। आमतौर पर वह रमनदीप को बाहर बैठा कर अन्दर तांत्रिक अथवा मौलवी के पास काफी समय बिता कर बाहर आती थी। साथ ही वह रमनदीप को यह भी ताकीद कर देती थी कि इसके बारे में अपने पिता अथवा अन्य किसी को कुछ भी न बताये।

बाबाओं के पास जाने के पश्चात् उनके घर समस्याओं का समाधान होने के बजाए समस्याएं और अधिक विकट होती चली जा रही थीं। पहले तो उनके घर में रखे पर्स में से 500-700 रुपये ही गुम होते थे परंतु अब एक दिन रमनदीप के दादा-दादी के घर से गुरुद्वारे के अमानत के तौर पर रखे हुए 20000 रूपये गायब हो गये। यह देखकर उनके होश उड़ गये कि शैतानों ने तो 'परमात्मा' के घर के पैसे भी उड़ा दिये। जब वे इस समस्या को लेकर बाबाओं व तांत्रिकों की शरण में गये तो उन्होंने इसे 'जिन्न-प्रेत' का कारनामा बता दिया। उसके बाद तो उनके द्वारा पूरी सावधानी रखने के बावजूद उनके घर से कभी पैसे तो कभी कोई न कोई आभूषण गायब होने लग गये। धीरे-धीरे घर में से पांच सोने की अंगूठियां, सोने के दो कड़े तथा सोने की बालियां भी गुम हो गईं। गुरुद्वारे की सेवा के लिए दसवन्ध के तौर पार निकाल कर रिजर्व में रखा गया 30-40 हजार के लगभग रुपया भी गायब हो गया। कुल मिला कर उनका लाखों का नुकसान हो चुका था।

समस्या का समाधान: उनके किसी परिचित ने उन्हें तर्कशील सोसायटी द्वारा किये जाने वाले जनहित कार्यों के बारे में बता कर उन्हें मेरा पता देकर उन्हें मेरे पास मेरे मनोरोग परमार्श केन्द्र में भेज दिया। प्रथम बार परामर्श केन्द्र में सुरेन्द्र सिंह एवं उस की बूढ़ी माता जी ही मेरे पास आए थे। मैंने उन दोनों को सामने बैठाकर उनसे घर की समस्याओं के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की। दोनों से बातचीत करने के पश्चात् मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि उनकी इस समस्या का समाधान उनके घर में जा कर घर के सभी सदस्यों के साथ वार्तालाप कर के ही निकाला जा सकता है। अतः मैंने उनके साथ उनके घर में जाकर समस्या का समाधान करने का दिन निश्चत कर के उनको बता दिया। निश्चत् किये दिन में मैंने उनके घर में पहुंच कर परिवार के सभी सदस्यों के साथ उनके घर की समस्या के बारे में विस्तार सहित चर्चा की। परिवार के सदस्यों के साथ हुई बातचीत का निरीक्षण-परीक्षण करने के पश्चात् यह बात साफ हो गई कि यह सब कुछ रमनदीप कौर के द्वारा किया जाता रहा है। विचित्र बात यह थी कि यह सब लगभग 7-8 साल से उनके घर में चल रहा था। शुरू में जब उनके घर में से अगूंठियां गुम हुई थीं तब रमनदीप सातवी-आठवीं कक्षा में पढ़ती थी। अब बी.कॉम. फाईनल में पढ़ रही थी। मामला अत्यंत पेचीदा था, अतः रमनदीप के साथ मनोवैज्ञानिक कांऊंसलिंग करके उसके अन्दर से सारे रहस्य से पर्दा उठाना काफी जोखिम भरा कार्य था क्योंकि उसके मां-बाप तथा दादी का कहना था कि 'रमनदीप अत्यन्त जिद्दी एवं उद्दण्ड लड़की है। वह तो अपने पैरों पर पानी ही नहीं पड़ने देती।'

अत्यंत सावधानी बरतते हुए मैंने रमनदीप के साथ मनोवैज्ञानिक ढंग से बातचीत को आरंभ किया। शुरू में तो वह बिल्कुल भी सहयोग नहीं दे रही थी। उल्टा वह अपने मां-बाप के आपसी झगड़े की कहानियां सुनाने लग जाती। अपनी मां के बारे में तो उसने बहुत सी आपत्तिजनक बातें भी खुल कर बताई। परंतु मैं उसको वास्तविक घटनाक्रम पर केंद्रित करते हूए उस पर मानसिक दबाव डालता चला जा रहा था। लम्बी जद्दोजहद के बाद अंत में उसे अपने द्वारा सभी घटनाओं का किया जाना स्वीकार कर लिया।

कारण:

आमतौर पर देखा जाता है कि जो लोग अधांधुंध पैसा कमाने के पीछे लग जाते हैं वे अपने परिवार की तरफ ध्यान देना कम कर देते हैं। इस मामले में भी दोनों पति-पत्नी अपने-अपने बिजनेस को बढ़ाने की लालसा में अपने बच्चों से भावनात्मक तौर पर दूर होते चले जा रहे थे। नये मकान बन जाने के बाद रमनदीप ज्यादातर अपने दादा-दादी के साथ ही रहती थी। अपने मां-बाप के आपस लड़ाई झगड़े के कारण उसके कोमल मन पर अत्यधिक ठेस पहुंचती थी। भावनात्मक तौर पर रमनदीप अत्यन्त संवेदनशील प्रकृति की थी। अपने दादा-दादी से धार्मिक उपदेशात्मक किस्से-कहानियां सुन-सुन कर उसके मन में संवेदनशीलता और अधिक बढ़ती चली गई। उपदेशात्मक कहानियां सुनते रहने के कारण वह किसी लाचार व मजबूर व्यक्ति की सेवा करने के लिए तत्पर रहती थी। जब वह सातवीं, आठवीं कक्षा में पढ़ रही थी तो अपनी कक्षा की कुछ अन्य लड़कियों की देख-देखी वह भी जूडो-कराटे सीखने लग गई थी। जूडो-कराटे सिखाने वाला कोच अपने मृदु-व्यवहार के कारण कुछ ही दिनों में उन लड़कियों में भावनात्मक

तौर पर काफी घुल-मिल गया था।

एक दिन जब वह कोच जब कराटे की कोचिंग के लिए सेंटर में आया तो उसका मुंह उतरा हुआ था। वह आकर चुपचाप बैठ गया, जबकि पहले वह हमेशा कक्षा में आकर बच्चों के साथ हंसी मजाक किया करता था। उसके बदले हुए व्यवहार से बच्चे परेशान हो उठे और उससे इस परेशानी का कारण पूछने लग गये। बच्चों द्वारा काफी देर तक सवाल पूछने पर कोच ने बताया कि उसकी पत्नी एक गंभीर बीमारी से पीड़ित है। उसके ऑप्रेशन पर 50-60 हजार रूपये का खर्चा है। परंतु वह इतनी राशि जुटाने में असमर्थ है। उसने बच्चों से आह्वान किया कि वे मिलकर कुछ पैसे इकट्ठे कर के उसे दे देंगे तो उसकी पत्नी का जीवन सुरक्षित रह सकता है। अगले दिन सभी बच्चों अपने सामर्थ्य के अनुसार अपने अपने घर से पैसे ला कर अपने कोच को दे दिये, परंतु उतने से पैसे उसको पत्नी की बीमारी के इलाज के लिए नाकाफी थ। अत: कोच फिर निराशा की स्थिति में बैठ गया। अपने कोच के मन की पीड़ा के अहसास को समझते हुए रमनदीप का कोमल मन अत्यंत विचलित हो उठा और उसने अपने घर से अलमारी में से अपने मां-बाप को बताए बगैर ही सोने की तीन अंगूठियां निकाल कर अपने कोच 'सर' को उसकी पत्नी की बीमारी के ईलाज के लिए ला कर दे दीं।

बहुत दिनों तक घर वालों ने अलमारी में पड़े हुए आभूषणों को देखा ही नहीं और न ही उनके बारे में घर में किसी के साथ कोई जिक्र ही किया तो रमनदीप के मन पर पश्चाताप की कोई भावना ही न आ सकी। उसको अहसास होने लग गया कि उसके माता-पिता तो अपने लड़ाई-झगड़े में ही उलझे रहते है। इन्हें तो घर का कोई भी ख्याल नहीं है। अत: वह और अधिक उद्दण्ड होती चली गई। अब वह घर से अपनी मां के पर्स में से अथवा अपने पिता की जेब से कभी 100, कभी 200, कभी 500 और कभी इससे भी अधिक रुपये चुराने लग गई। पति-पत्नी दोनों अपने गुम हुए पैसों का आरोप एक दूसरे पर लगा कर आपस में झगड पड़ते थे। दरअसल सुरेन्द्रसिंह ने एक-दो बार अपनी सास को अपनी पत्नी से पैसे मांगते हुए और फिर अपनी पत्नी के द्वारा उसकी मां को चोरी से कुछ रुपये देते हुए देख लिया था। अत: सुरेन्द्र सिंह के मन में अपनी जेब से पैसे गुम हो जाने पर यह संदेह रहता था कि उसकी पत्नी उसकी जेब से पैसे निकाल कर तथा अपने पर्स में भी पैसे मिला कर अपनी मां को दे देती है। इस बात पर दोनों में खूब झगड़ा हो जाता था।

अब रमनदीप कभी अपने मातर-पिता के पास, तो कभी अपने दादा-दादी के पास जल्दी- जल्दी जगह बदल कर रहने लग गई थी। जब अपने मां-बाप के पास से पैसे चुराने का उसका दांव न चलता वह अपने दादा-दादी के घर में से अपना दांव लगा लेती थी। अब कालेज पढ़ाई के लिए जाने के कारण उसकी अनुचित इच्छाएं भी बढ़ती चली जा रही थीं। उसकी आदतें भी बिगड़ती चली जा रही थीं। इसी दौर कॉलेज में एक लड़के दमन के साथ उसकी दोस्ती हो गई। धीरे-धीरे उनकी दोस्ती जिस्मानी प्यार में बदल गई। वे दोनों आमतौर पर कालेज से बाहर एक कैफे में मिला करते थे। कई बार वे आपस में बातें करते कैफे की छत पर जा कर बैठ जाते तथा लम्बे समय तक आपस में प्यार-मोहब्बत की बातें करते रहते। छत पर कमरे में आमतौर वे दोनों अकेले ही होते थे। एक दिन ऐसे ही अकेलेपन में भावनाओं में बह कर वे उत्तेजित हो उठे और उनहोंने मर्यादा की सभी सीमांए लांघ कर आपस में शारीरिक संबंध बना लिए। उसके बाद तो उन्हें जब भी मौका मिलता वे कैफे की छत पर चले जाते। अपनी शारीरिक हवस पूरी कर लेते। दमन की पारिवारिक पृष्ठभूमि काफी कमजोर थी। वह इच्छाएं तो बहुत बड़ी-बड़ी पालता था परंतु उन्हें पूरा करने के लिए उसके पास धन राशि नहीं बचती थी। अत: वह अपनी अधूरी इच्छाओं के बारे में रमनदीप से खुल कर कहने लग गया था। रमनदीप उसके प्यार में पागल होकर अपने घर से पैसे चोरी करके उसे देती थी और वह उस द्वारा दिये हुए पैसों को बेरहमी से उड़ाता चला जा रहा था। ऐसे ही एक दिन उसने रमनदीप के सामने एक बढ़िया क्वालिटी वाला मोबाईल खरीदने की मांग रख दी और साथ ही यह भी कह दिया कि उसके पास इतने रुपये नहीं कि वह मोबाईल खरीद सके। उसके प्यार में पागल हुई रमनदीप ने अपने दादा द्वारा गुरुद्वारे में सेवा के लिए घर में रखे हुए 20000 रूपये चुराकर अपने प्रेमी को दे दिये। अगले दिन दमन ने उसे बताया कि 20000 रूपयों से बात नहीं बन रही, वह मोबाईल तो 40000 रूपये से कम का नहीं आएगा। इस पर कुछ दिनों बार रमनदीप ने अपने घर में रखे हुए आभूषणों में सोने के दो कड़े चुरा कर दमन को थमा दिये। इसी प्रकार उसके प्यार में पागल हुई रमनदीप अपने मां-बाप के घर में से तथा अपने दादा-दादी के घर में पैसे तथा कीमती आभूषण बेरहमी के साथ चुरा कर अपने प्रेमी को देती रही थी। जब दोनों घरों में पैसे व आभूषण लगातार गुम होते

चले जा रहे थे तो रमनदीप के दादा-दादी ने अपने घर में सावधानी रखनी शुरू कर दी तथा उसके मां-बाप ने भी अपने पैसों व शेष बचे आभूषणों को ताले में बन्द कर चाबी को अपने कंट्रोल में रखना शुरू कर दिया। घर वालों द्वारा पूरी सावधानी बरतने के कारण अब रमनदीप का पैसे चुराने का दंव लगना बहुत कम हो गया। जब रमनदीप खुद ही लाचार थी तो ऐसे में वह अपने प्रेमी को कहां से पैसे ला कर दे सकती थी। अतः अब स्वार्थ से भरा हुआ उन दोनों के प्यार का रंग भी उतरना शुरू हो चुका था।

रमनदीप की मां बाबाओं व तांत्रिकों की चौकियों पर जा-जा कर थक चुकी थी। अपने पति एवं सास-ससुर से चोरी ही वह बाबाओं एवं तांत्रिकों के पास हजारों ही रुपये लुटा कर चुपचाप बैठ गई थी। ऐसे में तर्कशीलों द्वारा मनोवैज्ञानिक ढंग के साथ उनके परिवार की समस्या का संपूर्ण समाधान कर दिया गया। रमनदीप ने अंत में मुझ से निवेदन किया कि उसके इन सभी क्रियाकलापों के बारे में किसी को भी न बताया जाए। मेरे विश्वास दिलाने पर उसने वचन दिया कि अब आगे से वह कभी कोई ऐसी कोई गलती नहीं करेगी।

94163 24802

मैं किसान हूँ
आसमान में धान बो रहा हूँ
कुछ लोग कह रहे है
कि पगले! आसमान में धान नहीं जमा करता
मैं कहता हूँ पगले!
अगर जमीन पर भगवान जम सकता है
तो आसमान में धान भी जम सकता है
और अब तो दोनों में से कोई एक होकर रहेगा
या तो जमीन से भगवान उखड़ेगा
या आसमान में धान जमेगा

रमाशंकर यादव विद्रोही

पृष्ठ 31 का शेष

दर्ज होने पर) धारा 18 के अनुसार दोषी को 15 दिन की क़ैद और एक हज़ार रुपए जुर्माने की सज़ा मिलेगी और इसके बाद भी इस विवाह को रद्द नहीं माना जाएगा। इसके अलावा और भी कई क़ानून हैं लेकिन ऐसे ढीले-ढाले क़ानून, सरकार या जनद्रोही मीडिया से हमें उम्मीद नहीं करनी चाहिए। हमारी बच्चियों को इस पंजे से बचाने के लिए हमें ख़ुद ही राह ढूँढ़नी होगी।

हम जंगे-अवामी से कोहराम मचा देंगे

हर दिल में बगावत के शोलों को जला देंगे
हम जंगे अवामी से कोहराम मजा देंगे
कोहराम मचा देंगे, कोहराम मचा देंगे।
हो जायेगी ये दुनिया फिर तेरे 'नसीबों' की
मजदूर किसानों की भूखों की गरीबों की
रौंदे हुए ज़रों को खुर्शीद बना देंगे
खुर्शीद बना देंगे, खुर्शीद बना देंगे।
मजलूम जो उठ बैठे हर जुल्म पे भारी है
ये खेत हमारे हैं मिलें भी हमारी है
हर चीज़ हमारी है हाकिम को बता देंगे,
हाकिम को बता देंगे, हाकिम को बता देंगे।
'किस्मत' के खिलौनों से बहलाया गया हमको,
धोखें से फरेबों से भरमाया गया हमको
ये झूठ का सिंहासन ठोकर से गिरा देंगे
ठोकर से गिरा देंगे, ठोकर से गिरा देंगे।
कुछ सोच कर ही हमने तलवार निकाली है
हालात से तंग आकर बन्दूक संभाली है
अब खूने-सितमगर से धरती को सजा देंगे।
धरती को सजा देंगे, धरती को सजा देंगे।
दिल्ली के खुदावन्दो
दिल्ली के खुदावन्दो
दिल्ली के खुदावन्दो
ऐलान हमारा है
दिल्ली के खुदावन्दो ऐलान हमारा है,
ऐ कातिल बदकारो फरमान हमारा है
तुम दुश्मन उन्मां हो हम तखम उड़ा देंगे,
हम तखम उड़ा देंगे, हम तखम उड़ा देंगे।

हम जंगे अवामी से कोहराम मचा देंगे।
कोहराम मचा देंगे, कोहराम मचा देंगे।

जगमोहन जोशी

मैंने काम की काफी किताबें पढ़ी है, पर मुझे नहीं लगता कि ईश्वर किसी भी काम का उपयोगी हिस्सा है।

वर्जिनिया वुल्फ

महान वैज्ञानिक

चार्ल्स डार्विन

फिलिप केन
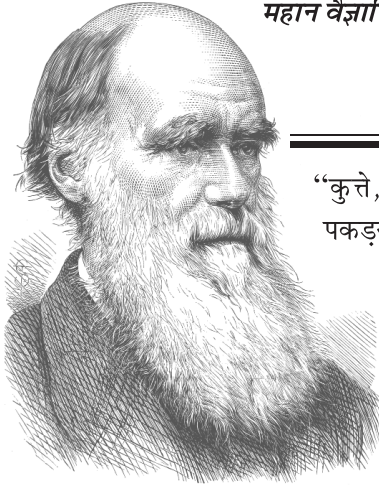
''कुत्ते, शिकार और चूहे पकड़ना- इन तीन चीज़ों के अलावा किसी चीज से कोई वास्ता नहीं! बड़ा होकर अपने लिए, और अपने घरवालों के लिए, बस, एक लानत ही बनकर रह जाएगा तू।'' यह थी भविष्यवाणी जो एक गुस्से में आए और तंग आ चुके एक पिता ने अपने लड़के के बारे में की थी। और यह लड़का भी और कोई नहीं चार्ल्स डार्विन था जो आगे चलकर इतिहास का एक प्रसिद्ध प्रकृतिशास्त्री बना और जिसने 'आरिजिन आफ स्पीशीज बाई मीन्ज आफ नैचुरल सिलेक्शन' नाम की प्रामाणिक पुस्तक लिखी। यह विज्ञान का एक ऐसा सिद्धांत है जिसके विषय में उन दिनों बहुत ही वाद-विवाद उठ खडा हुआ था, किन्तु वनस्पति तथा प्राणि-जगत में 'नई किस्मों की जन्म किस प्रकार होता है', इस विष्य में दिए गए डार्विन के नियम को आज प्राय: माना जा चुका है।

चार्ल्स डार्विन का जन्म इंगलैंड में, श्रुचुजबेरी में 1809 में हुआ था। पिता राबर्ट सम्पन्न चिकित्सक था, और जो कुछ भी सुविधादि पैसे से उपलब्ध हो सकती है वह सब अपने बच्चों के लिए उसने जुटा दी। घर में किसी किस्म की कोई कमी नहीं थी, किन्तु ज्योही चार्ल्स 8 बरस का हुआ बच्चों की मां नहीं रही।

उसका दादा डाक्टर इरज्मस डार्विन भी अपने समय का एक प्रसिद्ध डाक्टर, प्रकृतिदर्शी एवं लेखक था।

इस सुशिक्षित परिवार में चार्ली को प्राय: एक जड़बुद्धि बालक ही समझा जाता था। कभी उसके हेडमास्टर ने उसे यह फतवा दिया भी था कि वह एक निहायत ही सुस्त लड़का है। यह नहीं कि उसमें दिमाग बिलकुल न हो। असल मुश्किल यह थी कि उसकी कल्पना शक्ति इतनी सजीव थी कि स्कूल की मामूली पढ़ाई में उसके लिए कोई स्थान था नहीं। सभी प्रकार के पशुओं और कीड़े मकोड़े के प्राकृतिक अध्ययन में उसे शुरू से ही बड़ी रुचि थी। पिता ने जो भविष्यवाणी उसके सम्बन्ध में की थी, उसके बावजूद वह जैसे तभी से अपने जीवन के ध्येय की पूर्ति में लग चुका था, और विज्ञान के प्रमुख साधन आत्म निरीक्षण को निरन्तर विकसित एवं तीव्र करने में लगा रहता था।

खैर, चार्ली को भी कुछ तो करना ही था। पढ़े-लिखे आदमी का पेशा भी कुछ इज्जतबख्श होना चाहिए। फैसला हुआ कि वह धर्मप्रचारक बनेगा। कैंम्ब्रिज भेज दिया गया। कुन्तु वहां वह धर्मशिक्षा ग्रहण करने की बजाय अपना वक्त ''खटमलों और कीड़ों की खोज में बरबाद करने लगा।'' कीड़े मकोड़ों का उसका यह संग्रहालय वस्तुत एक अदभुत वस्तु थी।

22 साल की उम्र में उसे धर्मप्रचारक की एक डिग्री तो मिल गई, लेकिन मिशनरी बनने की तबीयत कुछ थी नहीं। कैंम्ब्रिज में उसका परिचय वनस्पति शास्त्र के एक युवा अध्यापक जान हेनस्लो से हो गया था। उसने एक परिचय पत्र चार्ली को एक बड़े जहाज एच एम एस बीगल के कप्तान फिटजराय के नाम लिख दिया। इस तरह मिशनरी होकर कही जम जाने की इस नौबत से छूट निकलने का एक मौका मिल गया।

'बीगल' के साथ एक और बड़ी किश्ती भी जुडी हुई थी। और अब दक्षिणी अमरीका की तटरेखा का निरीक्षण करने वह निकल रहा था। क्या चार्ली को यह पसन्द न आएगा कि वह भी इसमें एक पृकृति-वीक्षक के तौर पर निकल चले? हां, खर्चा सब अपना ही उठाना पड़ेगा, और दो साल से पहले शायद यह यात्रा समाप्त न हो। क्या चार्ली साथ हो लेना पसन्द करेगा?

पैसों की जरूरत थी। चार्ली अपने पिता के पास पहुँचा। उसके पिता ने कहा, नहीं, सारी स्कीम ही बेसिर-पैर है। मिन्नते और मिन्नतें, परिवार के सभी सदस्यों ने विचार विमर्श किया और अन्त में अनुमति मिल ही गई, 'बीगल' डेवनपोर्ट की बन्द्रगाह से समुद्र की और चलना शुरू हुआ और उधर चार्ली ने जंगले पर आकर तट की ओर निगाह डाली। उसे तब पता नहीं था यह घर से विदाई उसकी पांच साल रहेगी। किन्तु वह प्रकृति-दर्शन के इतिहास में विश्व के महानतम

अभियान का साक्षी होने चला था।

डार्विन में सूक्ष्म अन्वीक्षण, बुद्धि थी, प्रत्यक्ष को सही-सही अंकित करने की योग्यता थी, और वह वस्तुओं के संग्रह में कभी थकता न था। अदभुत धैर्य और उत्सुकता के साथ वह तरह तरह के पौधे, कीड़े मकौडे, पशु-चट्टानों के नमूने और जीवाश्म इकट्ठे करता गया। ट्रंको पर ट्रंक भरते गए, जहाज के डेक पर खाली जगह सब भरती गई। और बन्द्रगाह पर जहां भी जहाज को रुकना होता, वहां से ये संग्रह घर को रवाना कर दिए जाते।

यात्रा के दौरान में ही कैप्टेन फिटजराय ने उन तीन जंगलियों को एक बिलकुल वीरान द्वीप में उनके अपने ही घर वापस छोड़ दिया जिन्हें पिछली बार वह बतौर एक बन्धक के कैद कर लाया था। उनके इस द्वीप का नाम था - टीर्रा डेलफयूएगो। और डार्विन ने देखा कि सभ्यता के सम्पर्क ने इन जंगलियों को, उनकी प्राकृतिक कठोरता से कुछ मुक्त सा करा कर, इस थोड़े से अरसे में ही कुछ मृद्रु कर दिया है।

कितने ही ऐसे तटों का पर्यवेक्षण करके, जिनके बारे में कि भूगोल-शास्त्रियों को पहले कुछ खब्र नहीं थी, और वनस्पति एवं प्राणिजीवन के कितने ही अद्‌भुत रूपों का अध्ययन करके, 'बीगल' ने आखिर दक्षिण अमरीका के प्रायः 500 मील पश्चिम की और गैलापेगोस द्वीप समूह में लंगर डाल दिए। यहां प्रकृति की अपनी ही एक प्रयोगशाला थी जहां चालर्स डार्विन को अपनी 'वस्तुजात में परिवर्तन का उद्‌भव' नामक स्थापना के लिए पहले पहल कुछ राह सी मिली थी। कितनी ही किस्मों के प्राणी उसे यहां मिले और सब असाधारण और किसी बहुत ही पुराने गुजरे जमाने के : अर्यात जीवित प्राणियों में भी परिवर्तन आते जाना अपरिहेय है। यह था उसकी वैज्ञनिक स्थापना का प्रथम संकेत। उसने लिखा भी ''जमीन पर रेंगने वाले सांपों में, पक्षियों में, पशुओं में हर द्वीप हर दूसरे द्वीप से जैसे भिन्न हो, किन्तु कुछ समानताए है तो अदलती-बदलती नहीं।'' यह उदभव एक ही स्थान पर और एक ही समय में हुआ हो, तो उनके अंगांग में यह इतना अधिक और सूक्ष्म भेद क्यों? उनके जीवाश्मों का भी अध्ययन किया गया जिनकी समानता जीवित प्रणियों के कुछ कम न थी- डार्विन इस निर्णय पर पहुँचा कि कुछ नमूनों की जगह आज उनसे बहुत मिलते जुलते कुछ और नमूने जिन्दा है।

'बीगल' पर विश्वयात्रा के दौरान में प्रकृति का अध्ययन करते हुए जो स्थापनाए डार्विन के मन में उठी उनके समर्थन में साक्षी संग्रह करने में अब उसे 20 साल और लग गए। 1855 में एक प्रकृतिविज्ञानी, एलफ्रेड वैलेस का एक लेख छपा - ''प्राणियों में नई पौध के आगमन को नियन्त्रित करने वाला प्राकृतिक नियम क्या है?'' इस लेख में कितने ही ऐसे विचार प्रकट किए गए थे जो डार्विन की अप्रकाशित स्थापनाओं से मेल खाते थे। डार्विन को लोगों ने कितनी बार परामर्श भी दिया था कि वह अपने सिद्धान्तों का कम से कम एक संक्षिप्त रूप ही प्रकाशित कर दे, किन्तु वह सुस्ती ही करता रहा। 1858 में वैलेस ने डार्विन को एक लेख पाण्डुलिपि भेजी। र्शीषक था ''कुछ विशेषताए नई पौध के आते ही कुछ अनिश्चित अवधि के लिए विदा क्यों हो जाती है, इस प्रवृति के विष्य में कुछ विचार।'' अब डार्विन को अनुभव हुआ कि इस लेख में प्रायः उसका अपना सिदान्त सूत्ररूप में आ चुका था। इसलिए उसने निश्चय कर लिया कि मैं अपने निष्कषों को अब दुनियां के सामने पेश कर ही दूँ। 1 जुलाई 1858 को वैलेस का यह निबन्ध और डार्विन के सिद्धांन्त की रूपरेखा - लन्दन की लिन्नयन सोसायटी में अल्ग-अल्ग पहुँचे, और पढ़े गए।

''नए पौधों का उदभव'' अगले वर्ष प्रकाशित हो गया। इसी में डार्विन का सिद्धांत प्रस्तुत था : भूगर्भ विद्या की साक्षी और पशुओं पौधों का भौगोलिक वितरण। सम्पूर्ण ग्रन्थ एक प्रकार से विकासवाद के समर्थन में एक लम्बी युक्तिमाला है, जैसी कि डार्विन की निजी समझ मे वह आई थी। डार्विन के इस सिद्धान्त के सम्बन्ध में उसके उस प्रथम प्रकाशन के समय से ही वाद-विवाद चला आता है।

1860 में दो लेख डार्विन पर आक्रमण करते हुए 'ब्रिटिश एसोसिएशन फार द एडवान्समेण्ट आफ साइन्स' के सम्मुख पढ़े गए। आक्सफोर्ड के बिशप ने विवाद शुरू करते हुए डार्विन और उसके समर्थक टी. एच. हक्सले पर दुष्टतापूर्वक कीचड़ उछालना आरम्भ किया। पादरी ने अपना प्रसिद्ध प्रश्न प्रस्तुत किया : हक्सले का जो यह कहना है कि उसके पुरखा बन्दर थे, मैं पूछना चाहूँगा कि दादा की ओर से या दादी की ओर से? किन्तु हक्सले ने जवाब दिया अगर मुझे खुद चुनाव करना हो तो मैं एक बन्दर को ही अपना दादा चुनूँगा, आक्सफार्ड के बिशप को नहीं। और वह गड़बड़ हुई की मीटिंग बरखास्त हो गई।

1925 में एक स्कूल टीचर, जान टी. स्कोप्स, पर टेनिसी राज्य में विकासवाद का सिद्धांत पढ़ाने के जुर्म में मुकदमा चला। अमरीका के प्रसिद्ध वकील कलेरेन्स डैरो ने

उसकी ओर से मुकदमा लड़ा। सरकारी वकील भी अपने जमाने का कुछ कम मशहूर वकील नहीं था। विलयम जेनिगज ब्रायन। स्कोप्स कसूरवार ठहरा, किन्तु फैसले को पीछे रद्द कर दिया गया। कहने का मतलब यह कि डार्विन की मृत्यु के 40 साल से ऊपर गुजर जाने पर भी, हमारे इस आधुनिक युग में भी डार्विन का सिद्धांत पर्याप्त विवाद का विष्य रहा है।

डार्विन स्वयं, जिसकी एक पुस्तक ने एक इतने भीषण वाद-विवाद को जन्म दिया, वही डार्विन खुद, एक नम्न और सीधा साधा आदमी था। 'बीगल' पर विश्व यात्रा करके जब वह वापस घर पहुँचा, वह एक मरीज़ था- सिरदर्द और मचली के दौरों का निरन्तर शिकार। 70 साल से ऊपर वह जिन्दा रहा किन्तु समुद्र यात्रा उसने फिर नहीं की।

एम्मा वैजवुड से उसने शादी कर ली और अपने परिवार के साथ कैण्ट में एक गांव में सुख से रहने लग गया। काफी आमदनी उसे हो जाती थी, इसलिए किसी प्रकार की आर्थिक चिन्ता अब उसे नहीं थी। अपने समय का उपयोग वह प्राय: संगृहीत साक्षी की छानबीन में ही करता रहता: जिसका परिणाम निकला उसका प्रसिद्ध 'विकासवाद का सिद्धान्त।' मधुर और लोकप्रिय व्यक्तित्व, किन्तु सदा बीमार, फालतू समय वह अपने बगीचे में फूलों-पौधों की देखभाल करते हुए ही अक्सर देखा जाता। वनस्पति-क्षेत्र में भी उसने कुछ परीक्ष्ण अपने सिद्धांत की परीक्षा के लिए किए।

'आरिजिन आफ स्पीशीज' के अतिरित और ग्रन्थ भी डार्विन ने रचे। उसकी 'कीट पतंगों की करतूतों से वनस्पतियों में फुमदी की पैदाइश' से स्पष्ट प्रमाणित है कि विश्व के इतिहास में इन क्षुद्र जन्तुओं का भी कितना महत्व है। डार्विन के शब्द है : जितना ही अधिक मैं प्रकृति का अध्ययन करता हूँ, उतना हीं और अधिक मैं प्रभावित होता चलता हूँ कि वस्तुओं के अंग संग में क्रम क्रम से स्थिर होती चलती ये विशिष्टताए (प्रकृति के अनुकूल अपने को ढालने के लिए ही प्रस्तुत उनके स्वयमुदभूत उपाय) अन्तर भी थोड़ बहुत उनमें कहीं कहीं दृष्टिगोचर होता है - सुक्ष्मातिसूक्ष्म मानव बुद्धि की ऊँची से ऊँची कल्पनाओं की पहुँच से सदा कितनी परे ही रहती है।

चार्ल्स डार्विन की मृत्यु 1882 में हूई। आज यदि उसे एक बार फिर विश्व यात्रा करनी होती तो, वह उसके लिए गैलापैगोस द्वीपसमूह का चुनाव न करता। 'प्रकृति के स्वयंवर' के अध्ययन के लिए उपयुक्त सामग्री अब वहां नहीं है। वे विशाल कछुए और लंगूर वहां अब नहीं रहे। वे अदभुत पैधे ओर कुतूहली पंछी भी खत्म होते जा रहे है। द्वीपसमूह में आज हवाई जहाजों के अड्डे खडे किए जा चुके है और जेट जहाजों की गडगडाहट पशु पक्षियों की उस ची ची को उठने ही नहीं देती जिसे सुनने का शौक कभी डाव्रिन को था।

लगता है उसे यह भी पता था कि ये 'परिवर्तन' स्वयं वैज्ञानिक स्थापनाओं में भी उसी प्रकार से अवश्यंभावी होते है जैसे कि प्राणियों के जीवन में ''मुझे बिलकुल स्पष्ट है कि आरिजिन का अधिकांश अन्तत: कूडे करकट की टोकरी के लायक ही सिद्ध होगा, किन्तु फिर भी मुझे आशा है कि मेरी इन स्थापनाओं का 'ढांचा' इतनी जल्दी खत्म नहीं हो जाएगा।''

अनुवाद : प्रो लाजपत राय

(स्रोत : पुस्तक 'विश्व के महान वैज्ञानिक')

लघु-कथा

आत्मा

किसी शहर के एक पीर बाबा इस बात के लिये मशहूर थे, कि वे लोगों को आत्माओं से बात कराते हैं। एक बच्चे को जब इसकी ख़बर हुई तो वो भी दरबार में पहुँच गया और उनसे कहा-

मुझे मेरे दादा जी की आत्मा से बात करनी है, उनकी बहुत याद आती है....

पीर बाबा के चेलों ने उससे कहा-

पहले बाबा जी के दरबार में अपनी तरफ से कुछ माल-मत्ता पेश करो, फिर वो तुम्हारे दादा जी की आत्मा से तुम्हे मिलायेंगे....

बच्चे ने कुछ माल पेश किया।

एक चेला उसके बाद उसे एक अँधेरे कमरे में ले गया जहाँ बत्तियाँ नहीं जल रही थीं और चारों ओर लोहबान का धुंआ भरा था...

कुछ देर बाद आवाज़ आई- बेटा कहो, क्या कहना चाहते हो...

चेले ने बच्चे से कहा-तुम्हारे दादा जी की आत्मा प्रकट हो चुकी है, उनसे अब बात कर सकते हो...

बच्चे ने सर खुजाते हुये कहा- जी बस मुझे ये जानना है कि आपको तो मैं घर पर छोड़ कर आया था...

ज़िन्दा होते हुए भी आपकी आत्मा यहां क्या कर रही है...

वेद प्रकाश वर्मा के फेसबुक वाल से

समय के मुख्य स्वर

-राजेन्द्र यादव

पिछले सौ-डेढ़ सौ साल के इतिहास को मनुष्य-जाति की सारी परंपरा से काट देने का श्रेय मुख्य रूप से तीन व्यक्तियों को दिया जाता है-डार्विन, फ्रायड और मार्क्स। हम भगवानों, देवताओं और विराट पुरुषों की ऐसी संतानें हैं, जो दिनों-दिन छोटी बौनी और कमअक्ल होती चली जा रही हैं, हमारे पुरखे महान् मेधा और प्रचंड शक्तियों के स्वामी थे, अतितीय प्रतिभाशाली देवपुरुष थे-इस धार्मिक अंधविश्वास का खंडन करते हुए डॉर्विन ने स्थापित किया कि हर जीव की तरह हमारा भी विकास हुआ है और हमारे पुरखे बंदर या उसके आसपास के कोई जीव थे। ..हमारे भीतर भगवान है, हमारी आत्मा परमात्मा का ही अंश है और अपने अंदर के आत्मसाक्षात्कार द्वारा ही इस ईश्वरीय शक्तियों से जुड़ते हैं, सिद्धियों को प्राप्त करते हैं-इस धारणा का ध्वंस किया फ्रायड ने। उसने कहा कि, हमारे भीतर, अवचेतन में दमित और कुंठित वासनाओं के जहरीले सांप फुफकार रहे हैं और भीतर ईश्वर नहीं, यौन-भावना भरी है-हां, उसके उदात्तीकरण की संभावना भी है।

...सांसारिक सुख-दुख, अमीरी-गरीबी या बाहरी भौतिक परिस्थितयों के लिए कोई विधाता या भाग्य नहीं, हम खुद जिम्मेदार हैं और अपनी परिस्थितियों के साथ अपने प्रारब्ध को भी खुद ही बदल सकते हैं-यह दृष्टि हमें दी मार्क्स ने।

इन तीनों विचारकों ने संपूर्णमान नियति पर पुनर्विचार की वैज्ञानिक संभावना ही नहीं दी बल्कि मनुष्य को सब तरफ से ईश्वरीय और अदृश्य शक्तियों से काटकर अपने और अपनी स्थितियों के प्रति खुद जिम्मेवार बनाने के ये त्रि-आयामी प्रयास ही हमें झटके से आधुनिक युग में ला खड़ा करते हैं। निस्संदेह ये तीनों मनीषी तीन विचार-क्रांतियों के जन्मदाता हैं और जिस तरह इन्होंने हमारे हजारों सालों की सोच को ही नहीं, सारी स्थितियों को बदल डाला, वैसा बड़ी से बड़ी लड़ाइयों, राज्य विद्रोह या शहंशहों की शक्तियां कभी नहीं कर पाईं। विचारक ये तीनों थे, पर साहित्यकार तो इनमें से एक भी नहीं। यही क्यों, कांदीद या कन्फेशन्स जैसी विश्वप्रसिद्ध रचनाओं के बावजूद वाल्तेयर और रूसो साहित्यकार नहीं, राजनीतिक चिंतक थे। ठीक वैसे ही, जैसे बेहद खूबसूरत कविताएं लिखने के बावजूद माओ त्से-तुंग कवि नहीं। हां, अगर विचार मात्र ही साहित्य की बपौती हो, तो सुकरात-प्लेटो से लेकर रजनीश तक सभी साहित्यकार हैं। लेकिन हम जानते हैं कि अत्यंत काव्यात्मक गद्य लिखने वाले चर्चिल और नेहरू तक साहित्यकार नहीं हैं, बल्कि मैं तो इस नतीजे पर पहुंच रहा हूं कि साहित्य कभी कोई दिशा नहीं देता, कभी क्रांति और परिवर्तन नहीं करता -वह तो औरों द्वारा किए गए विचारों और कर्मों से खुद दिशा लेता है-और आगे जाकर अपने आपको जीवित रखता है।

हर समय का अपना एक मुख्य और नियंता स्वर होता है। मध्यकाल का मुख्य स्वर धर्म था और बिना धर्म को समझे न उस समय के साहित्य को समझा जा सकता था, न जीवन को। आज की वह केंद्रीय शक्ति राजनीति है। बिना राजनीतिक चेतना के न आज साहित्य लिखा जा सकता है, न समझा जा सकता है। जिंदगी को निर्धारित और नियंत्रित करने वाली शक्ति आज न नैतिक मूल्यों के हाथ में है, न धार्मिक विश्वासों के- साहित्य के हाथ में तो है ही नहीं। साहित्य को भी अपना आदमी इसी परिवेश से उठाना होगा। जो राजनीति द्वारा निर्धारित होता है। हां, उसे खुद तय करना है कि उसे व्यवस्था की राजनीति के हाथ होना है, या व्यवस्था बदलने को व्याकुल मनुष्य की राजनीति के साथ।

हवा में रहेगी मेरे ख्यालों की बिजली

आज धार्मिक अंध विश्वास और कट्टरपंथ
हमारी प्रगति में बड़े बाधक है
वे हमारे रास्मे के रोड़े साबित हुए है
हमें उनसे हर हालत में
छुटकारा पा लेना चाहिए...

जो चीज आजाद विचारों को बर्दाश्त
नहीं कर सकती
उसे समाप्त कर देना चाहिए
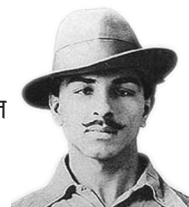
शहीद भगत सिंह

संघर्ष

सलिल सरोज

हारा वही जो लड़ा नहीं,
जीता वही जो डरा नहीं।

मानव विकास की श्रृंखला के हर एक डग पर अगर कोई एक चीज निरन्तर साथ चलती आई है तो वह है – संघर्ष। संघर्ष एक ऐसी अनिवार्यता है जिससे इस संसार का कोई जीव नहीं बच सकता और फिर वही खुश रह सकता है जिसने संघर्ष को सहर्ष स्वीकार कर लिया हो और उसे अपने जीवन में आत्म-सात कर लिया हो। संघर्ष संसार के हर एक कण में इस तरह से विद्यमान है जिस तरह से हवा में बू और पानी में तरलता। संघर्ष कोई अलौकिक अवयव नहीं है जिससे मानव को घबराकर कर जीने की हर आस छोड़ देनी चाहिए या अपने हथियार डाल देने चाहिए। अगर संघर्ष है तो आस-पास ही उसका समाधान भी है। जरूरत है उस निगाह और उस जज़्बे की जो उस समाधान तक आपको पहुंचा सके और आपको उससे ल?ने के लिए उद्वेलित और प्रेरित कर सके –

शौके-दीदार है तो नजर पैदा कर

दुनिया ऐसे अनगिनत उदाहरणों से बेतरतीब है जहाँ मानव की कोशिशों ने संघर्ष करके उन ऊचाइओं को छुआ है और मिसालें पैदा की है जिसे कभी एक दिवास्वप्न मान कर छोड़ दिया गया था या जिस पर प्रयत्न करने वालों को उपहास का पात्र बनाया गया था।

एक आदमी अपनी जिंदगी में हजार तरह के उतार-चढाव से गुजरता है और कई बार उसे अहसास होता है कि उसकी जिंदगी व्यर्थ है और वह गलत कदम उठाने को मजबूर हो जाता है। लेकिन जो व्यक्ति उसका सामना डट कर करता है वह कुंदन की तरह निखर कर सामने आता है और पूरे समाज के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। एक संघर्षरत आदमी को प्रेरित रहने के लिए कई जगहों से सीख लेनी पड़ती है और स्वयं को आत्म-विश्वास से परिपूर्ण रखना पड़ता है। संघर्ष से जूझ रहे व्यक्ति को किताबों या प्रेरणा दायी फिल्मों अथवा सकारात्मक ऊर्जा से लबालब आदमियों से मिलते रहना चाहिए, उनकी सफलता से सीखना चाहिए, अपनी गलतियों का आँकलन करते रहना चाहिए और प्रयास की इष्टम छोर तक पहुंचना चाहिए। जो ऊर्जा नकारात्मक हो, उससे बिलकुल बचना चाहिए, उनसे दूर रहना चाहिए और ऐसे किसी वाद-विवाद में नहीं उलझना चाहिए जो दिनचर्या को खराब करे और मानसिक विसंगति पैदा करे।

उदहारण के तौर पर आप हेलेन केलर की आत्म-कथा पड़ें। जो लेखिका आँखों और कानों से लाचार हो फिर भी पूरी दुनिया में 'साइन लेंगुएज' को प्रतिपादित किया और सफलतम वक्ताओं में अपनी ख्याति करवाती हो, वो प्रेरणा की खान ही है। आप जब भी निराशा के अन्धकार में डूबने लगते हो और आपका संघर्ष आप पर हावी होने लगता हो तो आप 'स्वशेंक रिडेम्पशन' नामक फिल्म को बार बार देखें और सीखे कि जिंदगी जीने की चाह में फिल्म का अभिनेता क्या नहीं कर गुजरता और उस संघर्ष के बाद उसकी जिंदगी कितनी शानदार हो जाती है। या फिर 'इन पुरसुईट ऑफ हैप्पीनेस' नामक फिल्म देखें और आप संघर्ष के हद को तब समझ पाएँगे। कई बार आपको ऐसा लगता है कि आपका संघर्ष सबसे कठिन है लेकिन आप अपने पड़ोसी से पूछिए। तब आप जानेंगे हर व्यक्ति किसी न किसी संघर्ष से गुज़र रहा होता है और और उसी संघर्ष के बीच में एक हंसी-खुशी की जिंदगी तलाश करनी पड़ती है। और कई बार यह भी लगता है कि इस संघर्ष का भागीदार मैं ही क्यों ? तो इसका एक मात्र उत्तर यही है कि आप उस काबिल हैं और आप से अपना बेहतर देने के उम्मीद की जा रही है। अब यह आप पर निर्भर करता है कि आप टूट जाते हैं या फिर कुछ बन जाते हैं।

सभी कार्य परिश्रम से सिद्ध होते हैं न कि सोचते रहने से। जिस प्रकार सोते हुए शेर के मुख में हिरण आदि जानवर स्वयं प्रवेश नहीं करते, अपितु शेर को स्वंय शिकार करना पड़ता है ठीक उसी प्रकार हमें भी वांछित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लगनशील होकर परिश्रम करना चाहिए

कार्यकारी अधिकारी, लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली- 99686 38267

इन्कलाब के लिए उठे कदम मजूर के
इन्कलाब के लिए उठे कदम किसान के
हवायें गा रही है सुर्ख गीत आसमान के

ब्रजमोहन

कदम

अवनीत कौर

मौसी के गांव पहुंचकर खुशी उड़कर मिली। खेतों में बना घर और खुला वातावरण मन को बहुत पसंद आ गया। दूर तक दिखती हरियाली देख सपने उड़ान भरने लगे। पुस्तकों का साथ मन को स्कून देने वाला था। खेत में रहते हुए खेतों के पुत्रों का संघर्ष भविष्य की उम्मीद लगता। मन सबक और प्रेरणा बनने वाले कार्य तलाशता। एक सुहावनी सुबह सुखद अनुभव में सीनियर छात्रा कमल के गुजरे हुए वक्त की गाथा के पेज पलटने लगे। उसकी आवाज़ को कलम ने शब्द दिए। दसवीं में पढ़ते हुए मैं कक्षा की होशियार छात्राओं में से एक थी। स्कूल में पढ़ाई का वातावरण उत्साहित करने वाला था। मन में पढ़ लिखकर कुछ बनने की इच्छा थी। माता सारा दिन घर के कार्यों में लगी रहती,न खाने का चिंता,न पहनने की इच्छा। बस घर को चलाने का सपना लिये संघर्षरत थी। मुझे पढ़ने के लिए प्रेरित करती और कहती बेटी मेरी तरफ देख तूं पढ़ लिखकर अपनी जिंदगी बना। पिता जी सारा दिन खेतों में पसीना बहाते। कम ज़मीन पिता के सपनो को हरा न सकी,उनका धैर्य मुझे रास्ता दिखाता। घर में विधवा बुआ भी हमारे साथ रहती। वो घरेलू कार्यों में ज्यादा व्यस्त नहीं थी।वह मोहल्ले की औरतों के साथ मेलों,अमावस के लिए जाती रहती। दुखों में घिरी बुआ के दृष्टिकोण में अच्छे समय के लिए मन्नतें,टोने बहुत कारगर दिखाई देते। घर परिवार के भले व प्रगति के लिए उसकी नजर डेरों वाले बाबाओं पर ही अटती रहती। बुआ अक्सर घर में यही बातें सुनाती। बाबाओं ने बताया, कि आपके भाई की सख्त मेहनत तो व्यर्थ है, किसी भी काम नहीं आएगी। इसी लिए घर में से परेशानियां दूर नहीं हो रही। आपका घर किसी अदृश्य शक्ति के पहरे के अधीन है। उपाय न किया गया तो घर के सारे सदस्य मौत का शिकार हो जांएगे। सुबह -शाम बुआ की ऐसी बातें सुनकर मेरे मन में डर रहने लगा। रात को नींद न आती। पढ़ाई से मन दूर रहने लगा, अंधेरे से डर लगने लगा। अध्यापक मेरी इस बदल रही मानसिक दशा से हैरान थे। उन्होंने मुझे इलाज करवाने के लिए प्रेरित किया। माता-पिता डॉक्टरों के पास ले जाते परन्तु बुआ बाबाओं की हाजिरी लगवाती। जब डॉक्टरों को मेरी बीमारी समझ न आई तो बुआ का कार्य और आसान हो गया। हर गुरुवार चेलों के दरवाजों पर रुलने लगे। उन्होंने मुंह मांगा खर्च लिया परंतु मेरे मानसिक स्वास्थ्य पर थोड़ा सा सुधार भी नहीं हुआ। एक बाबा ने तो जहां तक कह दिया कि यह लड़की अभिशाप है। घर बचाना है तो इसके हाथ पीले करके घर से विदा कर दो, नहीं तो सारी उम्र पछताना पड़ेगा। बुआ ने इलाज बीच में ही छोड़कर मेरी शादी के लिए कोशिशें शुरू कर दी। मुझे अपना भविष्य अंधकार में जाते हुए लगा। मां मेरे साथ थीं,परंतु बुआ और पापा जी करके वह चुप रहती। ऐसा देख सुनकर मैं अपनी सदबुद्धि खो चुकी थी, चारपाई पर बैठ गई, परिवार आश्चर्यचकित हुआ। आखिर किसी अच्छे,भले इंसान ने मेरे पिताजी को बरगाड़ी में मानसिक मशविरा केंद्र की बात बताई। मैं पहली बार अपने माता-पिता के साथ केंद्र में पहुंची। अपने जैसे पीड़ित लोगों को देखकर मन को थोड़ा सुकून मिला। मशविरा केंद्र का अच्छा माहौल देखकर मुझे सब ठीक होने की आस बंधी। उन्होंने पहले मेरे माता-पिता से पूरी जानकारी ली। फिर मुझे अपने बेटी समझ कर व्यवहार कर केंद्र के संचालक चन्नण अंकल ने मेरी उदासी का वास्तविक कारण जाना। मन के डर वाले और सहम वाले कारण तलाश किए। छोटी और भावपूर्ण बातों से प्रेरित किया, समझाया। मन के आकाश पर पड़ी डर की परतें हटनी शुरू हो गई। आखिर सम्मोहन क्रिया से मस्तिष्क में आशाएं जगी,टूट रहे सपनों को पंख दिए। पढ़ने, सीखने और समझने के लिए तर्कशील पुस्तकें मेरे हाथों में पकड़ाई। माता-पिता को कुछ जरूरी सुझाव दिए।वापिस घर आते ही मेरी उदासी दूर होने लगी। दिनों में ही मन के काफी हालात अच्छे होने लगे। मैंने मेहनत और लगन से मन पढ़ाई में लगा लिया। अगली मुलाकात में बुआ को केंद्र में बुला लिया गया,उसकी सभी शंकाएं दूर की गई। उनके सुझावों के अनुसार मेरे प्रति परिवार का बदला हुआ व्यवहार अब मेरे लिये सुखद एहसास बन गया। इस कदम ने मुझे अंधेरे से रोशनी की तरफ धकेला। परिवार की तरफ से मुझे आगे की शिक्षा के लिए हर सहूलियत/सहयोग मिलने लगा। कुछ ही महीनों में मैं कक्षा में पुन: प्रथम आने लगी। अच्छे अंकों के बल पर अब मैं राजधानी के उत्तम कॉलेज की छात्रा हूँ। उत्साह, अमीदों से भरा मन सुनहरे भविष्य की आस में जिंदगी व्यतीत करनी है। जिंदगी में मेरा अपने आप से वादा है ।अपने हिस्से के जीवन में औरों के काम आने का समय भी रखूंगी। कदम के बाद जगी हुई चेतना मुझे अच्छे भविष्य की दस्तक महसूस हो रही थी।

अनुवाद : अजायब जलालआना

अभिभावकों और अध्यापकों के लिए-

नई सवेर पाठशाला

यदि आपका बच्चा समय पर सोकर नहीं उठता या स्कूल जाने से टालमटोल करता है। बच्चे को दिन में किसी अच्छी बात की आशा नहीं, वह चिंताओं, विभिन्न टकरावों, चीख-चिल्लाहट व जबरदस्ती उस पर थोपे गए कर्तव्यों के बोझ से तंग है। उसे स्कूल में कुछ अच्छा होने की उम्मीद नहीं। याद न किए गए पाठों के परिणाम स्वरूप बुरी भावनाएं, अपने सहपाठियों से मेलजोल में कठिनाई, अध्यापकों व कुछ बच्चों द्वारा उड़ाया गया मजाक। ऐसा रोज-रोज होता है। अपने बच्चे पर तरस खाएं। उस को इन बीमार भावनाओं की दलदल से निकलने में सहारा दें। याद रखें कि उस की ढ़ीठता और बेचैनी, उसके प्रति अनदेखेपन का परिणाम है। यदि आप इस बात पर ध्यान नहीं देते तो कोई भी सख्ती बच्चे का व्यक्तित्व संवारने में आपकी मदद नहीं कर सकती। हर नई डांट-फटकार मामले को और बदतर करेगी। बच्चे में नया जानने की इच्छा नहीं रहेगी, उस का जीवन बदतर हो जाएगा।

- यूरी अज़ारोव

मेरा पक्का निश्चय है कि ऐसे गुणों के बिना कोई मनुष्य असली अध्यापक नहीं बन सकता। इनमें से सबसे बुनियादी गुण है- बच्चे के मानसिक संसार में दाखिल हो सकने की योग्यता। सिर्फ वही मनुष्य, जो यह नहीं भूलता कि वह भी एक समय बच्चा था, असली अध्यापक बन सकता है। अनेक अध्यापकों का यह दुखांत है कि वे यह भूल जाते हैं कि सबसे पहले विद्यार्थी एक जीवित मनुष्य है, जो ज्ञान, रचनात्मकता और मानवीय संबंधों के संसार में प्रवेश पाने के प्रक्रिया में है।

- सुखोम्लीन्स्की

अगर कोई बच्चा जानता हो कि घर में उसे डांट-फटकार, ताने, सवाल मिलेंगे तो वह बेआराम महसूस करता है।

जैसे-जैसे घर नजदीक आता है, उसमें तनाव की भावना बढ़ने लगती है। वह प्रवेश द्वार पर पांव रखता है, उसकी हलचल स्लो मूवी की तरह होती हैं। वह दीवार के साथ लगकर लंबा समय खड़ा रह सकता है, वह धीरे-धीरे जूते उतारता है और शक से अटल सवाल का इंतज़ार करता है- कितने अंक मिले तुझे?

उसके मां-बाप ने पहले ही सोचा होता है कि उसे अच्छे अंक नहीं मिले। वह उनकी आंखों में देखने से झिझकता है, इसलिए दीवार की तरफ एकटक देखता रहता है। पर फिर एक और डरावना सवाल आ जाता है। अभिभावकों की बेरहमी के बहुत तबाहकुन नतीजे निकलते हैं।

क्या वे सचमुच यह धारणा बना चुके हैं कि उनका बच्चा कम अंकों से बिन कुछ भी घर नहीं ला सकता?

अगर बच्चे को इतना दरकिनार किया जाता है तो वह अच्छे अंक कहां से लाएगा?

अगर गूढ़ अज्ञानता और किसी विषय में पारंगत होने के हुनर की कमी ने उसकी इच्छा शक्ति को लकवाग्रस्त बना दिया है, उसकी सोचने की शक्ति को नष्ट कर दिया है तो वह अच्छे अंक नहीं ला सकता।

- यूरी अज़ारोव

बच्चे को कोई ऐसा मनुष्य नहीं पढ़ा सकता जो उसे बेइज्ज़त करता हो।

जेम्स बालडविन

जो कुछ बच्चे के अंदर अच्छा है, उसे उल्लासित करके खूबसूरत बनाया जा सकता है। जब अध्यापक बच्चे को बिना दिलचस्पी के पढ़ा रहा होता है, बच्चे कभी ऐसी पढ़ाई के पाबंद नहीं होते। विद्यालय दुनिया को समझने में बच्चे की मदद करें, न कि दीवार बनकर बनकर बच्चे और दुनिया के बीच में खड़े हों।

-वसीली सुखोम्लीन्स्की

संग्रह- दाता सिंह नमोल
94176-77407
अनुवाद : मुलख पिपली

क्या जुल्मतों को दौर में भी गीत गाये जायेंगे
हां, जुल्मतों के दौर में भी गीत गाये जायेंगे!

बेर्टोल्ट ब्रेष्ट

बच्चों का कोना

पिंजरे में कैद, इज्जतदार लौ

दोस्तो, मेरे पास एक जादुई मोमबत्ती है। मेरी इस मोमबत्ती की लौ बहुत इज्जत वाली है जिसे न छू कर, न फूंक मारकर बुझााने की जरूरत है। उसे तो पिंजरे में बन्द करो, वह अपने आप गुल। नहीं जानी बात? आओ देखें।

सामान: मोमबत्ती, माचिस, तांबे की मोटी तार

कैसे करें: तांबे की तार को हम किसी बेलनाकार वस्तु के चारों ओर लपेट कर स्प्रिंग की तरह बना लें। और बने छल्लों को दूर-दूर कर दें। ताकि मोमबत्ती का दम आक्सीजन की कमी के कारण घुट कर निकल न जाए।

अब मोमबत्ती जलाओ और इस स्प्रिंग नुमा तार को कसी चिमटे या क्लिप की मदद से पकड़ कर लौ के ऊपर रखो और धीरे-धीरे नीचे की तरफ करते जाओ। यह ध्यान रखना कि लौ को तार छूने न पाए, वरना इन दोस्तों को गलतफहमी हो जाएगी। भई इज्जतदार लौ कैद हो जाए और जिन्दा भी रहे यह कैसे हो सकता है? न किसी ने वायु का रास्ता रोका, न किसी ने छुआ, न फूंक मारी। फिर यह क्यों बुझ गई? बताओ तो?

अरे, बहुत सीधी सी बात है। तांबा तो ताप का अच्छा सुचालक है। इसलिए तार का यह जाल बहुत जल्दी इस लौ से मिली गर्मी को अपने अन्दर समा लेता है। और इससे मोमबत्ती की लौ के इर्द-गिर्द गर्मी नहीं बचती कि वह मोम को गैस के रूप में बदल सके। तो फिर वह कैसे जलती रह सकती है? फिर तो बुझेगी ही ना!

अखबार का कारनामा

ऐसी कौन सी चीज है जो हम सब के आस-पास है पर दिखाई नहीं देती? हां, ठीक कहा, हवा। हवा के कौन-कौन से गुण हैं? हवा बहुत शक्तिशाली है क्या? हमारी पृथ्वी में कहां तक फैली है यह हवा? आओ इसकी शक्ति के साथ जोर आजमाइश करें।

सामान: एक अखबर, फुटा या फुटे जैसी लकड़ी की पट्टी, मेज।

कैसे करें: एक मेज पर एक लम्बी व पतली लकड़ी की पट्टी ; फुटाद्ध रखो ताकि उसका एक सिरा मेज से 4-5 इंच बाहर निकला रहे। अब एक साफ-सुंदर अखबार से इसे ढक दो। हां, यह ध्यान रखना कि अखबार कहीं से कटा-फटा न हो। अब बारी-बारी से एक-एक आओ और अपनी ताकत का अनुमान लगाओ। यानि मेज से बाहर निकली पट्टी पर जोर से घूंसा मारो ताकि अखबार उड़ जाए और मेज से नीचे गिर जाए। अरे, तुम क्या अपने आपको ज्यादा पहलवान समझ रहे हो? तुम भी ऐसा नहीं कर सकते। नहीं विश्वास तो करके देख लो।

कारण: हमारी पृथ्वी के चारों ओर दो सौ मील तक हवा फैली है। उसका भार एक इंच लम्बे-चौढ़े स्थान पर 140 पौंड के करीब होता है। यानि आपके के सिर पर ही 600 पौंड वजन है जो महसूस नहीं होता। जब आप हवा का इतना भार सहन कर रहे हो तो अखबार कितना ही हल्का हो, वह क्यों न करे।

मुझे लड़नी है एक छोटी-सी लड़ाई
एक झूठी लड़ाई में मैं इतना थक गया हूँ
कि किसी बड़ी लड़ाई के क़ाबिल नहीं रहा ।
मुझे लड़ना नहीं अब-
किसी छोटे क़द वाले आदमी के इशारे पर-
जो अपना क़द लंबा करने के लिए मुझे युद्ध में झोंक देता है
मुझे लड़ना नहीं -
किसी प्रतीक के लिए
किसी नाम के लिए
किसी बड़े प्रोग्राम के लिए
मुझे लड़नी है एक छोटी-सी लड़ाई
छोटे लोगों के लिए
छोटी बातों के लिए.
मुझे लड़ना है एक मामूली क्लर्क के लिए
जो बिना चार्जशीट मुअत्तिल हो जाता है
जो पेट में अल्सर का दर्द लिए
जेबों में न्याय की अर्ज़ी की प्रतिलिपियाँ भर कर
नौकरशाही के फ़ौलादी दरवाज़े
अपनी कमज़ोर मुठ्ठियों से खटखटाता है ।
मुझे लड़ना है-
जनतंत्र में उग रहे वनतंत्र के ख़िलाफ़
जिसमें एक गैंडानुमा आदमी दनदनाता है
मुझे लड़ना है-
अपनी ही कविताओं के बिंबों के खिलाफ
जिनके अँधेरे में मुझसे-
ज़िंदगी का उजाला छूट जाता है ।

कुमार विकल

बचपन का मनोविज्ञान

शरद कोकास

कुछ बच्चे खेलकूद में अधिक ध्यान देते हैं और कुछ बच्चे पढाई-लिखाई में ? बड़े हमेशा चाहते हैं कि वे खेलकूद में कम और पढाई में अधिक ध्यान दें ? वे बच्चों के दिमाग में भी यही बात भर देना चाहते हैं ? चाहे उन्हें समझ में आये न आये ?

वस्तुत: बच्चों का अवचेतन खाली पेन ड्राइव की तरह होता है जिसकी कैपेसिटी का हमें कोई अंदाज़ा नहीं होता है । अवचेतन तो हम बड़ों का भी पेन ड्राइव की तरह ही होता है लेकिन एक उम्र के बाद हम मान लेते हैं कि अब वह भर गया है । फिर हम अपने दिमाग़ी पेन ड्राइव की फाइल्स के बच्चों के दिमाग़ के पेन ड्राइव में डालना शुरू करते हैं,अच्छी तरह पढ़ाई करो,शरारत मत करो,ठीक से बैठो,ज्यादा दांत मत दिखाओ,जिद मत करो,शिकायत मत करो ।

इतने पर भी हमारा फाइल ट्रांसफर का कार्यक्रम रुकता नहीं है, बच्चा जैसे जैसे बड़ा होता जाता है नई नई फाइलें आने लगती हैं तुम्हे क्लास में फर्स्ट रैंक लाना है, तुम्हे डॉक्टर बनना है, तुम्हे इंजीनियर बनना है। लड़कियों के लिए कुछ एक्स्ट्रा फाइलें होती हैं जैसे ढंग के कपड़े पहनो,ज़्यादा फैशन मत करो,घर के सारे काम सीखो,बड़ों से बहस मत करो,अधिक सवाल मत पूछो,लड़कों से ज़्यादा बात मत करो आदि ।

कुछ फ़ाइल मैनेजर तो इससे भी ज़्यादा खतरनाक होते हैं वे बच्चों के अवचेतन में बचपन से ही ऐसी फ़ाइल डालना शुरू करते हैं जो बड़े होने के बाद उन्हें कट्टर, क्रूर,असंवेदनशील और नफ़रत करने वाला इंसान बनाते हैं। इन फाइलों की हेडिंग होती है , वो हमारे धर्म का नहीं है , उसके बच्चों के साथ मत खेलो, वो गंदा है, मांस खाता है , वो हमारे भगवान को नहीं मानता , वो पूजा करता है आदि आदि ।

फाइल मैनेजर की इस भूमिका का निर्वाह केवल माता-पिता ही नहीं करते बल्कि ,काका, मामा, अंकल जैसे पड़ोसी,करीबी रिश्तेदार,स्कूल के शिक्षक,घर आने वाले पंडित जी, मौलवी जी, और उम्र से बड़े या हम उम्र बच्चे भी करते हैं । जैसे जैसे बच्चे बड़े होते हैं यह सब लोग अपने अपने दिमाग़ की पुरानी धुरानी रूढ़ीवादी फाइलें उन बच्चों के दिमाग़ में ट्रांसफर करने में लग जाते हैं । वैसे तो संस्कार देने के नाम पर वे अच्छी फाईलें भी ट्रांसफर करते हैं लेकिन उन्हें बिलकुल नहीं पता चलता कि कौनसी फाइल सही सही ट्रांसफर हो गई है और कौनसी फाइल करप्ट हो गई है ।

जैसे सारे बड़े एक जैसे नहीं होते वैसे ही सभी बच्चे भी कहाँ एक जैसे होते हैं ? हमें समाज में सामान्यत: दो तरह के बच्चे दिखाई देते हैं एक वे जो बहुत हँसमुख, हमेशा खिलखिलाने वाले, शरारती, बहिर्मुखी, अपनी ज़िद पूरी करवाने वाले बच्चे होते हैं और दूसरे कुछ दब्बू किस्म के,हमेशा गुमसुम रहने वाले या रोते रहने वाले, अकेले अकेले खेलने वाले, जो मिले वह खा लेने वाले बच्चे होते हैं । कुछ बच्चे पढ़ाकू भी होते हैं और क़िताबों में सर घुसाए रहते हैं । कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जिनमे इन दोनों वर्गों के बच्चों के लक्षण कम अधिक मात्रा में होते हैं । कुछ बच्चे शांत, शर्मीले, स्थिर मनोवृति के होते हैं ।

दरअसल बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण उनके जन्म लेने के तुरंत बाद प्रारंभ हो जाता है और इसके निर्माता बड़े लोग ही होते हैं । कोई व्यक्ति कैसा है इसके लिए उसकी युवावस्था नहीं बल्कि उसका बचपन ज़िम्मेदार होता है । सामान्य लोग भले न जान सकें लेकिन मनुष्य के मन को जानने वाले मनोविज्ञानी यह बात अच्छी तरह जान जाते हैं कि इस इंसान के बचपन में इसके दिमाग़ में कौन कौन सी फाइलें ट्रांसफर की गई हैं अथवा इसके माता पिता ने या समाज ने इसके साथ कैसा सलूक किया है ।

इसी आधार पर मनोवैज्ञानिक एच जे आइसेंक ने मनुष्य के व्यक्तित्व को निराशावादी यानी मेलोंकोलिक, आशावादी यानी सैन्यूइन, भावनाप्रधान यानी कोलेरिक तथा फ्लेग्मेटिक यानी शांत व संतुलित जैसे वर्गों में बाँटा है । यद्यपि अधिकांश लोग किसी एक वर्ग के न होकर मिले जुले वर्ग के होते हैं ।

इसलिए बच्चों के अवचेतन में कुछ भी डालने से पहले सोचिए क्योंकि बच्चे तर्क नहीं करते हैं। उनकी तर्क की

शेष पृष्ठ 45 पर

खोज खबर

फल सब्जियां खाने से कोरोना का गंभीर संक्रमण 41 प्रतिशत तक कम : हार्वर्ड

हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के अनुसार हाल ही में जर्नल 'गट' में प्रकाशित शोध में पाया गया कि जो लोग फल, सब्जियां और दालों का सेवन करते हैं उनमें कोरोना के गंभीर संक्रमण का खतरा 41 प्रतिशत तक कम होता है। शोधकर्ताओं ने इसके लिए 5.93 लाख लोगों के खानपान और उनके स्वास्थ्य का परीक्षण 6 माह तक किया।

सिर्फ एक दिन की अधूरी नींद आपके काम को 7 दिन तक प्रभावित कर सकती है

एक दिन की अधूरी नींद मस्तिष्क की कार्य क्षमता को 7 दिन बाद भी प्रभावित कर सकती है। जर्नल च्सवे व्दम में प्रकाशित एक शोध में यह बात सामने आई हैं मुख्य शोध कर्ता डॉ. जेरेमी ओकाब के अनुसार नींद की कमी से कार्य क्षमता घटती है साथ ही व्यवहार भी प्रीावित होता है। अपने शोध में उन्होंने पाया कि अधूरी नींद के 7 दिन बाद भी व्यक्ति की एक्यूरेसी 100 प्रतिशत नहीं हो पाती। इसमे 1.5 प्रतिशत तक की कमी रह जाती है।

व्यायाम करेंगे तो हाई कैलोरी फूड खाने की इच्छा घटेगी : द न्यूयार्क टाइमज

एक्सरसाइज आपको शारीरिक रूप से फिट बनाता है। क्योंकि कैलोरी बर्न करने के साथ ही यह भूख को भी नियंत्रित करती है। ऐसा भूख को नियंत्रित करने वाले हार्मोन में बदलाव के कारण होता है। न्यूयॉर्क ींसित अल्बर्ट आइंस्टीन कॉलेज ऑफ मेडिसिन के न्यूरोसाइंटिस्ट यंगह्वान जो के अनुसार एक्सरसाइज के दौरान शरीर की गर्मी हमारे मस्तिष्क को भूख को कम करने का संदेश भेजती है। यह भूख बढ़ाने वाले हार्मोन घ्रेलिन को कम कर देता है। यह बिल्कुल वैसा ही है जैसे बहुत तीखा खाते समय शरीर पसीना-पसीना हो जाता है और हम तीखी चीज काफी कम खा पाते हें।

जो और उनकी टीम के द्वारा किये गये शोध में पाया गया कि 'प्रॉपियोमेलानोकोर्टिन' नाम का न्यूरॉन समूह मस्तिष्क के हिस्से हाइपोथेलेमस में पाया जाता हैं एक्सरसाइज के दौरान जब शरीर गर्म होता है तो ये न्यूरॉन शरीर में भूख कम करने का संदेश भेजते हैं। इन संदेशों से भूख बढ़ाने वाले हार्मोन घटते हैं। हालांकि इस गर्मी के कम होते ही व्यक्ति की भूख सामान्य हो जाती है।

मेडिसिन एंड साइंस इन स्पोर्ट्स एंडएक्सरसाईज में प्रकाशित शोध बताता है कि सप्ताह में पांच दिन लगभग 500 कैलोरी प्रति सेशन एक्सरसाइज से बर्न करने वाले लोगों में हाई कैलोरी और फैटी फूड खाने की इच्छा कम होने लगती है। ऐसे लोग ऊर्जा एवं ताकत बढ़ाने वाले प्रोटीन फूड की ओर आकर्षित होने लगते हैं। शोधकर्ताओं ने इसके लिए लगभग 6 हजार लोगों पर शोध किया है।

साभार: दैनिक भास्कर

पृष्ठ 44 का शेष

छन्नी काम नहीं करती है इसलिए जो कुछ भी कचरा आप उनके दिमाग में डालेंगे तो वैसा का वैसा ही भीतर चला जाएगा और जीवन भर रहेगा ।

और अंत मे कविता

बच्चों के सपनों से डर

बच्चों में देखते हैं हम खुद को बड़े होते हुए
कोशिश करते हैं
अपना बचपन दोबारा जीने की
बच्चों को बचाना चाहते हैं हम
उन क्रूर सम्भावनाओं से
जिनसे नहीं बचा पाये थे हमें
हमारे पिता

जिन रास्तों पर ठोकरें मिली थी हमें
उन रास्तों को ठीक ठीक पहचान सकते हैं हम
अपने बच्चों के बचपन में
अपने बचपन के खाते में दर्ज दुखों को
भुनाने की कोशिश करते हैं
बच्चों के सपने पूरे करते हुए
साथ ही छीन लेना चाहते हैं हम
उनसे मनचाहा स्वप्न देखने की स्वतंत्रता
वस्तुतः हमें उनके सपनों से डर लगता है ।

'अन्धविश्वास और शहीद भगत सिंह की वैज्ञानिक विचारधारा' विषय पर एक वर्कशॉप का आयोजन

दिनांक 30-11-2021 को कुरुक्षेत्र में शहीद भगत सिंह दिशा संस्थान में 'निर्माण कार्य मजदूर मिस्त्री यूनियन' द्वारा 'अन्धविश्वास और शहीद भगत सिंह की वैज्ञानिक विचारधारा' विषय पर एक वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप की अध्यक्षता प्रांतीय प्रधान कामरेड करनैल सिंह जी ने की और वर्कशॉप में मुख्य अतिथि के रुप में 'तर्कशील पथ' के संपादक लेक्चरर बलवंत सिंह जी ने शिरकत की। वर्कशॉप का मंच संचालन प्रांतीय महासचिव सुरेश कुमार ने किया। लेक्चरार बलवंत सिंह जी ने जादू की ट्रिक्स दिखाकर उनका वैज्ञानिक विश्लेषण किया और यह बताया कि समाज में फैले अंधविश्वासों का अनुचित लाभ उठाकर किस प्रकार से धूर्त लोग लोगों को मूर्ख बनाते हैं और उनकी पसीने की गाढ़ी कमाई हड़प जाते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इसके लिए समाज में फैले अंधविश्वास और मनोरोग ही उन पाखंडी लोगों की शक्ति का काम करते हैं। चमत्कारों का पर्दाफाश करते हुए बलवंत सिंह जी ने बताया कि तर्कशील सोसायटी ने सभी प्रखंडियों को 23 शर्तों की चुनौती दी हुई है और जिसके लिए तर्कशील सोसायटी ने ईनाम की घोषणा की हुई है कि जो भी पाखंडी उन शर्तों में से किसी एक को पूरी कर देगा, उसको ईनाम दिया जाएगा। परंतु यह चुनौती 1963 से आज तक किसी ने भी पूरी नहीं की है। कामरेड करनैल सिंह जी ने शहीद ए आजम भगत सिंह के लेख 'मैं नास्तिक क्यों हूँ' की चर्चा करते कहा कि भगत सिंह ने सर्वशक्तिमान ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हुए इस की भौतिकवादी व्याख्या की है। शहीदे आजम भगत सिंह ने हमें बताया कि एक तरफ तो पूंजीपति वर्ग के पास धन के अंबार लगे पड़े हैं और दूसरी तरफ करोड़ों करोड़ जनता भूखमरी की कगार पर खड़ी है। यह अन्याय और असमानता कभी भी तथाकथित सर्वशक्तिमान ईश्वर की मर्जी से नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि समाज में फैली इस असमानता की जिम्मेवार यह पूंजीवादी व्यवस्था है। इस पूंजीवादी व्यवस्था को मिटाए बिना समाज को नई दिशा, समाजवाद की दिशा में नहीं ले जाया जा सकता। उन्होंने मजदूर वर्ग से आव्हान किया कि वे शहीदे आजम भगत सिंह के विचारों को अपनाते हुए इस समाज को इंकलाब के रास्ते समाजवाद दिशा में ले जाएं। यूनियन के महासचिव सुरेश कुमार ने कहा कि हम सभी लोग इसी पूंजीवादी व्यवस्था से आते हैं परंतु हम वैज्ञानिक विचारधारा को अपनाकर ही समाज को एक नई दिशा में ले जा सकते हैं और जुल्म, शोषण, उत्पीड़न से ही मेहनतकश वर्ग को मुक्ति संभव है। जन संघर्ष मंच हरियाणा की महासचिव का सुदेश कुमारी जी ने कहा कि जबकि संविधान में लिखा हुआ है कि वैज्ञानिक चिंतन को बढ़ावा दिया जाएगा परंतु सरकारें अंधविश्वास को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाने की कोशिश कर रही हैं। वर्तमान सरकार धर्म के नाम पर सांप्रदायिक दंगे भड़काने की कोशिश कर रही है और मेहनतकश जनता के जनवादी अधिकारों को दबाने की कोशिश करती है। वर्कशॉप में यूनियन के जिला प्रधान चांदीराम, जिला सचिव कुलदीप और कुलदीप स्योंसर ने भी अपने विचाररखे।

रिपोर्ट-कुलदीप सरसा,
जिला सचिव 9896449670

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की बैठक संपन्न

दिनांक 28 -11 -21 को तर्कशील सोसायटी हरियाणा की एक मीटिंग इंपीरियल पब्लिक स्कूल -पेगा, जिला-जींद मे आयोजित की गई। इस मीटिंग में हरियाणा प्रांत की सोसायटी की विभिन्न इकाइयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।मीटिंग की कार्रवाई का संचालन सोसायटी के महासचिव राजेश पेगा द्वारा किया गया। मीटिंग में सर्वप्रथम मा. बजिंद्र ने "योगा की वैज्ञानिक कसौटी पर परख पडताल" विषय पर अपनी बातचीत रखी।डा. दीपक पेगा ने कृषि कानूनों की वास्तविकता के बारे में बताया।सोसायटी के प्रचार सचिव सुभाष तितरम नेअपनी बातचीत में सवाल उठाया कि जिस धर्म में जाति- पाति,सती प्रथा, वर्ण व्यवस्था, ऊंच-नीच इत्यादि बीमारियां विद्यमान रहीं हों तो उनका सफाया भी उन्हीं लोगों को करना पडेगा। रामेश्वर जींद ने वर्तमान शासन व्यवस्था के चरित्र की बात करते हुए कहा कि पूंजीपतियों द्वारा कुछ वैज्ञानिक लोगों को भी खरीद लिया जाता है जोकि पूंजीवादी नीतियों के समर्थन में ब्यानबाजी करते रहते हैं। बलदेव सिंह महरोक ने अपनी आपबीती साझा करते हुए बताया कि पंजाबी की प्रसिद्ध पत्रिका "प्रीतलडी" के अध्ययन ने उनके अंदर तर्कशीलता के अंकुर बहुत समय पहले ही बो दिए थे,अत: तर्कशील लोगों को हर हालत में

शेष पृष्ठ 47 पर

तंत्र-मंत्र में मारे जा रहे 16 प्रजातियों के उल्लू

नई दिल्ली। विश्व में उल्लू पक्षी की करीब 250 प्रजातियां हैं, इनमें 36 भारत में पाई जाती हैं। लेकिन तंत्रमंत्र और इसी प्रकार के दूसरे अंधविश्वास भरे कामों में करीब 16 प्रजातियों के उल्लू सबसे ज्यादा मारे जा रहे हैं। इस बारे में विश्व वर्ल्ड वाईल्डलाइफ फंड ;डब्ल्यू डब्ल्युएफद्ध और ट्रैफिक संस्था द्वारा विगत 4 अगस्त को अंतर्राष्ट्रीय उल्लू जागरुकता दिवस पर जानकारी दी गई। इस संस्था के अनुसार भारत में उल्लू अंधविश्वास का शिकार बन खत्म हो रहे हैं। कई क्षेत्रों में तंत्रमंत्र करने वाले और अन्य अंधविश्वास फैलाने वाले कुछ लोग इनके विभिन्न अंगों का इस्मोल करने के लिए उल्लूओं को पकड़कर मार रहे हैं। विभिन्न हिस्सों में कई प्रजातियों के उल्लू जो सामान्य तौर पर पाए जाते थे, अब उनकी संख्या तेजी से घट रही है। ट्रैफिक के भारत प्रमुख डा. साकेत बडोला के अनुसार शिकार और तस्करी इसकी सबसे बड़ी वजह से ही हो रही है। लोग इन पक्षियों को पर्यावरण में महत्व को न समझकर और तंत्रमंत्र करने वालों की बातों में आ नुकसान पहुंचा रहे हैं। इसी वजह से ज्यादा शिकार हो रहे 16 प्रजातियों के उल्लुओं की पहचान की गई ताकि आम नागरिक भी जागरुक हों और इनकी पहचान कर, यह सब रोकने में मददगार बनें।

अमर उजाला : 5-8-2021

नाबालिग से दुष्कर्म के आरोप में तीन इमाम सहित चार पर केस

तावडू। उपमंडल के एक गांव में मस्जिद के एक इमाम पर किशोरी के साथ दुष्कर्म करने का आरोप लगा है। पीड़िता के पिता की शिकायत पर पुलिस ने तीन अलग-मस्जिदों के नामजद इमामों सहित चार के खिलाफ विभिन्न धाराओं में केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। सभी आरोपी पुलिस की गिरफ्त में से बाहर हैं। पीड़िता के पिता ने बताया कि वह गुरुग्राम में नौकरी करता है। उसकी बेटी गांव की मस्जिद में अरबी की पढ़ाई करती है। मस्जिद का इमाम दिहाना निवासी मंजूर था, जिसे ग्रामीणों ने उसके गलत कार्यों के कारण मस्जिद से हटा दिया था। आरोप है कि इमाम मंजूर ने उनकी बेटी को वश में कर मस्जिद में उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए। इस कृत्य का वीडियो भी बना लिया। पीड़िता को धमकी दी कि यदि इस बारे किसी को कुछ बताया तो वह वीडियो वायरल कर देगा और उनके परिवार को जान से मार देगा। 13 अगस्त की रात जब वह उठा तो बेटी घर से गायब थी। आस पड़ोस में काफी छानबीन के बाद भी किशोरी का सुराग नहीं लगा। इसकी शिकायत थाने में की। इसके बाद पुलिस ने किशोरी को गांव गोगजाका से बरामद किया। पूछा करने पर किशोरी ने बताया कि मंजूर व एक अन्य अज्ञात व्यक्ति उन्हें बाइक पर घर से गांव गोगजाका के आसपास खोतों में ले गए, जहां पर इमाम मंजूर ने उसके साथ दुष्कर्म किया। मंजूर के साथ अन्य अज्ञात व्यक्ति रखवाली के लिए खड़ा था। इसके बाद आरोपियों ने उसे सड़क पर छोड़कर धमकी दी कि किसी को कुछ बताया तो जान से मार देंगे। पीड़िता ने बताया कि इमाम ने उसके साथ कई बार दुष्कर्म किया। मस्जिद में इमाम जाहीद और इमाम नायब भी आते थे जिन्हें इस घटना के बारे में जानकारी थी। संवाद।

अमर उजाला: 30-8-2021

असम में मानव बलि मामले में बच्ची की मौत, तांत्रिक गिरफ्तार

चराइदेव- असम में मानव बलि मामले में पांच साल की बच्ची की हत्या कर दी गई। तांत्रिक को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस ने बताया कि बच्ची का घर से अपहरण हुआ था। शव सिंगलू नदी से बरामद किया गया। राख के साथ लाल कपड़ा व तांत्रिक अनुष्ठान की सामग्री नदी के तट पर मिली। एजेंसी। **अमर उजाला 12-8-2021**

पृष्ठ 46 का शेष

अध्ययनशील रहना चाहिए। सोसायटी के पूर्व महासचिव ने आज के दौर था विश्लेषण करते हुए कहा कि वर्तमान समय में तर्कशीलता की पहले से भी ज्यादा जरूरत है।पत्रिका के संपादक बलवंत सिंह ने अपनी बात रखते हुए वैज्ञानिक चिंतन का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार पर बल दिया।उन्होंने आह्वान किया कि तर्कशील पथ पत्रिका का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए। कार्यक्रम में रवि कुमार पानीपत, परविंद्र सिंह सफीदों, ईश्वर सिंह सफीदों ने भी अपने अपने विचार रखे। सुभाष तितरम द्वारा तर्कशील साहित्य का स्टाल भी लगाया गया। पेगा इकाई के सभी साथियों द्वारा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए विशेष सहयोग दिया गया।

भाजपा का सावरकर प्रेम

जसवंत मोहाली

साधारण ज्ञान की बातें आम लोगों को समझ आएं यह एक महत्त्वपूर्ण कार्य है और इसको जागरूकता कहते हैं। बात तो यह भी साधारण सी है कि सरकार चुनी तो लोगों द्वारा जाती है परन्तु वह लोगों के विरोध में खरबपतियों का पक्ष लेती है। और यह भी कि मंहगाई, बेरोज़गारी, खस्ताहाल शिक्षा और स्वास्थ्य यानी लोगों की कुल दुर्दशा का कारण कॉरपोरेटों का टोला है। और यह दुर्दशा धर्म नहीं देखती और यह सभी धर्मों में व्याप्त है। और अगर यह बात समझ आ जाए तो लोग धर्मों से ऊपर उठ जाते हैं। लोक एकता विशाल होती है। लोक संघर्ष मजबूत होता है और हालात कॉरपोरेटों के लिए खतरे की ओर बढ़ते चले जाते हैं। पर बात इतनी साधारण होती तो संत राम उदासी की कविता ही काफी थी और अब तक कमेरों के आँगन में सूर्य उदय हो चुका होना था।

कॉरपोरेटों को बचाने के लिए लोगों की एकता को तोड़ना कितना मुश्किल है। भला बस देश के मुखिया ने ब्यान ही देना है। अगर गांव में कब्रिस्तान बनता है तो श्मशान भी बनना चाहिए। अगर रमजान पे बिजली मिलती है तो दिवाली पर भी मिलनी चाहिए। बाकी का काम स्टूडियो तक सीमित खबरों वाले और आई टी सैल वाले संभाल लेते हैं। इस के बिना इतिहास की गलत पेशकारी करना और फिर मीड़िया द्वारा उसका बार.बार प्रचार करके झूठ को सच बनाना मोदी सरकार का लक्षण है।

इस बार इन्होंने अपने ऐतिहासिक कलंक को धोने के लिए गांधी का इस्तेमाल किया है। इस की ताज़ा मिसाल राजनाथ सिंह का भाषण है जो उसने सावरकर बारे पुस्तक विमोचन समारोह में दिया है। उसने कहा कि हिंदु महासभा के नेता विनायक दामोदर सावरकर ने महात्मा गांधी की सलाह पर अंग्रेज़ सरकार को माफी की अर्जी दी थी। अनिल जैन ने अपने क़ॉलम बीच बहस में लिखा है जब सावरकर को जेल भेजा गया। उस समय गांधी दक्षिण अफ्रीका में थे। सन 1915 में वे भारत लौटें। उस समय तक सावरकर तीन बार दया याचना माफी के लिए अपील कर चुका था। सवाल उठता है कि गांधी ने सावरकर को माफी मांगने के लिए कब और कैसे कहा। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि सावरकर ने माफी मांगी, जेल से रिहा हुआ और मासिक पेंशन पाई। अपने माफीनामे में सावरकर ने अंग्रेज सरकार के प्रति वफादार रहने का वादा भी किया। रिहा होने के बाद उसने भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध भी किया और हिंदुओं को सेना बनाकर अंग्रेजों का साथ देने की सलाह भी दी। दिलचस्प तथ्य यह है कि सावरकर तो स्वयं महात्मा गांधी की हत्या का आरोपी था पर सबूतों के न मिलने पर रिहा हो गया। आजादी के बाद राष्टीय स्वयंसेवक संघ ने उससे दूरी बनाकर रखी। अब तक वे इंकार करते रहे हैं कि सावरकर ने अंग्रेज़ सरकार से माफी मांगी थी। अब कम से कम भाजपा तो भविष्य में इस बात से इंकार नहीं कर सकती कि सावरकर ने जेल से रिहा होने के लिए माफी नहीं मांगी थी। भाजपा को यह लगता है कि इस सोचे.समझे ब्यान से सावरकर थोड़ा क्लीन हो जाएगा और गांधी थोड़ा मलीन हो जाएगा। उसे दोनों तरफ फायदा लगता है। भाजपा का पिछली सरकारों से स्पष्ट अंतर यह है कि यह अपने आपको हिंदु गौरव की रक्षा का ठेकेदार समझती है। समाजवाद, धर्म निरपेक्षता इतिहास, मिथिहास और विज्ञान बारे इसकी प्रचारक मशीनरी के फैलाए शानदार झूठ ने विचारधारक लड़ाई का मैदान भी खोल दिया है। सड़कों पर संघर्ष के साथ.साथ अब अध्ययन करने वाले सिरों की भी बहुत जरूरत है।

पते की बात: देश की बरबादी का हर वह शख्स जिम्मेदार है जो समझता है कि जनता की शिक्षा, स्वास्थ्य और रोज़गार से उसका धर्म अधिक महत्वपूर्ण है।

अनुवाद : मुलख पिपली

हम ठान चुके है अब जी में
हर जालिम से टकरायेंगे
तुम समझौते की आस रखो
हम आगे बढ़ते जायेंगे
हमें मंजिलें आजादी की कसम
हर मंजिल पे दोहरायेंगे
ये किसका लहू है कौन मरा।

साहिर लुधियानवी

हरियाणवी रागिणी

बौले - पागल स्याणे हो गे

अंधविश्वास नै मार दिए, हम पढ़े लिखे निमाणे हो गे
अक्लमंद तै बे अक्ले हम, बौले -पागल स्याणे हो गे।।

कदे भूत नै घेर लिया मैं, कदे जिनां गेल्यां जंग होग्या,
किस-किस का जिक्र करूं मैं, आज देख कै दंग होग्या
लम्बी लम्बी गप्प छोड़ र्या, मालिक मेरा मलंग होग्या,
ऊतां के हाथ्यां चढ़ग्या, मेरे चेहरे का चिट्टा रंग होग्या,
मांग-मांग कै खाया करते, उस कुल्हड़ी म्हं दाणे हो गे,

सदा पढ़ाया ग्रहण चांद का, कैसे लगता मेरे भाई रै,
खुद मैं अंधविश्वासी सूं, मन्नै साईस की करी पढ़ाई रै,
मैं कौन्या चाल्या उस बात पै, जो मन्नै बात बताई रै,
ग्रहण लग्या तै सरोवर के म्हं, जा कै डुबकी लगाई रै,
साईस के असूल आज यें, सारे अदल-पिछाणे हो गे।

माया का मोह छोड़ द्यो, मुक्ति की राह दिखावैं,
लालच नाश की राही सै, या जनता नै समझावैं,
हमनै त्याग सिखाणे आले, दिन रातां नोट कमावैं,
खुद दोनूं हाथों लूट रहे, डेरे के म्हं ऐश उड़ावै,
चिमटे मारैं गात दाग दें, मंदिर-मस्जिद ठाणे हो गे।

तर्क सीख ल्यो फैदा होगा, इसी सीख कई बार दई,
मन्नै कह दी, तन्नै सुण ली, कांनो पै को तार दई,
अंधविश्वासों की तन्नै भाई, चौगिर्दे को लार दई,
रामेश्वर की सीख ईब ठा, धरती के म्हं मार दई,
नए कपड़े पहनों साथी, ये कपड़े फटे-पुराणे हो गे

रेमेश्वर दास गुप्त

https://www.youtube.com/channel/UCqYAGMmTHN4YnfiV6BUgZjg

महान खोजकर्ता : गैलीलियो

15 फरवरी, 1564 को पीसा (इटली) में जन्मे गैलीलियो बचपन से ही तेज बुद्धि के थे। घर में गरीबी के कारण वह अपनी पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाए थे ।उन्हें गणित में बहुत रुचि थी। अपनी मेहनत और लगन से वे गणितज्ञ बने। उन्होंने गणित के कई पुरातन सिद्धांतों को गलत साबित किया। उन्होंने एक दूरबीन का निर्माण किया और गणितीय सिद्धांतों की सहायता से ग्रहों की स्थिति का अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि चांद के तल पर कई पहाड़ और घाटियां हैं। बृहस्पति अकेला ग्रह नहीं है बल्कि इसके साथ अन्य ग्रह भी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी आकाशगंगा हजारों तारों का समूह है।उन्होंने प्रचलित धारणा के विपरीत वैज्ञानिक ढंग से सिद्ध किया कि सूर्य ब्रह्मांड का केंद्र है, पृथ्वी नहीं। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। चूंकि इन खोजों ने धार्मिक ग्रंथों का खंडन होता था, इसलिए गैलीलियो के शब्द धार्मिक कट्टरपंथियों को पसंद नहीं आए। उन्हें चेतावनी दी गई और चुप करा दिया गया। हालाँकि, सत्य की एक पुस्तक प्रकाशित होने के बाद उनके खिलाफ मुकदमा दायर किया गया था। गैलीलियो से कहा गया था कि अगर वह मानते हैं कि किताब में जो लिखा गया है वह झूठ है, तो उन्हें माफ कर दिया जाएगा, लेकिन उन्होंने कोर्ट में भी कहा कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। सच ये ही है।जिसे बोलने के लिए उन्हें जेल में डाल दिया गया गया। 1637 ई. में जब वह जेल से बाहर आए तो उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया। 8 जनवरी 1642 को उनकी मृत्यु हो गई। गैलीलियो ने अपना पूरा जीवन सत्य की खोज में लगा दिया। बदले में उन्हें अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। उनकी खोज पूरी दुनिया में सच साबित हुई।जिस चर्च ने उन्हें सजा दी थी 300 साल बाद इस बात के लिए माफी मांगी।उन्होंने माना कि गैलीलियो सही थे।उनके विज्ञान के लिए समर्पित जीवन को सलाम।
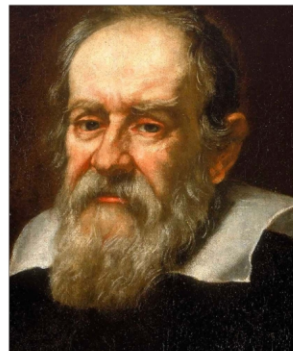
सदा स्मृति में जीवित कृष्ण बरगाड़ी

कृष्ण बरगाड़ी तर्कशील आंदोलन के स्मृति शेष नायक हैं, जिनका जीवन और कार्य समाज में विज्ञान का ज्ञानवर्धन करने की कोशिश करने वाले कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। जब तक वे आंदोलन का हिस्सा बने रहे, तब तक वे लगातार चलते रहे। नए तरीके खोजे। उन्होंने अपने व्यक्तिगत कामो की बजाए तर्कशील आंदोलन को सदा प्राथमिकता दी। अंधविश्वास और अज्ञानता के अंधकार से समाज को निकालने के लिए तर्क व विज्ञान की मशाल को जलाया । वे वैज्ञानिक सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए एक तर्कशील कारवां के नेता बने। उन्होंने रास्ते में पड़ने वाली मुश्किलों के आगे सिर नही झुकाया। उनके कार्यों से प्रदर्शित होता है कि समूह के हित अधिक महत्वपूर्ण होते हैं जब वह मिशन और संगठन के लिए अच्छे विश्वास के साथ काम करता है।

उन्होंने कैंसर जैसी बीमारी से बहादुरी से लड़ाई लड़ी और इस जहां से अलविदा हो जाने के बाद भी लोगों को मृतक शरीर मैडीकल कालेज को सौंपने की परंपरा का आगाज़ कराया । जीवन की यात्रा पूरी करने के बाद भी वह मानवता के प्रति वफादार रहे। परिवार ने चिकित्सा अनुसंधान के लिए उनके शरीर को प्रदान करने के उनके निर्णय को पूरा किया। कृष्णा बरगाड़ी पंजाब के पहले बॉडी डोनर बने। उनकी याद हमारे जेहन में छिपी है। विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की उनकी ताकत आज भी हमारी प्रेरणा है। आंदोलन के लिए कार्यकर्ताओं के कदम अँधेरे को हराने को हमेशा तत्पर हैं।

हम अपने नायक के जीवन को सलाम करते हैं, और उनकी 20वीं जयंती पर ईमानदारी के साथ उनके मार्ग पर चलने का संकल्प लेते हैं।

वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के लिए 2 लाख रुपये की सहायता

सोहन सिंह थिंड जी अमन नगर शाहकोट, ने तर्कशील सोसाइटी पंजाब की इकाई शाहकोट के छात्र चेतना परीक्षा के लिए समर्पण की भावना से किए जा रहे कार्यों से प्रभावित हो कर आर्थिक योगदान करते हुए, उन्होंने राज्य प्रभारी राजिंदर भदौड की उपस्थिति में 2 लाख रुपये की एकमुश्त सहायता प्रदान की गई है। उनकी इच्छा है कि इस अनुदान का उपयोग तर्कशील सोसाइटी की गतिविधियों को बढ़ावा देने और तर्कशील पत्रिका के प्रसार के साधन बढ़ाने के लिए किया जाए । इसके लिए पंजाब स्वास्थ्य संस्थानों और अन्य सार्वजनिक संस्थानों के वेटिंग हाउसों की पहचान कर तर्कशील पत्रिका हर जगह मुफ्त उपलब्ध कराई जाए। इस राशि के लिए सोहन सिंह थिंड को बहुत-बहुत धन्यवाद, और हम उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

If undelivered please return to :

Tarksheel

Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera ByPass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....